www.indiatodayhindi.in

खतरे में बिहार की सांस्कृतिक धरोहर

पंजाबः चार सरदारों के बीच जोरदार मुकाबला

यूपीः यादव बेल्ट पर कौन करेगा राज?

23 फरवरी, 2022 50 रुपए

इंडिया टुडे

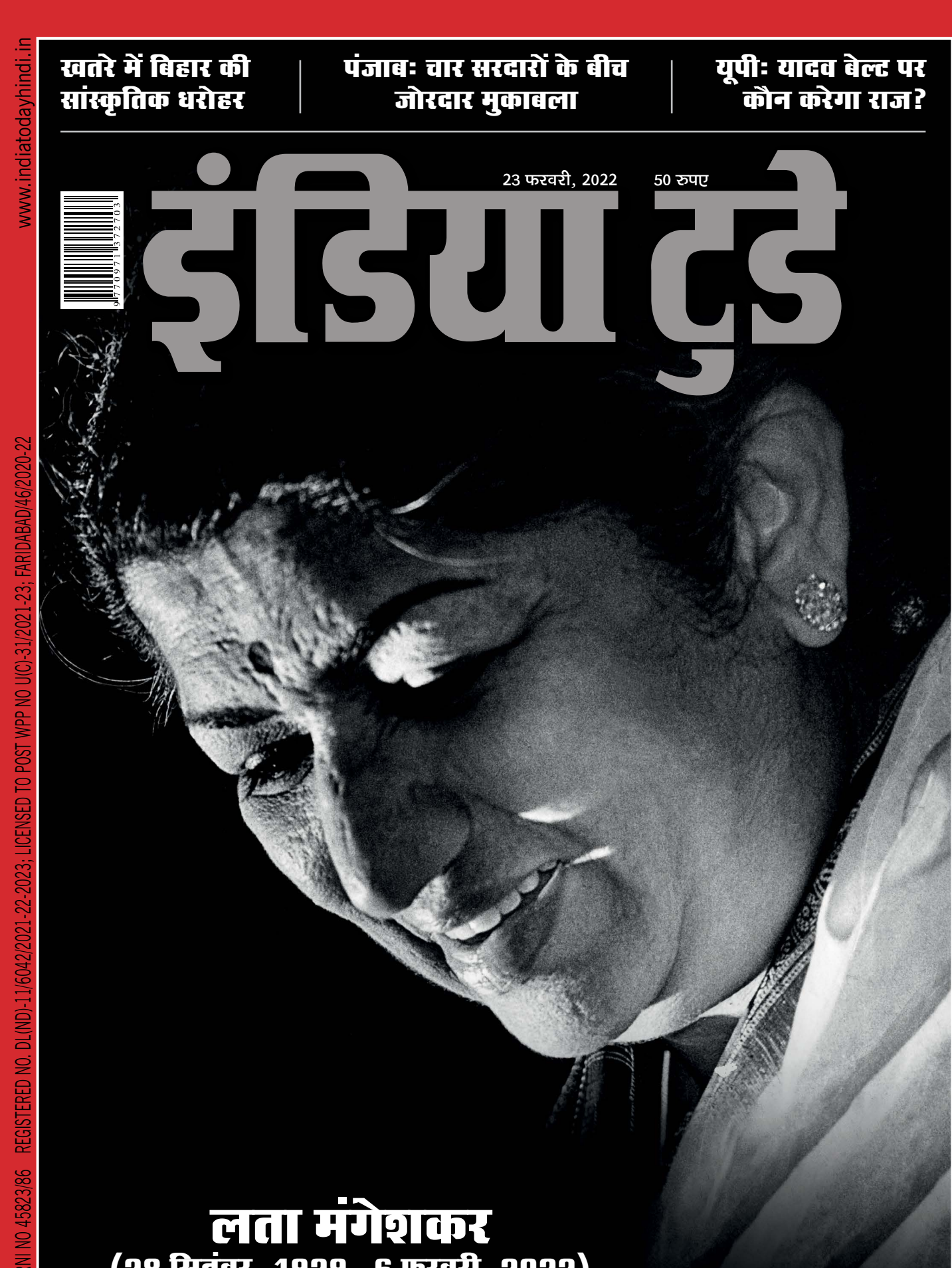

लता मंगेशकर
(28 सितंबर, 1929—6 फरवरी, 2022)

RNI NO 45823/86 REGISTERED NO. DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2020-22

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 58 (आवरण सहित)

VISIT…

INDIA TODAY

BREAKING NEWS

JUST A TAP AWAY

DOWNLOAD THE APP NOW

AVAILABLE ON

प्रधान संपादक की कलम से

यही कोई 92 साल की भरी-पूरी उम्र जीने के बाद सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर ने इसी छह फरवरी की सुबह देह त्याग दी. बहुधा सफेद साड़ी पहने हुए, करीने से संवरे हुए बाल, माथे पर औसत आकार की लाल बिंदी और चेहरे पर अक्सर तैरती सौम्य मुस्कान, और बच्चे-बूढ़े सबके बीच ''लता दीदी'' के रूप में स्थापित एक अनौपचारिक-आत्मीय परिचय. यह उनकी उस मिथकीय शख्सियत का ही जादू था कि समाज के हर क्षेत्र का आदमी उनके निधन पर राय देने को आतुर था: राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर सोसाइटी में कड़कती ठंड में तड़के पहुंचने वाले सफाईकर्मियों तक, विद्वानों-चिंतकों से लेकर गांवों के किसानों तक, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के पायलटों से लेकर टेंपो चालकों तक, पंडित, मौलाना और पादरी से लेकर डांस बारों और पबों तक. सात दशक तक पार्श्वगायन के दौरान विभिन्न भाषाओं में 30,000 से ज्यादा गीत गाकर वे किंवदंती बन गईं. फिल्मकार-गीतकार गुलजार ने ठीक ही कहा कि कोई भी विशेषण बाकी नहीं बचा था जिससे उन्हें अब नवाजा जा सके इसलिए वे इतना ही कहते थे कि ''लता जी बहुत अच्छा गाती हैं.''

उनके बारे में यह कहना उचित होगा कि वे पिछले 75 वर्षों में भारत की सामूहिक चेतना का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी थीं. फरवरी 1981 में *इंडिया टुडे* में उन पर छपी एक शोधपरक आवरण कथा के लेखक सुमित मित्रा ने तब इसी पहलू को रेखांकित किया था कि वे ''गांधी के लंगोट और टैगोर की दाढ़ी की तरह राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा हो गई हैं.'' इससे काफी पहले अंतरराष्ट्रीय समाचार पत्रिका *टाइम* ने 1959 में भारत में पार्श्वगायन के क्षेत्र में उन्हें निर्विवाद चैंपियन घोषित किया था. दिलचस्प तथ्य है कि भोजपुरी सिनेमा का सबसे चर्चित गीत *हे गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो...* भी उन्होंने ही गाया था. इसके अलावा मैथिली में उन्होंने विद्यापति के गीत भी गाए. यहां तक कि आध्यात्मिक क्षेत्र के रामकथा वाचक मोरारी बापू ने भी उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि ''स्वर उनके कंठ में वैकुंठ की याद दिलाता था. उनकी संगीत साधना में गजब की सत्वप्रधानता थी.''

भारतीय संगीत, सिनेमा और उससे भी आगे बढ़कर वृहत्तर सामाजिक जीवन में लता मंगेशकर की उपस्थिति, उनके कद और उनकी व्याप्ति को बताने के लिए ही हम 1981 की उस आवरण कथा को थोड़ी-सी काटछांट के साथ फिर से यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. 40 साल बाद भी इसे पढ़कर अंदाजा लगता है कि उनके बारे में कुछ भी नहीं बदला. बल्कि उस अंक में उनके इंटरव्यू से यह जानकर हैरत होती है कि फिल्म संगीत की गुणवत्ता गिरने के बारे में तभी उनकी राय बन गई थी.

अब 80 के आसपास की वय के पाकिस्तान के शास्त्रीय गायक हुसैन बख्श ने इस अंक में छपी अपनी टिप्पणी में बंबई आवाजाही के उन दिनों को याद किया है जब लता जी उन्हें बुलाकर महफिल में उनकी बंदिशें सुना करती थीं. पाकिस्तान के ही शामचौरासी घराने के शफकत अली ने अपने चाचा और वालिद सलामत-अमानत अली खां से लता जी के संबंधों और उनसे जुड़े किस्सों को याद किया है.

लेकिन यहां तक पहुंचने का उनका सफर इतना कठिन था, जिसके बारे में बताते हुए वे कहने लगी थीं कि अगले जन्म में वे फिर से लता मंगेशकर नहीं बनना चाहेंगी. बचपन में स्कूली शिक्षा के पहले ही दिन साथ में दस महीने की बहन आशा (भोंसले) को गोद में लेकर पहुंच जाने पर उन्हें वहां से निकाल दिया गया तो दोबारा वे स्कूल नहीं गईं.

उन पर पुस्तक लिखने वाले यतींद्र मिश्र ने यहां अपने संस्मरण में बताया है कि लता जी के क्रिकेट प्रेम की वजह से कई बार उनकी बातचीत किस तरह अटक जाती थी: ''मेरे लिए उन्हें रिकॉर्ड करने के वे दिन सबसे कठिन होते थे जब भारत क्रिकेट का कोई मैच खेलता था. 'यतींद्र जी, अभी दो दिन रहने दीजिए, मैं मैच देखूंगी. चार दिन बाद बात करते हैं.' चार दिन बाद दिक्कत तब और बढ़ जाती थी जब भारत दुर्भाग्य से कोई मैच हार जाता था.''

निर्विवाद रूप से लता मंगेशकर मनुष्य जगत के लिए प्रकृति से मिली एक सांगीतिक नियामत की तरह थीं. हमारे समय में साक्षात सरस्वती की उपाधि पाने वाली लता जी मां शारदा, किशोरी अमोणकर और अन्नपूर्णा देवी की त्रयी की सर्वाधिक सामाजिक विस्तार वाली कड़ी थीं.

हमारी दूसरी बड़ी स्टोरी पंजाब के विधानसभा चुनावों पर है, जो इस बार चौतरफा मुकाबले की वजह से खासे दिलचस्प हो गए हैं. इसमें 79 वर्षीय एक महाराजा, एक पूर्व स्टैंडअप कॉमेडियन, एक 94 वर्षीय पूर्व मुख्यमंत्री जिन्होंने अपना पहला चुनाव 65 साल पहले जीता था, और एक छुपा रुस्तम, जिसने क्रिकेटर से टीवी-प्रस्तोता और फिर नेता बने शख्स को मुख्यमंत्री बनने से रोक दिया. राज्य में विधानसभा सीटें भले 117 यानी पूर्वी उत्तर प्रदेश की सीटों से भी कम हों लेकिन जिन पांच राज्यों में इस महीने चुनाव हो रहे हैं, उनमें यहां भी कुछ कम दांव पर नहीं है. इसकी 553 किलोमीटर की सीमा पाकिस्तान से लगती है और अस्सी से नब्बे तक के दशक तक यहां पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की स्मृतियां लोगों के दिमाग से गई नहीं हैं. हाल के दिनों में पड़ोस से फिर उस आग को हवा देने की हरकने देखने को मिली हैं. ड्रोन से हथियार और विस्फोटक भी भेजे गए. मुकाबले के चौतरफा होने के साथ-साथ एक पांचवां पहलू भी जुड़ रहा है. किसान आंदोलन का अहम केंद्र रहे इस राज्य के 22 किसान संगठनों ने चुनाव में उतरने के लिए अपनी खुद की भी एक पार्टी बना ली. बहुआयामी मुकाबलों की वजह से इस दफा यहां त्रिशंकु विधानसभा के आसार बनते दिख रहे हैं.

ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर (पब्लिशिंग) राज चेंगप्पा, ग्रुप फोटो एडिटर बंदीप सिंह और सीनियर एडिटर अनिलेश एस. महाजन ने हाल ही पंजाब की व्यापक यात्रा की. संयोग से ये तीनों पंजाब में ही जन्मे हैं. तीनों ने मैदान में संघर्षरत सभी चार प्रमुख नेताओं कांग्रेस के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, शिरोमणि अकाली दल के मुखिया सुखबीर सिंह बादल, आम आदमी पार्टी के भगवंत मान और पंजाब लोक कांग्रेस पार्टी बनाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह से बातचीत की, उनके फोटोसेशन किए. अब देखने की बात होगी कि 10 मार्च को त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति में कौन किसके साथ गठजोड़ करता है क्योंकि अभी तो सब एक दूसरे से नफरत ही करते दिख रहे हैं.

पर कहते हैं न कि भारतीय राजनीति में कुछ भी संभव है.

अरुण पुरी

(अरुण पुरी)

इंडिया टुडे

www.indiatodayhindi.in

चेयरमैन और प्रधान संपादक: अरुण पुरी
वाइस चेयरपर्सन: कली पुरी
ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: दिनेश भाटिया
ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर: राज चेंगप्पा
चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: मनोज शर्मा
एडिटर: सौरभ द्विवेदी
सीनियर डिप्टी एडिटर: दयाशंकर शुक्ल सागर
सीनियर एडिटर: मोहम्मद वक़ास
एसोसिएट एडिटर: शिवकेश मिश्र, आशीष मिश्र (लखनऊ)
असिस्टेंट एडिटर: मनीष दीक्षित, सुजीत ठाकुर
राज्य ब्यूरो: पुष्यमित्र (पटना), आनंद चौधरी (जयपुर), एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल), अमरनाथ के. मेनन (हैदराबाद)
ग्रुप क्रिएटिव एडिटर: नीलांजन दास
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर: चंद्रमोहन ज्योति
असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टर: असित रॉय
ग्रुप फोटो एडिटर: बंदीप सिंह
फोटो डिपार्टमेंट: यासिर इकबाल, राजवंत रावत, चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
चीफ फोटो रिसर्चर: प्रभाकर तिवारी
प्रिंसिपल फोटो रिसर्चर: सलोनी वैद
प्रोडक्शन चीफ: अभिनव पुगला
एसोसिएट पब्लिशर: विद्या मेनन (इंपैक्ट)
इंपैक्ट टीम
नेशनल हेड: सुपर्णा कुमार (गवर्नमेंट ऐंड पीएसयू)
सीनियर जनरल मैनेजर: जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
जनरल मैनेजर: मयूर रस्तोगी (नॉर्थ), उपेंद्र सिंह (बेंगलूरु)
डिप्टी जनरल मैनेजर: इंद्रनील चटर्जी (ईस्ट)
ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसर: विवेक मल्होत्रा
सेल्स एवं ऑपरेशन
सीनियर जनरल मैनेजर: दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
जनरल मैनेजर: विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
डिप्टी जनरल मैनेजर: राजीव गांधी (नॉर्थ)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: योगेश गोधनलाल गौतम (वेस्ट)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: एस. परमशिवम (साउथ)
सीनियर सेल्स मैनेजर: पीयूष रंजन दास (ईस्ट)

INDIA TODAY GROUP

वर्ष: 36; अंक: 12; 17-23 फरवरी, 2022; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए, फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोन: 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवा:** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301, टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल लाइनों से) फोन: दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900; शेष भारत से (0120) 2479900. (सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक), फैक्स: (0120) 4078080. ई-मेल: wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालय:** 1201, 12वां तल, टावर 2ए, वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स) एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013. फोन: 022-66063355 फैक्स: 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ए1-ए2, एनके सेंटर, विनुज्य निकुंज, उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोन: 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल, 12 रिचमंड रोड, बंगलुरु-560 025 फोन: 2212448, 226233, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. फैक्स: 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालय: एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.
- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन, दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित. संपादक: राज चेंगप्पा**

भास्कर पॉल/इंडिया टुडे

आवरण कथा

स्वर कोकिला विदा...

अनगिनत यादें छोड़ लता मंगेशकर ने दुनिया को अलविदा कह दिया. उनके पार्श्वगायिका बनने, संगीत की दुनिया पर छाने और उनकी जिंदगी की खोजपरक दास्तान

सुर्खियां
कोविड-19/ओमिक्रॉन: थकाने पर उतारू कोविड
पेज 5

भीतर

फुरसत
सवाल-जवाब/उन्नति हुड्डा: बचपन में बड़ा ड्रीम
पेज 56

पंजाब

26 सरदारों का मुकाबला

पंजाब विधानसभा के चौतरफा मुकाबले में चार दिग्गजों की भिड़ंत

उत्तर प्रदेश

40 यादव बेल्ट पर कौन करेगा राज?

अखिलेश पर 'यादव बेल्ट' में सपा का पुराना वैभव लौटाने की चुनौती

खास रपट

48 खतरे में बिहार की सांस्कृतिक धरोहर

पटना संग्रहालय में तिब्बती पांडुलिपियों की सुरक्षा खतरे में

सिनेमा

51 दक्षिण की धुन पर थिरकता उत्तर भारत

दक्षिण की भाषाओं की फिल्मों के हिंदी रीमेक बनाने के चलन ने पिछले कुछ वर्षों में पकड़ा जोर

इंडिया टुडे

इंडिया टुडे मैगजीन मिलने में दिक्कत हो रही है?
7303086006 पर नाम पता या 'हेलो' संदेश भेजें.
या मेल करें: wecare@intoday.com
हम आपसे संपर्क कर लेंगे.

आवरण: अलामी स्टॉक फोटो

पाठकों के लिए सूचना: कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आएंगे. ये विज्ञापन होंगे और इन्हें बनाने में पत्रिका के संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होते.

INDIA TODAY GROUP

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

सुर्खियां

रोज निगरानी
दिल्ली के एक कोविड अस्पताल में मरीज की पड़ताल करती एक स्वास्थ्यकर्मी

एएफआइ

कोविड-19/ओमिक्रॉन

थकाने पर उतारू कोविड

सोनाली आचार्जी

वर्ष 2022 की शुरुआत पुणे की 34 वर्षीया नताशा शर्मा के लिए इतनी मुश्किल तरीके से हुई कि वे कल्पना भी नहीं कर सकती थीं. जनवरी के पहले हफ्ते में चार बरस के जुड़वां बच्चों की मां नताशा की कोविड जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई. उन्हें ओमिक्रॉन निकला. दो दिन से उन्हें लगातार तेज बुखार और गले में तकलीफ थी. डॉक्टर की सलाह से उन्होंने पैरासीटामोल और मल्टीविटामिन लिए. तीसरे दिन बुखार चला गया और गले में भी आराम आने लगा. मगर अगले 10 दिन उन्हें कमजोरी, पैर की मांसपेशियों में दर्द और थकान महसूस होती रही. नींद नहीं आती सो अलग. डॉक्टर ने पाया कि उन्हें मायल्जिक एनसिफैलोमाइलाइटिस है. यह शरीर की बहुत-सी प्रणालियों में होने वाला जटिल विकार है, जिसे क्रॉनिक फटीग सिंड्रोम (सीएफएस) भी कहते हैं.

रोज सुबह दौड़ने और योग करने वाली नताशा याद करती हैं, ''मुझे लगता कि मानो उंगलियों में कोई ताकत ही नहीं है. कुछ दिन तो अपने को जगाना और बिस्तर से उठना भी दुश्वार होता था. कमजोरी की वजह से बच्चों, घर, यहां तक कि अपनी भी देखभाल करना मुश्किल हो गया.'' नताशा बताती हैं कि कोविड के लक्षण खत्म होने के करीब दो हफ्ते बाद वे आखिरकार हांफे बगैर सीढ़ी चढ़ने में कामयाब हो पाईं.

पस्त कर दे रहा वायरस

थकान वैसे तो महामारी की शुरुआत से ही कोविड का सामान्य लक्षण है, पर ओमिक्रॉन

के आने के बाद हल्के मामलों में भी सीएफएस की घटनाएं बढ़ी हैं. जेडओए सिंपटम ट्रैकिंग स्टडी से पता चला कि 3 और 10 दिसंबर के बीच नाक बहना, सिरदर्द, थकान, छींक और गले में तकलीफ ओमिक्रॉन के सबसे सामान्य लक्षण थे. इसी तरह अमेरिकी स्वास्थ्य एजेंसी सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल ऐंड प्रिवेंशन (सीडीसी) थकान को नए वैरिएंट के चार सबसे सामान्य लक्षणों में से एक बताती है. दक्षिण अफ्रीका की शुरुआती रिपोर्ट भी यही कहती हैं कि ओमिक्रॉन के कई हल्के मामलों में दूसरे लक्षण खत्म होने के बाद भी तीव्र थकान बनी रही. मुंबई के फोर्टिस हीरानंदानी अस्पताल के क्रिटिकल केयर के डायरेक्टर डॉ. चंद्रशेखर टी. कहते हैं, ''कोविड के कई बदलने और नहीं बदलने वाले लक्षण हैं और शुरुआत से ही व्यक्ति के लक्षण ठीक-ठीक तय कर पाना मुश्किल है. ज्यादातर तो अलग-अलग लोगों को कोविड-19 बीमारी की तीव्रता अलग-अलग होती है. हम देख रहे हैं कि तीव्रता जितनी भी हो, कुछ मरीज ठीक होने के बाद कमजोरी की शिकायत कर रहे हैं.''

कोविड के बाद सीएफएस होना हालांकि हैरानी की बात नहीं, क्योंकि वायरल संक्रमण से कोशिकाओं की रक्षा करने में शरीर अच्छी-खासी ऊर्जा और संसाधन खर्च कर देता है. डॉक्टरों का कहना है कि ऐसी थकान मलेरिया, टायफॉइड, डेंगू और इंफ्लुएंजा सहित कई बीमारियों से उबरने की अवधि के दौरान आम बात है. कमजोरी का स्तर इस पर निर्भर करता है कि व्यक्ति को बीमारी कितनी तीव्र थी. जिन्हें वेंटिलेटर और अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत पड़ी हो, उन्हें सीएफएस अक्सर इतना तीव्र होता है कि महीनों बिस्तर पर पड़े रहना पड़ता है. नई दिल्ली में साकेत स्थित मैक्स सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल के पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. विवेक नांगिया कहते हैं, ''शरीर को ठीक होने में वक्त लगता है. बीमारी के लक्षण खत्म होने के बाद शुरुआती दिनों में कमजोरी के कुछ लक्षण रहेंगे.''

कमजोरी कितने वक्त रहेगी, यह इस पर निर्भर करता है कि किसी व्यक्ति को बीमारी कितनी तीव्र थी. जनवरी 2022 में नॉर्वे में 66 ओमिक्रॉन-पॉजिटिव मरीजों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि कोविड के लक्षणों की शुरुआत से सात से 14 दिनों तक थकान बनी रही. चरम मामलों में थकान कुछ हफ्तों से ज्यादा रह सकती है, लेकिन ज्यादातर हल्के रूप से बीमार मरीजों में यह ठीक होने के बाद बस कुछ दिन रहेगी.

क्या थम गई है तीसरी लहर?

भारत में ओमिक्रॉन लहर दो महीनों के बाद कम होती नजर आ रही है. महामारी के दौरान सबसे ज्यादा आर-वैल्यू 2022 के पहले हफ्ते में थी. उस वक्त वह 4 थी. अभी आर-वैल्यू 1.3 है. अहम पैरामीटर मामलों तथा संक्रमण के प्रसार की गति में कमी का संकेत कर रहे हैं. आर-वैल्यू से यह आकलन किया जाता है कि एक पॉजिटिव मरीज कितने लोगों को संक्रमित कर सकता है. कोलकाता, मुंबई, दिल्ली और चेन्नै समेत सभी मेट्रो शहरों में आर-वैल्यू 1 से कम है. देश में 8 फरवरी को कोविड के 83,876 नए मामले दर्ज हुए, वहीं पॉजिटिविटी दर घटकर 7.25 फीसद हो गई है. यह डब्ल्यूएचओ-अनुशंसित 5 फीसद से अधिक है, पर जनवरी 2022 के पहले हफ्ते में दर्ज 16.2 फीसद से काफी कम है. 6 जनवरी के बाद पहली बार देश में रोजाना के कोविड मामले 1,00,000 से अधिक नहीं हुए हैं. मामलों में कमी ने कई राज्यों को स्कूल, मॉल, कार्यालयों आदि को खोलने के लिए प्रेरित किया है.

दुनिया भर में ऐसे ही रुझान हैं. डब्ल्यूएचओ का कहना है कि अधिकतर देशों में यह लहर पहले ही चरम पर पहुंच चुकी थी और अभी इसमें कमी आ रही है. उसने चेतावनी दी है कि हमें चैन से बैठ नहीं जाना है, तभी कोविड के नए वैरिएंट को उभरने से रोका जा सकेगा. महामारी को खत्म करने में टीके बहुत अहम हैं—मौजूदा प्रभावी स्ट्रेन्स के खिलाफ जितनी जल्दी दुनिया का टीकाकरण पूरा होगा, नए स्ट्रेन्स के उभरने की उतनी ही कम संभावना होगी. भारत में 15 साल से कम उम्र के बच्चों के टीकाकरण पर अभी रोक है क्योंकि डीसीजीआइ को सुरक्षा संबंधी और आंकड़ों का इंतजार है. वहीं, देश ने नौ टीकों के इस्तेमाल की मंजूरी दी है और यहां की 70 फीसद से अधिक वयस्क आबादी को टीका लग चुका है. विशेषज्ञों के मुताबिक, यही वजह है कि ओमिक्रॉन लहर कम अवधि तक रही और लक्षण डेल्टा लहर के मुकाबले कम गंभीर थे. ओमिक्रॉन लहर में किसी एक दिन में सबसे अधिक मौत की संख्या 1,733 थी, जबकि डेल्टा लहर में यह 4,300 थी. यह पक्का करने के लिए कि भविष्य में कोई चौथी लहर आए भी तो तुरंत खत्म हो जाए और बहुत कम नुक्सान पहुंचाए, पूरी आबादी का टीकाकरण जरूरी है.

पोषक आहार है कुंजी

डॉ. चंद्रशेखर कहते हैं, ''मरीज कितनी जल्दी उबरता है, यह इस पर भी निर्भर है कि बीमारी के दौरान और ठीक होने के बाद मरीज ने कितना पोषक आहार लिया.'' दिल्ली के मणिपाल अस्पताल की न्यूट्रिशनिस्ट डॉ. वैशाली वर्मा कहती हैं, ''मिनरल और विटामिन से भरपूर आहार लेना और उसके साथ पर्याप्त आराम शरीर के उबरने और बीमारी से ठीक होने के लिए बेहद जरूरी है.''

पबमेड के 2021 के एक अध्ययन से पता चला कि कुछ निश्चित चीजें—अंडे, मछली व सीफूड, फल, मांस, दूध, स्टार्चयुक्त कंद, शक्तिवर्धक चीजें, वानस्पतिक चीजें, अखरोट-बादाम, वनस्पति तेल और सब्जियां—खाने का कोविड से उबरने पर अच्छा असर होता है. आम तौर पर प्रोटीन और वसा की ज्यादा मात्रा वाली चीजें खाने का वायरस से उबरने पर अच्छा असर होता देखा गया है, जबकि अल्कोहल वाले पेय लेने का विपरीत असर पड़ता है.

ओमिक्रॉन का संक्रमण झेल चुके दिल्ली के 39 वर्षीय कुलदीप सिंह कहते हैं, ''ठीक होने के दौरान मैंने खूब सारी प्रो और प्रीबायोटिक चीजें खाईं. इससे मेरी ऊर्जा वापस आने और पाचन तंत्र पर वायरस का असर कम करने में मदद मिली. दही, छाछ, कांजी और कोम्बुचा मेरी पसंद थे.'' दिल्ली की क्लिनिकल न्यूट्रिशनिस्ट डॉ. मेघा जैना के मुताबिक, विटामिन के रासायनिक सप्लीमेंट के बजाए ताजे फल और सब्जियों से भरपूर आहार ऊर्जा के स्तर को फिर भरने में ज्यादा असरदार ढंग से मदद कर सकता है, क्योंकि शरीर प्राकृतिक स्रोतों से पोषक तत्व ज्यादा अच्छी तरह ग्रहण करता है. वे कहती हैं, ''कोविड के बाद का आहार तभी अच्छा

होता है जब उसमें संतुलन और विविधता हो. एसिडिटी, पेट फूलने और कब्जियत सरीखे पाचन से जुड़े लक्षण हों तो न्यूट्रिशनिस्ट से सलाह लेना जरूरी है ताकि पेट के स्वस्थ बैक्टीरिया बहाल किए जा सकें.''

मानसिक सेहत

सही पोषक आहार और आराम के अलावा यह भी जरूरी है कि मरीज अपना मानसिक तनाव कम करें. डॉ. चंद्रशेखर कहते हैं, ''सोशल मीडिया की वजह से वायरस, म्यूटेशन और वैक्सीन को लेकर व्यापक चिंता और दहशत है. ऑनलाइन आ रहे कई संदेश सही हैं, पर कई झूठे हैं और अफवाहें फैलाते हैं. इनसे कई मरीजों का मानसिक तनाव और बढ़ जाता है. कुछ लोग ऐसा इलाज कर बैठते हैं जिसे डॉक्टर मंजूर नहीं करते. सबसे अच्छी सिफारिश यही है कि डॉक्टर की सलाह से ही कोविड से उबरने की योजना बनाएं. कोविड के दौरान और बाद का इलाज मरीज की हालत और स्वास्थ्य के मानदंडों को ध्यान में रखकर करना होता है. यह ऑनलाइन जानकारियों के भरोसे नहीं किया जा सकता.''

''थकान कोविड का सामान्य लक्षण है लेकिन ओमिक्रॉन आने के बाद हल्के मामलों में भी थकान के वाकए बढ़े हैं''

मुंबई के मनोचिकित्सक डॉ. केदार तिल्वे कहते हैं कि मानसिक तनाव का शारीरिक ऊर्जा पर घातक असर हो सकता है. यह हमारे शरीर की बीमारी से उबरने की प्राकृतिक प्रक्रिया में बाधा डालता है. डॉ. तिल्वे कहते हैं, ''आपका दिमाग और शरीर गहराई से आपस में जुड़े हैं. चिंता, कम नींद और तनाव शारीरिक थकान बढ़ा देंगे.''

ऊर्जा की कमी और कमजोरी को समझना और इनसे निबटना मुश्किल हो सकता है. कई डॉक्टरों का कहना है कि मरीज को तनाव तब महसूस होता है जब वह कोविड के लक्षणों के जाने के बाद भी फौरन रोजमर्रा के काम शुरू नहीं कर पाते. मगर, जैसा कि विशेषज्ञ कहते हैं, कोविड ठीक होने के बाद भी बने रहने वाले इस लक्षण से जूझते वक्त आराम, पोषक आहार और दिमागी बेफिक्री का चोली-दामन का साथ है. ■

#BeTheBetterGuy
A Road Safety Initiative

HYUNDAI Moving the world Together
A CSR initiative by Hyundai Motor India Foundation
× INDIA TODAY GROUP

एक सयुंक्त उद्देश्य के साथ देश के दो प्रतिष्ठित संस्थान हुंडई मोटर इंडिया फाउंडेशन और इंडिया टुडे ग्रुप, भारतीय सड़कों को सुरक्षित बनाने के लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए एक साथ आए हैं। यह अभियान, भारतीयों को सड़क सुरक्षा नियमो के प्रति जागरूक और एक सकारात्मक जैविक बदलाव लाने की दिशा के लिए प्रेरित है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य लोगो के बीच सड़क सुरक्षा और ड्राइविंग शिष्टाचार के बारे में जागरूकता पैदा करना है। इन दो कारकों के प्रति स्वयं चालकों का गैर जिम्मेदाराना रवैया ही अधिकांश दुर्घटनाओं का कारण बनता है।

सुरक्षा आवश्यक है

किसी भी वाहन की अनियंत्रित गति, बहुत ही घातक हो सकती है, यह बहुत ही आवश्यक है कि आप मार्ग के निर्देशित गति नियमों का पालन सख्ती के साथ करे और अपना वाहन अपनी लेन में ही चलाये।

जब वाहन की गति के नियंत्रित करने की बात आती है तो वाहन की अच्छी फिटनेस एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। एक अच्छा ड्राइवर बनने के लिए, आपको यह जानना होगा कि आपकी कार कैसे नियंत्रित और तेज होती है। प्रत्येक व्यक्तिगत वाहन के उपयुक्त ब्रेकिंग के इस्तेमाल को सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण है ताकि जब कोई वाहन चलाते समय गड़बड़ी करता है या निर्णय लेने में गलती करता है, तो आपके पास होने वाले संभावित प्रभाव से पहले ही संभालने के लिए पर्याप्त समय होगा।

वाहन चलाना काफी लोगो को रोमांचित करता है! वाहन को धीमी और नियंत्रित गति में चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। तो, अगली बार आप जब भी वाहन चलाये तो यह जरूर ध्यान दे कि क्या वास्तव में तेज गति अथवा धीमी नियंत्रित गति में से कौन सी ज्यादा सुविधा जनक और आनंदित करती है और आपके और आपके परिवार के लिए ज्यादा सुरक्षित है।

पश्चिम बंगाल

दीदी-भतीजे के बीच खिंचने लगी तलवार

रोमिता दत्ता

पीटीआई

अलग राह पर
दक्षिण दिनाजपुर जिले में टीएमसी की एक रैली में अभिषेक बनर्जी

तृणमूल कांग्रेस के भीतर की 'पीढ़ियों की लड़ाई' के सोशल मीडिया पर आ जाने के लगभग एक पखवाड़े बाद पार्टी अध्यक्ष ममता बनर्जी ने आखिरकार 2 फरवरी को जल्दबाजी में आयोजित संगठनात्मक चुनावों में अपनी चुप्पी तोड़ी. अध्यक्ष पद पर दोबारा निर्विरोध निर्वाचित होने के बाद उन्होंने पहला काम पार्टी पर वर्चस्व प्रदर्शन का किया. पार्टीजन की चौतरफा खामोशी के बीच उन्होंने कहा, ''कोई नेता आसमान से नहीं टपकता. वह अपने काम के जरिए से ही नेता बनता है.'' बहुतों का मानना है कि उनकी यह टिप्पणी बगल में बैठे पार्टी में दूसरे नंबर के नेता और भतीजे अभिषेक तथा सोशल मीडिया पर बढ़-चढ़ कर उनके 'नेतृत्व गुणों' का प्रचार कर रही युवा ब्रिगेड पर थी. सोशल मीडिया पर अभिषेक के निर्वाचन क्षेत्र डायमंड हार्बर में गंगासागर मेले के दौरान कोविड प्रोटोकॉल को लागू करने के तरीके की खास तौर पर चर्चा हो रही थी.

यह घटनाक्रम 8 जनवरी का है, जब अभिषेक ने खुल कर कोविड के दौर में मेला आयोजित करने के खिलाफ टिप्पणी की थी, जबकि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता राज्य में ओमिक्रॉन पीड़ितों की संख्या में वृद्धि के बावजूद इसे ''लोक उत्सव'' के रूप में प्रचारित कर रही थीं. अभिषेक ने एक सीधी टिप्पणी करते हुए कहा था कि कोविड के तेजी से फैलने के समय ''राज्य और समाज को बचाने'' के लिए धार्मिक त्योहारों का ऐसा सामूहिक आयोजन रोका जाना चाहिए. मानो अपनी बात को ठीक साबित करने के लिए ही उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कोविड परीक्षण अभियान चलाया और मेलार्थियों के लिए प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन कराना पक्का किया. लोकसभा में पार्टी के मुख्य सचेतक और वरिष्ठ नेता कल्याण बनर्जी ने उस समय अभिषेक के सार्वजनिक टिप्पणी करने की गुस्ताखी पर सवाल उठाया था और इसी से पार्टी के पुराने वफादारों और अभिषेक-समर्थकों के बीच कटाक्षों का दौर शुरू हुआ था.

दरअसल, पिछले कुछ समय से स्थितियां भीतर ही भीतर खदबदा रही थीं. एक मजाक चल रहा था कि आप तृणमूल कालीघाट हैं या तृणमूल कैमक स्ट्रीट? (इसका संदर्भ कालीघाट में ममता के घर और कैमक स्ट्रीट में अभिषेक के कार्यालय से है.)

पिछले साल विधानसभा चुनावों के दौरान उम्मीदवारों के चयन के मामलों में भी दोनों शायद ही कभी एकराय रहे हों. वही क्यों, हाल ही हुए कोलकाता नगर निगम (केएमसी) के चुनावों में भी ऐसा ही हाल था. ये मतभेद उस समय सार्वजनिक हुए जब ममता ने स्थानीय चुनावों के लिए अभिषेक और चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर (पीके) की बनाई उम्मीदवारों की सूची को खारिज कर दिया. पीके ने ही पिछले साल की विधानसभा चुनाव जीतने में उनकी मदद की थी और अब टीएमसी थिंक-टैंक का हिस्सा हैं. सूत्रों का कहना है कि तृणमूल के इतिहास में पहली बार ममता और उनके भतीजे के बीच उम्मीदवारों के चयन को लेकर तीखी बहस भी हुई थी.

यही मुद्दे 4 फरवरी को भी उभरे जब पार्टी के आइटी सेल ने 108 नगरपालिकाओं के चुनाव के लिए उम्मीदवारों की सूची पार्टी की वेबसाइट पर अपलोड की. जल्द ही नेतृत्व को इसे नकली सूची के रूप में सार्वजनिक रूप से खारिज करने के लिए मजबूर होना पड़ा. पार्टी के एक विधायक ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि ''इस सूची पर वरिष्ठ नेताओं पार्थ चटर्जी और सुब्रत बख्शी के हस्ताक्षर नहीं थे जिन्हें दीदी ने यह काम सौंपा था. हमें संदेह है कि इसके पीछे पीके की टीम है जो पार्टी की आइटी सेल संभालती है. यह सूची पीके के इच्छानुसार बनी थी, जिसे नेतृत्व ने खारिज कर दिया.''

पीके और अभिषेक के बारे में कहा जाता है कि टीएमसी में सुधार के बारे में दोनों एकराय हैं, इसलिए कोई यह भी नहीं पूछ रहा है कि सूची तैयार करने में पीके की मदद किसने की. एक सूत्र का कहना था कि ''पीके की लगभग 30 फीसदी संस्तुतियों को खारिज कर दिया गया था, लेकिन नेतृत्व ने बाकी को अभिषेक की सिफारिशों के रूप में स्वीकार कर लिया था.'' इस सूत्र ने यह भी जोड़ा कि हो सकता है कि पीके पार्टी छोड़ दें.

प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय में एमेरिटस प्रोफेसर समाज विज्ञानी प्रशांत रे का कहना है कि ''शुरुआत में पार्टी में पुराने और युवा नेताओं के बीच सीधा विभाजन था. अब विभाजन उम्र और जनसांख्यिकी से आगे बढ़ कर दो शीर्ष नेताओं के बीच ताकत के खेल में बदल चुका है.'' बीती 8 फरवरी को तृणमूल कांग्रेस के महासचिव पार्थ चटर्जी ने अभिषेक पर कटाक्ष करते हुए कहा था कि ''ममता का कोई निजी परिवार नहीं है'' बल्कि राज्य के लोग ही उनका परिवार हैं.

हालांकि अभिषेक राज्य के प्रशासनिक मुख्यालय नबान्न से दूरी बनाए रखते हैं, लेकिन चर्चा यह भी है कि उनकी आंखें और कान वहां मौजूद हैं. कथित तौर पर कुछ कनिष्ठ नौकरशाह उनके करीबी हैं, लेकिन वरिष्ठ नौकरशाह दीदी के साथ हैं. सूत्रों का यह भी कहना है कि आइपीएस लॉबी उनके नियंत्रण में है और तबादलों और तैनाती में उनका प्रभाव काम करता है. हाल ही में, कोलकाता के पुलिस आयुक्त के चयन को लेकर भी दोनों शक्ति केंद्रों के बीच मतभेद सामने आए थे. ममता की पसंद विनीत गोयल थे जबकि अभिषेक ज्ञानवंत सिंह के पक्ष में थे. डायमंड हार्बर विवाद के बाद अब ममता कथित तौर पर आइपीएस अधिकारियों की तैनाती में फेरबदल करने जा रही हैं ताकि अपने भरोसे के लोगों को उचित स्थान दिया जा सके. ■

इंडिया टुडे

लता मंगेशकर 1929-2022

सुर सम्राज्ञी

इंपैक्ट प्रस्तुति

GALGOTIAS UNIVERSITY

गलगोटिया युनिवर्सिटी
एक दर्जन से ज्यादा भाषाओं में
30,000 से ज्यादा गीत गाने वालीं
भारत रत्न और भारत की स्वरकोकिला
को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है

फोटोः रघु राय/इंडिया टुडे

कायम रहेगी सुर सत्ता

सात दशक तक गायन में सक्रिय स्वरकोकिला लता मंगेशकर ने हाल ही में दुनिया को अलविदा कहा. उनके पार्श्वगायिका बनने, भारतीय संगीत की दुनिया पर छाने और जीने की खोजपरक दास्तान

सुमित मित्रा और **शिवकेश मिश्र**

यह सही है कि फनकार कभी भी फन से बड़ा नहीं हो सकता लेकिन कुछ फनकार ऐसे होते हैं जो अपनी प्रतिभा और प्रयोगधर्मिता के बूते उसे उसकी ज्ञात सीमाओं और संभावनाओं से भी काफी आगे लेकर निकल जाते हैं. इसकी वजह से वे अक्सर कला का पर्याय बन जाते हैं और कभी-कभी उन्हें देवत्व का दर्जा हासिल हो जाता है. लता मंगेशकर उन्हीं चंद फनकारों में शुमार हैं. आधुनिक भारत के इतिहास में संगीत, खासकर फिल्म संगीत उनके बिना अधूरा है. इसके अलावा, भजनों, गजलों, अभंग पदों, नात, कव्वाली, श्लोक-मंत्र गायन, लोक-गीतों के माध्यम से उन्होंने जितनी रोशनी बिखेरी, उसके अनुपात में कोई संगीत विश्लेषक या सिनेमा अध्येता अपनी बात कभी भी मुकम्मल नहीं कर सकता. पर अंततः वे भी इनसान थीं और इसके गुण-दोषों से मुक्त न थीं. कोविड-19 की वजह से महीने भर तक बीमार रहीं और 6 फरवरी को परम तत्व में विलीन हो गईं.

शरद सक्सेना

लेकिन उनकी आवाज हमेशा गूंजती रहेगी. यह आवाज, महात्मा गांधी की धोती और रबींद्रनाथ टैगोर की दाढ़ी की तरह भारत की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन गई. अगर संचार के जादूगर मार्शल मकलूहन आज जिंदा होते और उन्हें अपने ''वैश्विक गांव'' के चारों ओर भारत के संगीत फलक पर निगाह डालने के लिए कहा जाता, तो शायद वे एक नए मुहावरे से इस आवाज को आदरांजलि देते: ''संगीत ही चंपी है.''

इस सर्वव्यापी संगीत की ''चंपी'' करने वाली और भारत के बेहद लोकप्रिय सुगम संगीत उद्योग की सम्राज्ञी एक स्थूलकाय, सांवली, कैमरे के आगे शर्मीली, सीधी-सादी मराठी महिला लताबाई मंगेशकर थीं. पार्श्वगायिका के तौर पर इस महिला का रौब-दाब कुछ ऐसा था कि 1981 में देश के 100 करोड़ रुपए के फिल्म जगत के शहंशाह भी उसका सपना तक नहीं देख सकते.

उनकी भृकुटि पर एक बल पड़ा नहीं कि देश के सबसे ज्यादा मेहनताना पाने वाले संगीत निर्देशक दहशत में आ जाते थे. इनकार में उनकी गर्दन जरा हिली नहीं कि अंतरराष्ट्रीय संपर्कों वाली रिकॉर्ड कंपनियों के पैरों के नीचे से जमीन खिसक जाती थी. संगीत निर्देशक जोड़ी शंकर-जयकिशन के शंकर ने कहा था: ''जुकाम लताजी को होता है और समूची फिल्म इंडस्ट्री को छींकें आने लगती हैं.''

किसी भी महिला ने उतने गाने रिकॉर्ड नहीं करवाए जितने 92 साल की लता ने करवाए. *गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स*, 1991 के मुताबिक, लता ने 1948 से 1987 के दौरान 30,000 गाने गाए. उन्होंने अपना आखरी गाना 2019 में *सौगंध मुझे इस मिट्टी की* मयूरेश पै के साथ रिकॉर्ड कराया. गाने गाते हुए उन्होंने शानदार दौलत कमाई, जिसका मोटा-मोटी अनुमान ही लगाया जा सकता है.

''निर्विवाद'' मलिका: उन्होंने पार्श्वगायन को उसके मातहत दर्जे से बहुत ऊंचा उठाकर देश के फलते-फूलते मनोरंजन उद्योग के बेशकीमती हिस्से के दर्जे पर पहुंचा दिया. बहुत पहले 1959 में *टाइम* पत्रिका ने ''भारत के पार्श्वगायकों की निर्विवाद और अपरिहार्य मलिका'' कहकर उनका वर्णन किया था.

लता जिन उपलब्धियों का विशाल पिटारा थीं, वे गायकी के बहुत छोटे-से दायरे में बरसों लगातार खटने और पसीना बहाने का मुकम्मल नतीजा है. लता मंगेशकर यह काम हैरतअंगेज सहजता से करती थीं. ज्यादातर मर्तबा वे समुचित रिहर्सल किए बगैर गातीं और बगैर किसी रीटेक के, 70 सदस्यों के ऑर्केस्ट्रा के साथ सीधे गाते हुए फिल्म का साउंड ट्रैक रिकॉर्ड करवा देती थीं. 1977 में वे लंबे विदेश दौरे से सीधे राज कपूर की *सत्यम् शिवम् सुंदरम्* की रिकॉर्डिंग के लिए पहुंच गईं, संगीत निर्देशक लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल को 10 मिनट फिल्म का थीम सांग गुनगुनाते सुना और रिकॉर्डिंग रूम में दाखिल हो गईं. नतीजा एक ऐसे गाने की शक्ल में सामने आया जो करीब दो साल तक लोकप्रिय गानों की फेहरिस्त में चोटी पर रहा और आज भी खूब सुना जाता है.

उन्होंने 1946 से हिंदी फिल्मों में गाना शुरू कर दिया था और अस्सी के दशक में उनके पास मुंबई में कम से कम 50 फिल्मों के लिए गाने के करार हुआ करते थे. उन्होंने मधुबाला और नरगिस सरीखी गुजरे जमाने की दिलकश तारिकाओं के लिए गाने गाए. उतनी ही सहजता से उन्होंने कल पैदा हुई लड़कियों के लिए गाने गाए. (देखें: मेरी आवाज ही पहचान है...)

आलोचक: सभी कामयाब कलाकारों की तरह लता के भी कटु आलोचक रहे हैं, जो कहते थे कि उन्होंने अपनी सुनहरी आवाज गंवा दी है. *अनारकली* के मशहूर गानों के संगीत रचयिता और उनके घनिष्ठ दोस्त रहे सी. रामचंद्र ने कभी कहा था, ''लता मंगेशकर गुजरे जमाने की लता की फीकी छाया भर हैं.'' मगर एक युवा संगीत निर्देशक ने पलटकर जवाब दिया कि ज्यादा संभावना इस बात की है कि खुद रामचंद्र अपने अतीत की ''फीकी छाया'' हैं.

> लता मंगेशकर को स्टुडियो में काम करते देखकर उनकी कार्यशैली का अंदाजा लगता था. वे सीखने में कभी एक पाली से ज्यादा वक्त नहीं लेती थीं. रिहर्सल करके और गाना रिकॉर्ड करवा देतीं

भास्कर पॉल

योगेन शाह

*स*रगम और *आशा* के गानों की जबरदस्त सफलता के बावजूद वे फिल्मों के लिए कम गा रही थीं. इसकी जगह वे अपनी पुरानी हिट फिल्मों को रीसाइकिल करने की स्वदेशी तरकीब के बारे में सोच रही थीं: यानी उन्हें लाइव कंसर्ट में फिर से रिकॉर्ड करना. इसमें पूरी तरह उन्हीं का फायदा था, क्योंकि इन गानों की दस फीसद या इतनी ही रॉयल्टी सीधे उन्हें मिलती, उन फिल्मों के प्रोड्यूसरों को दरकिनार करते हुए, जिनकी फिल्मों में ये गाने आए थे. विदेशों में उन्हें और ज्यादा से ज्यादा सुना जाता था. विदेश में उनका कंसर्ट 1974 में नेहरू स्मारक निधि के सहयोग से लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल एल्बर्ट हॉल में उनके लाइव प्रदर्शन से शुरू हुआ था.

विदेश में कार्यक्रम: उनकी लोकप्रियता का कुछ अंदाजा अमेरिका और कनाडा में उनके और रविशंकर के एक प्रदर्शन के लिए वसूल की जाने वाली फीस से लगाया जा सकता

पीटीआइ

भास्कर पॉल

मंदार देवधर

लता एक, संगति अनेक

(एकदम बाएं से क्रमशः) अलग-अलग मौकों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी; आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत; शिवसेना नेता बाल ठाकरे; अभिनेता अमिताभ बच्चन; और संगीतकार ए.आर. रहमान के साथ

है. वे अस्सी के दशक के शुरू में 15,000 डॉलर मांगतीं और हासिल करती थीं, जबकि रविशंकर महज 1,000 डॉलर लेते थे.

संगीत की किन्हीं विधाओं में अगर वे डगमगाईं तो वे हैं गजल और भजन. गजलों में जगजीत-चित्रा सिंह की जोड़ी ने लता की तो बात ही छोड़ दें, बेगम अख्तर और पाकिस्तान के मेंहदी हसन सहित हरेक को पीछे छोड़ दिया. गजलों में लता शीर्ष पर नहीं पहुंच पाईं, तो भजनों में भी अपनी बढ़त अस्सी के दशक में हरिओम शरण के हाथों गंवा बैठीं.

अलबत्ता विदेशों में अपने लाइव प्रदर्शन के बेहद लोकप्रिय एल्बमों को मूल रिकॉर्ड की तरह दिखाकर लता ने शरण, जगजीत-चित्रा और बाकी गैर-फिल्मी गायकों के ऊपर नुक्सान की भरपाई करने वाली जीत हासिल की. रॉयल एल्बर्ट हॉल के रिकॉर्ड ने तो रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की ही, उद्योग में मौजूद संकेतों से बिल्कुल साफ है कि 1980 में पैलेडियम थिएटर में उनके कार्यक्रम की लाइव रिकॉर्ड की बिक्री कुछ ही वक्त में छह अंकों का निशान पार कर गई.

शुरुआती जिंदगी: लता मंगेशकर की शुरुआती जिंदगी गरीबी, हाड़-तोड़ मेहनत और बदकिस्मती के दुस्वप्नों की महागाथा है. मराठा हृदयप्रदेश महाराष्ट्र से दूर इंदौर में उनका जन्म हुआ. गोवा के मंगेशी से आए उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर शास्त्रीय गायक थे, जिनकी शिक्षा-दीक्षा बाबा माशेलकर के रंगारंग पंजाबी स्कूल में हुई थी. दीनानाथ की एक नाटक मंडली थी, जिसने अपना तंबू राज्य के हरेक कस्बे में गाड़ा, जिनमें पुणे, कोल्हापुर, सतारा, सांगली और मिरज भी थे. पिता के पेशे की वजह से बच्चों—चार बेटियों और एक बेटे—को घुमंतू जिंदगी बसर करनी पड़ी. दीनानाथ अपने बच्चों की समुचित स्कूली पढ़ाई का इंतजाम तो नहीं कर पाए, लेकिन इसकी भरपाई उन्होंने शुरुआती जिंदगी में संगीत के सबको की कड़ी खुराक देकर की. लता ने कहा, ''मेरे संगीत के रुझानों की बुनियाद उन शुरुआती दिनों में ही पड़ गई थी.''

दीनानाथ की नाटक कंपनी बलवंत संगीत नाटक मंडल बहुत पैसा नहीं उलीचती थी, लेकिन इतना तो दे ही देती थी कि परिवार सीधी-सादी जिंदगी बसर कर पाए. बच्चों में सबसे बड़ी लता ने बचपन में एक ही आफत झेली, वह थी दो साल की उम्र में चेचक का हमला, जिसके निशान मरते दम तक रहे.

परिवार के लिए तबाही ने 1934-35 में दस्तक दी, जब अलमस्त मिजाज के पारसी आर्देशिर ईरानी ने पहली ''टॉकी'' *आलम आरा* बनाकर भारतीय सिनेमा को खामोशी के युग से बाहर धकेल दिया. बंगाल के अलावा महाराष्ट्र अकेला दूसरा राज्य था जहां घुमंतू नाटक कंपनियों का बोलबाला था. नाटक कंपनियां इस ''ध्वनि आक्रमण'' के असर से लड़खड़ा गईं. दीनानाथ की बलवंत नाटक मंडली सहित उनमें से ज्यादातर बंद हो गईं. परिवार छोटे-से व्यापारिक कस्बे सांगली आ गया, जहां, लता के शब्दों में, ''हम पहली बार बसे.''

दीनानाथ ने सांगली में अपनी पत्नी के गहने गिरवी रखकर एक फिल्म कंपनी शुरू की. बदलाव आसान नहीं था. 1930 के उस दशक में दर्शकों की समझ और संवेदना तेजी से बदल रही थी. लिहाजा उनके डिब्बाबंद थिएटर को ज्यादा खरीदार नहीं मिले. 1938 में फिल्म कंपनी बंद हो गई और परिवार एक बार फिर उखड़कर इस बार पुणे आ गया.

कमाऊ पूत: दीनानाथ की जिंदगी के बाकी चार साल पूरा परिवार आकाशवाणी के पुणे केंद्र पर गायन से होने वाली उनकी थोड़ी-सी आमदनी पर जिंदा रहा. 1942 में जब प्लूरिसी, दिल के दौरे और हताशा से दीनानाथ की मृत्यु हुई, हड्डियों की टीबी से ग्रस्त उनके सबसे छोटे बेटे हृदयनाथ अपने पिता की बगल में लेटे थे. दीनानाथ की मृत्यु के आठवें दिन महज 13 की उम्र में लता ने अच्छा-खासा मेकअप पोता और जानी-मानी अभिनेत्री नंदा के पिता मास्टर विनायक राव की मराठी फिल्म *पाहिली मंगलागौर* में अभिनय करने और गाना गाने आ गईं.

उस फिल्म में लता ने नायिका की बहन का किरदार अदा किया और तीन गाने गाए. लता ने बताया था, ''मुझे मेकअप करने से नफरत थी. मुझे रोशनी की चकाचौंध में खड़े होने से नफरत थी. मगर मैं परिवार

उस्ताद शफकत अली (पाकिस्तान)

मेहमान का पन्ना

''उन्हें उस्ताद का दर्जा मिलना चाहिए''

लता जी पाकिस्तान के गवैयों को बड़ी मोहब्बत से देखती थीं. इधर के जो भी गवैये सरहद पार गए, उनकी उन्होंने बड़ी कद्र की. मेहदी हसन हों, हुसैन बख्श या फिर सलामत-नजाकत खां साब. वह दौर राजकपूर का था. आरके स्टुडियो में महफिलें जमती थीं (**फोटो उसी की**). और एक ग्रुप था जिसमें पंडित रामनारायण, दिलीप साहब, देवानंद, मोहम्मद रफी, मुकेश और लता जी वगैरह होते थे. सलामत-नजाकत खां साब जब-जब इंडिया गए, लता जी बराबर सामने होतीं. खां साब लता जी की बड़ी इज्जत करते थे. उनकी नजर में वे एक बड़ी क्लासिकल सिंगर थीं. वे कहते थे कि सिनेमा में गाना बेशक उन्होंने अपनी मर्जी से चुना, लेकिन राग भी वे उतनी ही आसानी से गातीं, इसमें कोई शक नहीं. खां साहब का कहना था, चार मिनट के गाने में वे सुर का लाजवाब काम करती हैं.

सौजन्यः शाम चौरासी म्युजिक सर्कल

खां साब की राय में लता जी ने फिल्म के जिस भी रंग को गाया, ता-उम्र उन्होंने उसे ईमानदारी से निभाया. जिस किसी भी संगीतकार के लिए गाया, उठाकर देख लें, सीख है, सबक है वो गाना. मदन मोहन ने उनके लिए जो बनाया उसमें वे तभी दिखते हैं जब लता की आवाज उन्हें मिलती है.

एक फिल्म बन रही थी *अमर समाधि*. उसमें एक सीन था जिसमें उस्ताद अपने शागिर्द को सिखा रहे हैं. लता जी के उस्ताद की आवाज सलामत अली की थी. उनकी महानता देखिए! उन्होंने कहलवा दिया कि वे खां साब के साथ बैठकर नहीं गाएंगी. सुनकर बाद में अपना हिस्सा गाएंगी. और बकौल सलामत अली खां, जब गाया तो ऐसा लाजवाब, इतना साफ-सुथरा काम करते हुए उन्होंने ऐसा मेल बिठाया कि हैरानी होती है. बड़ी इंट्रेस्टिंग बात थी कि वे सुन कर ही अपना हिस्सा गा रही हैं. दोनों का गाया राग अडाना और मारवा बंदिश का वह टुकड़ा आज भी मौजूद है. सन् 65 के आसपास का वाकया होगा. हालांकि फिल्म क्यों नहीं बनी, मैं नहीं जानता.

लता जी ने बड़े गवैयों को सुना, इसीलिए उनकी आवाज में गायिकी दिखती है. इसीलिए मैं उनके गाने गाता हूं जबकि उनका 3 मिनट का गीत गाना भी उतना ही मुश्किल है. इसकी वजह है 3 मिनट में वे 3 घंटे का काम कर जाती हैं! अपने फन की इस इकलौती कलाकार को पंडित, उस्ताद का दर्जा मिलना चाहिए. गाते हुए वे मेरे वालिद की तरह सुरों से खेलती थीं. इन्हीं कारणों से वे मेरी फेवरिट थीं और रहेंगी. दुनिया में जहां-जहां मौसिकी को माना जाता है वहां-वहां लता जी को मान्यता थी. सुरों की जगत मां, जगतगुरु थीं वे. शाम चौरासी घराना उन्हें सैल्यूट करता है. वे जितनी हिंदुस्तान की थीं उतनी ही पाकिस्तान की भी. आज पाकिस्तान भी उतना ही दुखी है.

(उस्ताद शफकत अली पाकिस्तान में शाम चौरासी घराने के शास्त्रीय गायक हैं. आलेख ***राजेश गनोदवाले*** *से बातचीत के आधार पर)*

एएफपी

की कमाऊ पूत थी और कोई चारा नहीं था. जिस दिन मैं मास्टर विनायक की फिल्म में काम करने गई, घर में खाने को कुछ नहीं था.'' उनकी अदाकारी से विनायक खुश थे और उन्होंने उन्हें 60 रुपए महीने की पगार पर स्टाफ कलाकार के तौर पर रख लिया. 1947 में विनायक की मृत्यु और उनकी कंपनी प्रफुल्ल पिक्चर्स के बंद होने के वक्त उनकी पगार बढ़कर 350 रुपए हो गई थी. मगर उससे पहले 1945 में कंपनी अपना मुख्यालय पुणे से हटाकर बंबई ले आई और इस तरह लता अपने सपनों के महानगर में आ गईं.

उन दिनों नाना चौक पर दो कमरों के फ्लैट का किराया 25 रुपए महीना था, जो निकाल पाना लता के लिए तब तक भी आसान नहीं था, खासकर जब कजिंस सहित उनके परिवार में आठ सदस्य थे. छोटी बहन आशा भोंसले, जो अब मशहूर गायिका हैं, उस वक्त इतनी छोटी थीं कि गायन से कमा नहीं सकती थीं. हृदयनाथ ने बताया, ''परिवार चलाने के लिए दीदी दिन-रात हाड़-तोड़ मेहनत कर रही थीं.''

मुंबई में लता के लिए पहली बड़ी घटना वह थी जब उन्हें शास्त्रीय गायक अमन अली खां भिंडीबाजारवाले से मिलवाया गया, जिन्होंने उन्हें अपनी शागिर्दी में ले लिया. यह पूरी रस्म अदायगी के साथ हुआ, जिसमें

हम साथ-साथ

(दाएं से) लता मंगेशकर अपनी बहनों आशा भोसले, मीना खाडिकर, उषा मंगेशकर और भाई हृदयनाथ मंगेशकर के साथ

उनके बाजू पर बाकायदा गंडा बांधा गया. मगर बंटवारे के नतीजतन अमन अली पाकिस्तान चले गए और लता को अमानत अली में नया गुरु खोजना पड़ा, जो पारंगत गायक थे और उसी स्कूल में पढ़ाते थे जिसमें यशस्वी शास्त्रीय गायक आमिर खान पढ़ाते थे.

1951 में अमानत अली की मृत्यु से लता की शास्त्रीय संगीत की शिक्षा-दीक्षा पर अचानक विराम लग गया. उन्होंने *इंडिया टुडे* से कहा था, ''अमानत अली अगर जिंदा होते तो शायद मैं शास्त्रीय गायिका बन गई होती.'' मगर इसकी कम ही संभावना थी क्योंकि 1947 तक लता पार्श्वगायिका के तौर पर स्थापित हो चुकी थीं. उसी साल उन्होंने *मजबूर* नाम की एक फिल्म के लिए गाया. यह ठुमरी थी और नायिका के लिए उनका पहला गाना भी. *मजबूर* बहुत हिट फिल्म थी.

मजबूर में यह पहला मौका भी उन्हें नाटकीय ढंग से मिला. विनायक की मृत्यु और प्रफुल्ल पिक्चर्स के बंद होने के बाद जल्द ही मंगेशकर परिवार फिर तंगहाली की चपेट में था, क्योंकि लता की कोई तय आमदनी नहीं थी. वे फिल्मों में एक्स्ट्रा सप्लाइ करने वाले शख्स के पास गईं, जो उन्हें अमानत अली के करीबी दोस्त और उस वक्त के अग्रणी संगीत निर्देशक मास्टर गुलाम हैदर के पास ले गए.

हैदर इस कमउम्र लड़की की आवाज की रेंज और सुरीलेपन पर मुग्ध हो गए. वे उन्हें शशिधर मुखर्जी के पास ले गए, जिनका फिल्मिस्तान स्टुडियो बंबइया शो बिजनेस का मक्का हुआ करता था. मुखर्जी ने उसी वक्त उन्हें खारिज कर दिया और कहा कि इस ''नन्ही-सी बेचारी'' की आवाज इतनी ''चीं चीं करने वाली'' है कि हीरोइन कामिनी कौशल के लिए फबेगी नहीं, जो 1940 के दशक में रुपहले परदे की मलिका थीं. हैदर ने शांतभाव से उनसे कहा: ''मुखर्जी, मैं तुम्हें आज पहले से बता रहा हूं कि यह बच्ची बहुत जल्द हरेक को पीछे छोड़ देगी, नूरजहां को भी.'' नूरजहां, जो बाद में पाकिस्तान चली गईं और वहां शीर्ष पर पहुंचीं, उन दिनों वे सुगम संगीत का सबसे बड़ा नाम हुआ करती थीं.

शुरुआत: उसी दिन गुलाम हैदर के साथ लता मलाड स्थित बॉम्बे टॉकीज के स्टुडियो गईं. मूसलाधार बारिश हो रही थी. गोरेगांव स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर हैदर ने उनसे वही गाना गाने को कहा जो उन्होंने थोड़ी देर पहले मुखर्जी के लिए गाया था—'बुलबुलो मत रो यहां'. वे गा रही थीं और हैदर अपनी 555 ब्रांड की सिगरेट की डिब्बी पर उंगलियां थपथपा रहे थे. हैदर गाने में डूबे रहे. गाना खत्म होने के बाद भी उन्होंने एक शब्द नहीं बोला.

घंटे भर बाद लता यही गाना बॉम्बे टॉकीज में गा रही थीं, जहां उन्हें *मजबूर* के लिए चुन लिया गया. लता ने बताया था, ''उसके बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा.'' मजबूर के लिए रिकॉर्डिंग आसान नहीं थी. गाने की 32 टेक में रिकॉर्डिंग हुई. बॉम्बे टॉकीज के रिहर्सल रूम में गुलाम हैदर की ''खोज'' को सुनने के लिए संगीत निर्देशकों की पूरी फौज जमा थी. उनमें हुसनलाल भगतराम, अनिल बिस्वास, नौशाद और खेमचंद प्रकाश प्रमुख थे. लखनऊ में जन्मे सौम्य संगीत निर्देशक नौशाद की सुरीली धुनें 1950 के दशक की संगीतमय फिल्मों की कामयाबी के लिए बड़े पैमाने पर जिम्मेदार हुआ करती थीं. पहली पेशकश उनकी तरफ से आई और उन्होंने *अंदाज* के लिए लता के साथ करार किया. *अंदाज* बॉक्स ऑफिस के धुरें बिखेर देने वाली कामयाब फिल्म थी. भगतराम ने एक और कामयाब फिल्म *बड़ी बहन* के लिए लता से गवाया. फिर *बरसात* आई जिसमें उन्होंने *जिया बेकरार है* गाया, वह गाना जिसकी लोकप्रियता आज भी कम नहीं हुई है.

शोहरत लता की जिंदगी में अचानक आई, पर पैसा अब भी आंख-मिचौली खेल रहा था. *जिया बेकरार है* के लिए उन्हें महज 200 रुपए मिले और कई साल तक एक गाने के लिए कभी 400 रुपए से ज्यादा नहीं मिले. हरेक गाने के लिए उन्हें रिहर्सल पर कम से कम एक पखवाड़े बैठना पड़ता, कम से कम आधा दर्जन रीटेक से गुजरने की यंत्रणा की तो बात ही छोड़ दें.

मुलाकात: देर रात घर लौटते हुए अक्सर उनकी झपकी लग जाती. कई बार वे आधी रात गुजरने के बाद आखिरी स्टेशन चर्चगेट पहुंच जातीं, जहां सफाई करने वाली महिला उन्हें जगाती और उतरने को कहती. ''उतनी देर रात भी मैं चर्चगेट से पैदल घर लौटती. बंबई उन दिनों सभ्य शहर हुआ करता था.''

एक दिन लोकल ट्रेन के तीसरे दर्जे के डिब्बे में नौशाद ने उन्हें अदाकार दिलीप कुमार से मिलवाया (''उन दिनों हम सभी रोज आने-जाने वाले मुसाफिर हुआ करते थे''). दिलीप कुमार को मराठी लहजे में ढली उनकी हिंदी मजेदार लगती थी और तब तक उन्हें तंग करते रहे जब तक ''मेरे कान शर्म से झनझनाने न लगे''. तीन दशक बाद खुद दिलीप कुमार ने यह घटना याद करते हुए कहा था कि अब हिंदी और उर्दू के हरेक लफ्ज का लता का उच्चारण सुनकर खुद उनके कान झनझनाने लगते हैं.

फिल्म निर्देशक बासु भट्टाचार्य कहते थे, ''लता मंगेशकर की कहानी जबरदस्त

फोटो सौजन्यः चांद ख़ां

उस्ताद हुसैन बख्श
(पाकिस्तान)

मेहमान का पन्ना

''खां साब ! आपकी तारीफ सुनते-सुनते मेरे कान पक गए''

मैं पहली बार अपनी जवानी के दिनों में मुंबई गया था. यंग था उस समय. भारत में रागदारी के लिए जो मोहब्बत है, मुझे मालूम थी. भारत की एक महीन आवाज वाली गजल गायिका हैं—मधुरानी, उन्होंने रेडियो से मेरा गाना सुन रखा था. उनका टेलीफोन आया कि वे मिलना चाहती हैं. मैं उनसे मिला. उन्होंने मेरी महफिल रखवाई. उनके ही कहने पर मैं कुछ समय रुक गया. सिलसिला ऐसा बढ़ा कि अगले कुछ महीने मुझे भारत की मेहमाननवाजी का आनंद लेना पड़ा. भारत में मेरे गाने का दौर भी साथ-साथ चल रहा था. दिल्ली-मुंबई में प्राइवेट महफिलें हो रही थीं और मेरा नाम होने लगा था. बात धीरे- धीरे लता जी तक गई. एक दिन टेलीफोन की घंटी बजी. दूसरी तरफ से बड़ी सुरीली आवाज सुनाई दीः ''खां साब नमस्कार. मैं लता मंगेशकर बोल रही हूं.''

मुझे तो उम्मीद ही नहीं थी. मैं एक सेकंड खामोश हो गया, फिर कहा, ''हुकुम करिए, कैसे याद किया?'' खुदा की कसम. जो कह रहा हूं, उसका एक-एक कतरा खरा है. लोग यकीन करें या न करें. लेकिन यह बात सच है, लता जी का कहना था कि ''मेरे कान पक गए हैं आपकी तारीफ सुनते-सुनते. मुझे आप अपना गाना कब सुना रहे हैं?'' मैं हैरान रह गया! मैंने कहा, ''मैं इस काबिल तो नहीं हूं, लेकिन हां, आप कह रही हैं तो आपके सामने हाजिरी भर दूंगा. आप हुकुम करिये कब?'' तो इस तरह से मेरा कार्यक्रम यश चोपड़ा के घर रखा गया. तमाम दिग्गज बैठे थे. नौशाद साहब, दिलीप साहब, लताजी सबसे आगे बैठी हुई थीं. मैं आपको क्या बताऊं, ये ऐसे लोग थे जिनके सामने ''आ'' करना भी मुश्किल. मेरी उम्र उस समय 28 साल के करीब थीं.

संगीतकार मदन मोहन की बेटी की शादी के मौके पर हुसैन बख्श और (बाएं) लता मंगेशकर

मैं स्टुडेंट की तरह सिमटा हुआ बैठा था. यश चोपड़ा का मैसेज आया कि ''लता जी के पास सिर्फ आधे घंटे का समय है. जो कुछ गाना है, अपने हिसाब से तय कर लें.'' मैंने कहा, आज तो इज्जत उसके हाथ में है. और सोच-समझकर उस्तादों वाला काम शुरू किया. सबसे पहले राग-रागेश्वरी गाया, जो लगभग ढाई घंटे चला. लता जी सुनती गईं. उसके बाद ठुमरी, फिर गजल का दौर चला. मैं काफी भी गाता हूं, ऐसा लता जी ने सुन रखा था. अब उनकी तरफ से ''काफी'' सुनाने की फरमाइश ही आ गई. देखिए, इज्जत ऊपरवाला रखता है, सिलसिला ऐसा जमा कि सुबह करीब सात बजे तक महफिल चली. यश चोपड़ा भी हैरत में! उन्होंने लता जी से पूछा कि वे तो जल्दी निकलने वाली थीं? तो लता जी ने जवाब दिया, ''क्या करूं, खां साब का गाना ही ऐसा चल रहा था.''

कई बार ऊपर वाला हमारी लाज रख लेता है. उस दिन वैसा ही हुआ. उसके बाद जब तक मैं इंडिया में था, लता जी से लगातार मुलाकात और बात होती रही. मुंबई में ही एक बार मैं बीमार पड़ा. उन्हें कहीं से इस बात की जानकारी हो गई. आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि उन्होंने तत्काल अपना पर्सनल डॉक्टर मेरे पास भेजा ताकि मेरा बेहतर इलाज हो सके. कुछ समय के बाद ईद थी. ईद में भी मैं इत्तेफाकन इंडिया में था. उनको पता था. उन्होंने संदेसा भिजवाया. मैं घर गया. उन्होंने खाने का इंतजाम रखा था और बाकायदा मेरे लिए सिवइयां बनवाई थीं. मुझे अपने हाथों से सिवईं खिलाई. उन्हें हांडी गोश्त पसंद था. एक बार मैं उनके लिए कद्दू गोश्त पकाकर ले गया था. उन्होंने बड़े शौक से खाया.

मैं क्या-क्या बताऊं उनके बारे में. वे खुश रहने और हंसने-हंसाने वाली महिला थीं. उन्हें लतीफे बड़े पसंद थे. एक बार उनके घर पर हम ऐसे ही बैठे हुए थे. गाना-बजाना हो जाने के बाद लतीफों का दौर चला. एक लतीफा वे सुनातीं और एक मैं. हम यही कोई दो घंटे तक एक-दूसरे को हंसाते रहे.

लता जी जैसी आवाज ऊपर वाला सदियों में एकाध बनाता है. लता जी से पहले कोई हुआ और न लता जी के बाद कोई होगा. जमीन और आसमान दोनों उन्हें सलाम करते थे. जितनी नायाब फनकार उतनी पवित्र इनसान. सुर खुद उनसे कहता था, ''मुझे लगाओ!''

(करीब 80 की उम्र के हुसैन बख्श पाकिस्तान के मशहूर शास्त्रीय गायक हैं. आलेख राजेश गनोदवाले से बातचीत के आधार पर)

नारीवादी पटकथा की तरह है.'' इसमें वाकई नारीवादी कथानक के सभी तत्व हैं, पुरुष दबदबे वाले समाज में अकेली महिला की पहचान की खोज, अंतत: उसकी जीत और किस्मत का नाटकीय मोड़. गुजरे दिनों के एक बेहद अहम संगीत निर्देशक ने निष्पक्ष ढंग से पूरे मामले का विश्लेषण किया. उन्होंने कहा: ''हममें से कुछ ने लता को अपनी और केवल अपनी जायदाद की तरह बरता. हमने उन पर हावी होने, उन्हें अपनी छाया में रखने और उन्हें धमकाने की कोशिश की. हो सकता है जब वे हमारे साथ हमारे ही ढंग से व्यवहार करने लगी हों, तो हम परेशान हो गए हों.''

उनमें से कुछ तो जाहिरा तौर पर महज ''परेशान'' ही नहीं हुए, बल्कि बुरी तरह चिढ़ गए. एक दशक लता के ''करीबी दोस्त'' रहे रामचंद्र ने ''निरंकुश, बेरहम और खोखली '' करार देते हुए उन्हें ''ईष्यालु औरत–जो किसी भी दूसरे गायक को बर्दाश्त नहीं कर सकती; कलाकार के बजाए कारोबारी औरत.'' तक कह दिया.

प्रतिद्वंद्वी: उनके ज्यादातर आलोचक उनकी शख्सियत से इस कदर अवाक् और भयभीत थे कि उस तरह खुलकर उनके खिलाफ बोलना नहीं चाहते थे जिस तरह रामचंद्र बोले. वे गुमनामी के सुरक्षित किले से अपनी बरछियां चलाते थे. उनके खिलाफ मुख्य आरोप अलबत्ता यह था कि वे प्रतिस्पर्धा को लेकर चौकन्नी थीं और अपनी प्रतिद्वंद्वियों को इंडस्ट्री से बाहर धकेल देने में कोई कसर नहीं छोड़ती थीं. एक इंटरव्यू में उन्होंने एक बार कहा था,''आती हुई ताकत को कोई रोक नहीं सकता.'' मगर उनकी प्रतिद्वंद्वियों–वाणी जयराम, रूना लैला, सुलक्षणा पंडित, प्रीति सागर और हेमलता– की नाकामी की आधा दर्जन कहानियों में उनका अदृश्य हाथ माना जाता था.

जयराम तमिलनाडु की थीं और वे अपने मूल राज्य लौटकर शीर्ष गायिका बन गईं. उनके अलावा लता की ''शिकार'' कोई भी अन्य गायिका इतनी बहादुर नहीं थी कि उनके खिलाफ खुलकर आरोप लगाती. मगर ''ऑफ–रिकॉर्ड'' बातचीत में एक कार्यप्रणाली की तरफ इशारा किया जाता था. उनमें से एक ने कहा: ''वे अक्सर गायिका की संगीत निर्देशकों से सिफारिश करके उसे बढ़ावा देतीं और फिर तत्काल ही यह बात सार्वजनिक कर देतीं ताकि बाद में कोई उन्हें असहिष्णु होने का दोषी न ठहरा सके. उसके बाद वे मुश्कें कसना शुरू करतीं. 'आहत करने वाले' संगीत

पंडित विश्वमोहन भट्ट

मेहमान का पन्ना

''आप कितनी बड़ी हैं, ये हमें मालूम है''

मैं लता जी के संदर्भ में अपने जीवन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना का जिक्र जरूर करना चाहूंगा. मुझे यह कहते हुए सचमुच बहुत अच्छा लगता है कि मैं उन लोगों में हूं जिन्हें लता मंगेशकर का आशीर्वाद मिला था. उनका हाथ मेरे सिर पर आया था जब उन्होंने एक संगीत कंपनी शुरू की थी. इसका नाम एलएमएम अर्थात् लता मंगेशकर म्यूजिक था. इस कंपनी के आरंभ के अवसर पर एक भव्य समारोह हुआ था. इस समारोह में पंडित जसराज, अमिताभ बच्चन, नीता अंबानी सहित फिल्म, संगीत और उद्योग जगत की कई बड़ी हस्तियां उपस्थित थीं. इस समारोह में मेरा संगीत कार्यक्रम रखा गया था, दीपक पंडित के साथ. इसी आयोजन में मैं जीवन में पहली बार उनसे मिल रहा था. मैंने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया. मुझे ऐसा करता देख वे बोलीं कि मैं इतनी बड़ी नहीं हूं. मैंने कहा कि ''आप कितनी बड़ी हैं, यह हमें मालूम है. आप हमारे लिए साक्षात देवी का अवतार हैं. साक्षात सरस्वती के आज दर्शन हो गए मुझे.'' उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया. मेरा कार्यक्रम समाप्त होने के बाद उन्होंने मेरी प्रशंसा की, मेरे सुरीलेपन की प्रशंसा की. उनकी संगीत कंपनी के समारोह के लिए मेरा कार्यक्रम किसने तय किया था, मुझे नहीं मालूम लेकिन निश्चय ही इसमें उनकी सहमति रही होगी. उनकी संगीत कंपनी के लिए मेरा कार्यक्रम रखा जाना और उनकी उपस्थिति में कार्यक्रम होना मेरे लिए अविस्मरणीय अवसर था. वह दिन मेरे जीवन का बहुत ही यादगार दिन था. दुर्भाग्य से उसके बाद फिर मेरी उनसे भेंट नहीं हो सकी.

जब मैंने *बवंडर* फिल्म का संगीत निर्देशन किया तो मन में बड़ी इच्छा थी कि काश! इसके लिए लता जी से गाने का निवेदन कर पाता पर बजट कम होने की वजह से वह संभव न हो सका

मैंने जब *बवंडर* (निर्देशक: जग मूंदड़ा; सन् 2000) फिल्म के लिए संगीत निर्देशन किया तो मन में इच्छा थी कि काश! इसके लिए लता जी से गाने का निवेदन कर पाता! लेकिन हमारी फिल्म का बजट बहुत कम था, इसलिए ऐसा कर पाना संभव नहीं हो सका. उनका निधन भारतीय संगीत को उदास करने वाला है. शायद ही कोई ऐसा भारतीय होगा जो उनके प्रभाव से अछूता होगा. वे अमर हैं. उनके गीत हमारे दिलों में हमेशा गूंजते रहेंगे. वैसे तो मुझे उनके ज्यादातर गीत पसंद हैं लेकिन कुछ गीत दिल के बहुत करीब हैं. इन गीतों में *लग जा गले, रहें न रहें हम., अगर मुझसे मोहब्बत है, माई री मैं कासे कहूं, मन मोहना बड़े झूठे* जैसे गीत शामिल हैं. यही कहूंगा कि जैसा कि उनका एक गीत है *मेरी आवाज ही पहचान है*...उनकी आवाज ही उनकी पहचान है. यह पहचान कभी खत्म नहीं होगी.

*(लेखक मशहूर मोहन वीणा वादक हैं. आलेख **आलोक पराड़कर** से बातचीत पर आधारित)*

योगेन शाह

दो दिग्गज
लता मंगेशकर दिग्गज शास्त्रीय गायक दिवंगत पंडित जसराज के साथ

निर्देशक पाते कि लता के साथ उनकी तारीखें रद्द कर दी गई हैं. फिर उनके 'नजदीकी सूत्र' संदेश फैलाते कि कीमत चुकाकर ही उनके साथ शांति कायम की जा सकती है, कि उन्हें उस नई गायिका को 'निकालना' होगा.''

ऐसा बर्ताव साबित कर पाना मुश्किल था. मगर ऋषिकेश मुखर्जी की *गुड्डी* में *बोले रे पपीहरा* गाने से रातोंरात मशहूर हुईं जयराम ने अचानक पाया कि उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है. असल में उनका 'पाप' गुलजार की *मीरा* (संगीत: रवि शंकर) में गाने से कई गुना बढ़ गया. वह भी उस वक्त जब लता ने पहले तो हृदयनाथ को उसका संगीत निर्देशक बनाने के लिए जोर डाला और बात बनी नहीं तो फिल्म के लिए गाने का अनुबंध तोड़कर निकल गईं.

जयराम की मांग देखते ही देखते इतनी तेजी से काफूर हुई कि वे बोरिया-बिस्तर बांधकर चुपचाप और बेमुराद मद्रास (अब चेन्नै) लौट गईं. बाद में जयराम ने लता पर उन्हें फिल्मों से निकलवाने के लिए संगीत निर्देशकों को ''ब्लैकमेल करने'' का आरोप लगाया.

इस अग्निपरीक्षा से गुजरने वाली जयराम अकेली नहीं थीं. बांग्लादेश की गायिका रूना लैला को भी बंबई को अलविदा कहने के लिए मजबूर कर दिया गया. उनके निजी रिकॉर्ड *दमा दम मस्त कलंदर* ने जबरदस्त धूम मचाई थी. *घरौंदा* के उनके गानों को भी ऐसी ही कामयाबी मिली. इसके संगीत निर्देशक जयदेव उन्हें स्वीकार करने वाली अकेली हस्ती थे. मगर दूसरों ने उनके साथ इस तरह सुलूक किया मानो वे अछूत हों. बंबई में अफवाह फैल गई कि वे जासूस हैं. गाने के लिए उन्हें लेना देशद्रोह के बराबर माना जाने लगा. उन्हें भी उलटे पांव लौटना पड़ा. वे केन्या चली गईं.

जबरदस्त दबदबा: लता इस आरोप को झटक देती थीं (देखें इंटरव्यू) कि होनहार

> लता मंगेशकर की कहानी में नारीवादी कथानक के सभी तत्व हैं, पुरुष दबदबे वाले समाज में अकेली महिला की पहचान की खोज, आखिरकार उसकी जीत और बार-बार किस्मत का नाटकीय मोड़

गायिकाओं की ऊंची 'बाल मृत्यु दर' के लिए वाकई वे जिम्मेदार हैं. उन्होंने कहा था, ''बंबई में रूना के पहले सार्वजनिक प्रदर्शन में मैं मौजूद थी. यहां तक कि उनकी पहली रिकॉर्डिंग में भी मैं मौजूद थी.'' उनके आलोचक कहते हैं, ''उनका बचाव का तर्क यही है.''

इसमें कोई शक नहीं कि इंडस्ट्री में उनका इतना भारी दबदबा था कि अगर चाहें तो किसी भी दूसरे गायक का गला घोंट दें. और गायक ही क्यों? कुछ साल पहले उन्होंने *सत्यम् शिवम् सुंदरम्* के लिए गाने में मुश्किलें पैदा करके राज कपूर तक को नाकों चने चबवा दिए. लंबी तनातनी के बाद उन्होंने इस फिल्म के लिए गाया, लेकिन तभी जब कपूर हारकर रिकॉर्ड की रॉयल्टी का एक हिस्सा उन्हें देने के लिए राजी हो गए.

बी.आर. चोपड़ा अकेले बड़े निर्देशक थे जिन्होंने रॉयल्टी में हिस्सेदारी की लता की मांग नहीं मानी. चोपड़ा के करीबी सहयोगी ने *इंडिया टुडे* को बताया था: ''हमारा इरादा उनका निरादर करना नहीं है. लेकिन कारोबारी शर्तों पर हम सहमत नहीं हैं.''

संगीत और फिल्म निर्देशक अलबत्ता अकेले में उनकी 'सनक' के बारे में शिकायत करते थे. उनमें से एक ने बताया, ''अगर उनका मन नहीं हुआ, तो उनका ड्राइवर स्टुडियो को फोन करके कहेगा कि 'मैडम' नहीं आएंगी. 'सॉरी' तक नहीं.'' एक अन्य नामी फिल्मकार ने दबी जुबान बताया कि उनके अहं को ''लगातार सहलाना जरूरी होता है.''

आप लता को स्टुडियो में काम करते देखते तो कुछ अंदाजा मिल जाता. वे घड़ी के कांटे की तरह थीं, सीखने में कभी एक पाली से ज्यादा का वक्त नहीं लेती थीं. बस वहीं रिहर्सल करके गाना रिकॉर्ड करवा देतीं. यहां तक कि किशोर कुमार सरीखे प्रतिष्ठित गायक अक्सर हरेक रिकॉर्डिंग के लिए 10 बार रिहर्सल करते थे और कई रीटेक लेते. रफी भी कम वक्त में गाना पूरा नहीं कर पाते थे. यही नहीं, 70 लोगों के ऑर्केस्ट्रा के लिए एक पाली बचाने का मतलब 2,500 रुपए बचाना होता था, स्टुडियो के किराये की तो बात ही छोड़ दें.

तो वह क्या है जो इस अविश्वसनीय गायन मशीन को चलाता था? उत्तर: उनकी शैली, आवाज की रेंज और सुरीलापन. आवाज के सुरीलेपन को भले परिभाषित न किया जा सके, पर उसकी स्थिरता और धैर्य को आवाज

इंडिया टुडे

देश की भाषा में देश की धड़कन

INDIA TODAY GROUP

एआइएस कैडर नियमों पर केंद्र-राज्यों में ठनी
बिहार: बीसी की निगरानी से चिढ़े बांसलर
जगनमोहन रेड्डी: कर्ज लेकर पिला रहे घी
इंडिया टुडे
"मैं कभी हारा नहीं"
अखिलेश यादव की तगड़ी चुनौती और इस तथ्य के मद्देनजर कि आजादी के बाद उत्तर प्रदेश का कोई मुख्यमंत्री पांच साल पूरे कर सत्ता में नहीं लौटा, योगी आदित्यनाथ और भाजपा की क्या है रणनीति?

विशेषांक
इंडिया टुडे
देश का मिज़ाज सर्वेक्षण
भरोसा बढ़ा... लेकिन
छह महीने पहले के मुकाबले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता बढ़ी लेकिन आर्थिक मोर्चे पर चुनौतियां बरकरार. अगर आज हुए लोकसभा चुनाव तो किसको कितनी सीटें मिलेंगी?

सबसे भरोसेमंद स्रोतों से, सबसे सटीक जानकारी

सब्सक्राइब करें और पाएं 21% तक की छूट

अखिलेश यादव की तगड़ी चुनौती और इस तथ्य के मद्देनजर कि आजादी के बाद उत्तर प्रदेश का कोई मुख्यमंत्री पांच साल पूरे कर सत्ता में नहीं लौटा, योगी आदित्यनाथ और भाजपा की क्या है रणनीति?

छह महीने पहले के मुकाबले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता बढ़ी लेकिन आर्थिक मोर्चे पर चुनौतियां बरकरार. अगर आज हुए लोकसभा चुनाव तो किसको कितनी सीटें मिलेंगी?

हां! मैं इंडिया टुडे को सब्सक्राइब करना चाहता/चाहती हूँ

अपनी पसंद के सब्सक्रिप्शन को टिक करें और फॉर्म को इस पते पर भेज दें– **वी केअर, लिविंग मीडिया इंडिया लि. सी–9, सेक्टर–10, नोएडा 201302 (भारत)**

टिक करें	अवधि	कुल अंक	कवर प्राइस (₹)	ऑफर प्राइस (₹)	डिस्काउंट
☐	2 वर्ष	104	~~5200~~	4099	21%
☐	1 वर्ष	52	~~2600~~	2199	15%

कृपया फॉर्म को ब्लॉक लेटर में भरें

मैं चेक/डीडी जमा कर रहा/रही हूँ जिसकी संख्या.....है और इसे दिनांक..... को लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड के पक्ष में ..... (बैंक का नाम).....रुपये की धनराशि (दिल्ली से बाहर के चेक के लिए ₹ 50 रुपये अतिरिक्त जोड़ें, समान मूल्य के चेक मान्य नहीं होंगे) के लिए बनवाया गया है.

नाम..... पता.....

..... शहर..... राज्य..... पिन.....

मोबाइल..... ईमेल.....

सब्सक्राइब करने के लिए यहां स्कैन करें.

ऑफर के विषय में विशेष जानकारी के लिए निम्न माध्यमों से संपर्क भी कर सकते हैं

हमारे टॉल फ्री नंबर पर कॉल करें
18001800100 (0120) 2479900

ईमेल भेजें
wecare@intoday.com

लॉग ऑन करें
subscriptions.intoday.in/indiatoday-hindi

लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड इस ऑफर या इसके अंश को कभी भी समाप्त करने या आगे बढ़ाने का अधिकार सुरक्षित रखता है. अन्य नियम व शर्तों की जानकारी के लिए कृपया देखें-www.indiatoday.in

बातचीत

अलामी स्टॉक फोटो

''सिनेमा तो संगीत का बहाना है''

लता मंगेशकर ने 1981 में *इंडिया टुडे* के संवाददाता सुमित मित्रा से खास बातचीत की थी. यह बातचीत आज भी उतनी ही दिलचस्प लगती है

● आपके 10 सबसे अच्छे गाने कौन-से हैं?

मैं एकदम से तो याद नहीं कर सकती. फिर भी, कोशिश करती हूं. *महल* के 'आएगा आएगा' से शुरू करें. फिर *अनारकली* का 'ये जिंदगी उसी की है'; 'आजा रे परदेसी'; 'ऐ दिलरुबा'; 'कहीं दीप जले कहीं दिल'; 'लग जा गले'; कितने हुए?

● छह.

ठीक है. फिर 'नैना बरसे'; 'वो चुप रहें तो मेरे दिल के'; 'तुम न जाने'; 'जीवन डोर तुम्हीं संग बांधी'; 'बीती ना बिताए'...

● आपके पहले 10 हमें मिल गए, पर इनमें एक भी ऐसा दिखाई नहीं देता जो पिछले आठ सालों में गाया हो. क्यों?

ओह, वाकई? लेकिन कुछ नए गाने काफी अच्छे हैं.

● तो भी आपको याद नहीं. क्यों?

इसमें मेरी गलती नहीं है. आजकल फिल्मों में आप जो सुनते हैं... क्या आप उसे संगीत कहेंगे? और क्या ये फिल्में हैं? आंय, धांय, धूम, धड़ाक—और हो गई फिल्म. मुझे यह सब बिल्कुल समझ नहीं आता.

● फिर भी आप इन फिल्मों के लिए गाती हैं? आप कैसे कर लेती हैं?

आप सीधा उत्तर चाहते हैं? तो लीजिए. मैं खाली दिमाग लेकर स्टुडियो में दाखिल होती हूं, सफेद कागज की तरह खाली. मैं केवल सिचुएशन के बारे पूछती हूं. क्या यह लड़की जंगल में गा रही है? क्या वह खुश है? क्या वह उदास है? क्या वह अपने प्रेमी को छेड़ रही है? या क्या? फिर मैं गा देती हूं. ओके? ओके. मैं उतना ही खाली दिमाग लेकर चली आती हूं जितना वह शुरू में था. इसे आप पेशेवर हुनर कह सकते हैं, या प्रतिभा... या इसे कोई नाम दें. लेकिन मेरा जुड़ाव शून्य होता है.

● पहले कितना अलग था?

हर तरीके से अलग होता था. संगीत निर्देशक अलग होते थे. वह वक्त ही अलग था. श्रोता अलग होते थे. वे फिल्म में संगीत की उम्मीद करते थे, शोर-शराबे की नहीं. हर देश की फिल्मों की अपनी शैली है. हमारे देश में संगीत अच्छे सिनेमा का पारंपरिक हिस्सा रहा है.

● क्या आप संगीत से सजी-धजी फिल्मों के लौटने की उम्मीद करती हैं?

इसका लौटना तय है. शुरुआती संकेत तो हैं ही. धूम-धड़ाके का यह पागलपन टिक नहीं सकता.

● वह क्या है जो आपकी पीढ़ी के गायकों को मौजूदा गायकों से अलग करता है?

मैं विवाद पैदा करना नहीं चाहती.

● विवाद पैदा किए बिना क्या आप इस सवाल का जवाब दे सकती हैं?

हममें से हरेक... मुकेश भैया, रफी, आशा, मैं... हमने संघर्ष किया. आज हर कोई तुरत-फुरत शोहरत चाहता है. अब मुकेश तो गुजर गए, इन नौजवानों में छह ऐसे हैं जो मुकेश की ''तरह'' गाने पर अपनी ऊर्जा खर्च कर रहे हैं. और हरेक गायिका को लता की ''तरह'' गाना है.

● क्या ऐसा वक्त नहीं था जब आप नूरजहां की तरह गाती थीं?

मैं इसकी उम्मीद ही कर रही थी. नहीं, यह सच नहीं है. शुरुआती जिंदगी में मुझे हिंदी या उर्दू सीखने का मौका नहीं मिला. मेरे पिता के एक मराठी दोस्त थे, संगीतकार, जो मुझे नूरजहां को गौर से सुनने के लिए कहा करते थे, यह देखने के लिए कि उन्होंने 'बेकरार' या 'पैगाम' शब्द का उच्चारण कैसे किया है. मगर गायकी का मामला बिल्कुल अलग था.

● आपके पसंदीदा भारतीय गायक कौन-से हैं?

सहगल, के.एल. सहगल. मैं हमेशा अपनी उंगली में नवरत्न की अंगूठी पहनती हूं, जो सहगल की है, जो उनके बेटे ने मुझे दी थी. मैं उनसे कभी मिली नहीं. लेकिन मुझे लगता है वे पहले व्यक्ति थे जो गायन में अभिव्यक्ति लाए.

● क्या आप बता सकती हैं कि फिल्म संगीत आने वाले 10 सालों में किस रास्ते जाएगा?

नहीं. लेकिन यह निश्चित है कि संगीत भारतीय फिल्मों की सर्वोच्च खूबी बना रहेगा. भारत में सिनेमा तो संगीत का बहाना है.

आज तक

देश का नं. 1 हिंदी न्यूज़ ऐप

जुड़े रहिए हर खबर से,
कहीं भी, कभी भी

अभी डाउनलोड करें

aajtak.in/app

उपलब्ध है

मेरी आवाज ही पहचान है

लता मंगेशकर की आवाज ने एक विशिष्ट नारीसुलभ व्यक्तित्व को मूर्त रूप दिया जिसने भारतीय सिनेमा को विशेष पहचान दी

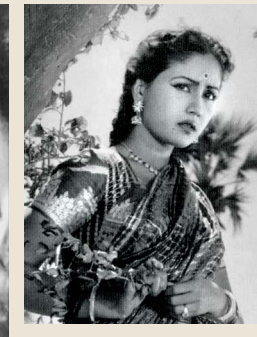

सबकी आवाज
अपनी युवावस्था में लता (ऊपर, एकदम दाएं), दाएं से क्रमशः वे अभिनेत्रियां जिनके लिए उन्होंने आवाज दीः मीना कुमारी, नूतन, निम्मी और मधुबाला

उनकी आवाज शुद्ध और पवित्र करने वाले पानी की तरह थी. इसने देह को पवित्र किया. इसीलिए जब आप लता मंगेशकर को उनकी विरासत की पूर्णता में देखते हैं, तो मन में जटिल भावनाएं उभरती हैं–ऐसी जटिलता जो उनकी आवाज में नहीं थी. लता जैसी गायिका संगीत की आलमारियों में नहीं रहतीं, ज्यादा जरूरी मसलों से निबटने के बाद जिसकी दिन के आखिर में सुध ली जाए. वे इतिहास के संपूर्ण समय की चौतरफा फैली उस तरन्नुम की तरह थीं जो भौतिक जगह को भर देती है. आलीशान दीवान के बगल में रखे रिकॉर्ड प्लेयर पर गोल घूमता तवा, धूल भरे निर्माण स्थल से पैदल लौटते प्रवासी मजदूर के कंधों पर झूलता ट्रांजिस्टर, कस्बे में मीठा बनारसी पान बेचने वाली नुक्कड़ की दुकान पर शाम की चहल-पहल, राजमार्ग के लंबे सफर पर अकेलेपन से घिरा ट्रक चालक, कान के पीछे फूल खोंसे ढलवां छत वाले मकानों में रेडिया सिलोन सुनते बहुत दूर के अंकल–वे हर जगह थीं. ऐसी सर्वव्यापी मौजूदगी की बारीकियों को आप कैसे समझते हैं?

शास्त्रीय और फिल्म संगीत के बीच फर्क को लेकर कलाकार और रसिक समान रूप से अक्सर अटक जाते हैं. अजीब बात है कि शास्त्रीय गायक फिल्मी गाने को बिरले ही अच्छे-से संभाल पाते हैं. क्या लता विपरीत दिशा में बह सकती थीं? शायद हां. स्वरोच्चारण के खालिस भौतिक पहलुओं के लिहाज से उनका नाता कोंकण तट के कलाकारों के महान वंशाणुओं से था–केसरबाई, मोगुबाई और उनकी बेटी किशोरी आमोणनकर (जो लता की लोकप्रियता जाहिरा तौर पर ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं). भिंडीबाजार घराने के उस्ताद अमान अली खां की थोड़े वक्त की शागिर्दी ने उन्हें पूर्ण किया.

उनका मालकौंस गाते 1950 का एक वीडियो है, जिसमें आप संगीत के इतिहास का एक काल्पनिक प्रश्न कि 'ऐसा होता तो क्या होता' देख सकते हैं–वे उड़ान भरती श्वेत छोटी-सी चिड़िया हैं, समय की मेहराबों का नक्शा खींचती, मानो हवा से ऊपर उठती. फिर आश्चर्य क्या कि उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने झुंझलाहट में, जैसा कि अक्सर बताया जाता है, उनकी सराहना करते हुए कहा था, ''कमबख्त, भूल से भी बेसुरा नहीं गाती''. फिल्मों में लता के गाने के तौर पर हम जो याद करते हैं, वह देहाती सुंदरी भी है जो उस अजनबी मुसाफिर पर भरोसा करती है जिसे वह अपना दिल दे बैठी है–उदात्त पीड़ा में निम्मी, अलौकिक मधुबाला, वक्त के हाथों थकान की झुर्रियां पड़ने से पहले वाली मीना कुमारी, खुले खेतों में कल्लोल करती नूतन, आतुरता से बारिश को निहारती माला सिन्हा–और बरसों बाद, जिंदगी के अतृप्त, उद्देश्यहीन बहाव को गाती, लता की प्रतिबिंब सुचित्रा सेन. इन स्त्रियों के ऊपर उनके सांगीतिक व्यक्तित्व का खाका बना था. अक्सर ये परित्यक्ताओं जैसी मासूम नायिकाएं हैं, जो कमजोर हैं और कौमार्य की निर्मलता के पहलुओं में फंसी हैं.

उद्योग ने इसे तेजी से समझ लिया और एक श्रम विभाजन किया, जिसमें आशा पर यौन रूप से कम संकोचशील भावों को बयां करने की जिम्मेदारी आ गई. जहां तक लता की बात है, उनकी गणिकाएं भी अंततः शुद्ध और पवित्र थीं–*मुगल-ए-आजम* का वह युगल गीत देखिए, जिसमें निरभ्र-निर्मल मधुबाला का मुकाबला कुटिल प्रतिद्वंद्वी से है जिसे शोख शमशाद बेगम ने स्वर दिया था.

लता की सर्वोपरि मौजूदगी एक दूसरे किस्म का एकाधिकार लाई–असल में यह एक-फसल थी, जिसने भारत के अनंत सुरों से भरे ब्रह्मांड को अपना उपनिवेश बना लिया. जो चीजें मंच से रुखसत हो गईं, वे थीं दूसरी आवाजों से बहुत अलहदा ठुमरी की आवाज, तवायफ के तजुर्बे के गाने, भारी आवाज वाली लोक गायिकाएं, धरती का खारापन. यह उनकी गलती नहीं थी, उन दिनों अपनी खाम-ख्यालियों को हम इसी तरह पसंद करते थे–वर्जित और कटी-छंटी, दोषरहित. यही वह असली एकाधिकार है जिससे हम संघर्ष करते हैं. इसलिए हम लता के साथ रहते हैं.

–सुनील मेनन

की ऊंचाई नापने वाले वीयू-मीटर पर देखा जा सकता था. फिल्म सेंटर के रिकॉर्डिंग स्टुडियो में एक साउंड रिकॉर्डिस्ट ने बताया: ''जब लता, फर्ज कीजिए, आवाज को एक सुर ए तक नीचे लाती हैं, तो वीयू-मीटर का कांटा 440 के चक्र पर चट्टान की तरह स्थिर रहता है. मैंने किसी भी दूसरे गायक के साथ ऐसा होते नहीं देखा. उनकी आवाज की रेंज भी चकराने वाली थी. सप्तक की ऊंचाई पर यह ठीक एफ पर पहुंच जाती है और निचले सप्तक पर ए जितने नीचे उतर आती है..''

हिंदी फिल्म संगीत में पॉप शैली के अगुआ, *शोले* के संगीतकार और आशा के पति राहुल देव बर्मन ने कहा था, ''अतीत में गायिकाओं के लिए आवाज में ढेरों कंपन के साथ गाना आम बात हुआ करती थी. उनमें से केवल कुछ ही, शायद अकेली शमशाद बेगम, इससे बच पाती थीं. मगर उनमें से हरेक सुरों में कंपन होने देती थीं. मगर वह शैली बदली और लंबे सुर लोकप्रिय हो गए. लता एक बार मर्दाना शैली पर चली गई थीं—कंपनरहित, झालररहित.'' आशा की आवाज में भी गजब का लोच है. मगर उनके पास लता जैसी रेंज नहीं है. उनकी दूसरी दिक्कत उनकी आवाज की लपलपाती कमनीयता है, अकाट्य सम्मोहकता, जो उन्हें केवल कैबरे और डिस्को गानों के खांचे में डाल देती है.

जद्दोजेहद: अलबत्ता बंबइया फिल्म उद्योग में संगीत पैकेजिंग योजना का अभिन्न हिस्सा है. 1975 तक फिल्म पोस्टरों पर संगीत निर्देशकों का नाम उतने ही बड़े अक्षरों में होता था जितने बड़े अक्षरों में निर्देशक का होता था. मगर पार्श्वगायकों की मोलभाव की ताकत तब बहुत निर्णायक नहीं होती थी, जब तक 1960 के दशक में लता की अगुआई में एक औरत की सेना ने जेहाद नहीं किया. हर गाने के लिए मेहनताना पांच अंकों की धनराशि तक बढ़ाने के लिए उन्होंने प्रोड्यूसरों से मोलभाव किया. बाद में रिकॉर्ड कंपनियों से विशाल रॉयल्टी का एक हिस्सा गायकों को दिलवाने के लिए प्रोड्यूसरों पर सामूहिक दबाव डाला. जीएसआइ की बंबई स्थित मुख्य इकाई के प्रमुख विजय किशोर दुबे स्वीकार करते हैं, ''यह गायकों की बड़ी जीत थी.''

अलबत्ता उन्होंने जो पैसा कमाया और जो हक और अधिकार हासिल किया, वह भारतीयों—यहां और विदेशों में—के बीच उनकी जबरदस्त लोकप्रियता के आगे फीका है. उन्हें *ऐ मेरे वतन के लोगो* गाते सुनकर जवाहरलाल नेहरू सार्वजनिक रूप से रो पड़े थे. ताज्जुब नहीं कि उन्हें पद्मभूषण, पद्म विभूषण और भारत रत्न समेत विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया.

उन्होंने विभिन्न भाषाओं में गाने रिकॉर्ड किए. दक्षिण में भी उन्हें स्वीकार किया गया है, जहां तिरुपति में उन्हें अष्ठाना संगीत विद्वांसुलु (मंदिर की राज संगीतकार) की उपाधि से नवाजा गया. उन्होंने नेपाली में एक गाना गाया, जिसके बोल राजा महेंद्र ने लिखे. असमिया में उनके गाने उतने ही दिल को छूते हैं जितने उनके भोजपुरी गाने या उनकी मूल भाषा मराठी में उनके गाने दिल के तार छेड़ देते हैं.

शोहरत का भार वजनदार सलीब की तरह होता है, हालांकि उन्होंने इसे असाधारण सहजता से धारण किया. इसने उनके इर्द-गिर्द एक घेरा बना दिया जो दिखाई नहीं देता था. राजमाता की तरह इसके भीतर बाकायदा विराजमान रहकर वे आधुनिक मीरा की सार्वजनिक छवि पर खरी उतरती थीं—सफेद साड़ी पहने अविवाहित महिला, जो हर हफ्ते, सफेद एंबेसेडर कार में, अपने हाथ में सफेद वैनिटी बैग झुलाती महालक्ष्मी मंदिर जाती थीं.

भिन्न छवि: विरले ही मौके होते थे जब वे इस छवि से कुछ बाहर आती थीं, मसलन जब वे विदेश दौरों पर जाती थीं. अस्सी के दशक

पीटीआइ

पंडितों की संगत
लता मंगेशकर के साथ पंडित कुमार बोस, साजन मिश्र, कौशिकी देशिकन और पंडित अजय चक्रवर्ती

यतींद्र मिश्र

मेहमान का पन्ना

''मैं भी इनसान हूं, मेरी भी अपनी तमाम तकलीफें हैं''

मेरे लिए जीवन की यह सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि लता जी के साथ एक लंबे अरसे तक करीब रोज ही बात होती थी. मुझे मालूम नहीं था कि साहित्य की दुनिया में आने का इतना बड़ा वरदान मेरे खाते में आएगा कि कभी लता जी मेरे लेखन का विषय बनेंगी. आज उनकी अनुपस्थिति में बहुत सारे ऐसे मंजर याद आते हैं, जिससे उनके विराट किरदार के बारे में सोचते हुए आश्चर्य होता है कि कभी वे सदेह हम सभी से मुखातिब थीं. आवाज का नूर क्या होता है, यह लता मंगेशकर को सुनते हुए जाना जा सकता है. आवाज की तासीर, उसकी सच्चाई और लगाव कितना पवित्र हो सकता है, यह लता मंगेशकर को पिछले तीस सालों से सुनते हुए मैंने पाया है. मेरी किताब के लिए उन्हें रेकॉर्ड करने के दौरान उन वर्षों में लता जी की उस शख्सियत के बारे में भी पता चला, जिसे शायद बिना उनके संपर्क में आए समझा ही नहीं जा सकता था.

कुछ ऐसी अधूरी और बातचीत के अंतरालों में बसी हुई बातें हैं, जिन्हें साझा करने का मन होता है. मैंने हमेशा यह पाया कि जैसे उनकी रूह को सुकून होने के बाद भी इस बात का हमेशा गम रहा कि उनके बाबा मास्टर दीनानाथ मंगेशकर उन्हें असमय छोड़कर चले गए. अपने संगीत, करियर, अनुभवों और संस्मरणों को सहेजते हुए वे हमेशा उदास हो जाती थीं और पिता को इस तरह याद करती थीं, लगता था जैसे उनके पिता हम दोनों की बातचीत के दौरान वहीं मौजूद हैं. एक बेचैनी, एक तड़प और ढेर सारा दर्द मैंने हमेशा महसूस किया, जब भी उनके गीतों की उत्कृष्ट अदायगी या सफलताओं पर बात की. वे कहती थीं–''देखिए, मुझे इस बात का मलाल है कि मैं अपने पिता की तरह नहीं बन पाई. उनकी तरह गा नहीं सकी. उनकी तरह धैर्य से बैठकर रागों की साधना करने से रह गई.'' मैं हैरान होता था कि यह उस पार्श्वगायिका के अंतःकरण का आईना है, जिसे साक्षात सरस्वती माना जाता है. उनसे यह पूछने पर कि आप तो फिल्म संगीत के शिखर पर हैं, मुझे उन्होंने बार-बार यह कहकर टोका–''यह ठीक है कि आप मुझे बहुत चाहते हैं, मेरा सम्मान करते हैं, लेकिन मुझसे पहले सहगल साहब, नूरजहां, अमीरबाई कर्नाटकी, जोहराबाई अंबालावाली, सुरैया, राजकुमारी और मुकेश भैया का नाम लीजिए.'' उन्होंने हमेशा इन लोगों को इतने सम्मान से याद किया कि मुझे भी इस बात को सीखने का सलीका हासिल हुआ कि अपने सीनियर्स को लेकर आपका क्या रुख होना चाहिए. वे बहुत सारी खूबियों को समेटे हुए एक ऐसी वत्सल भाव से भरी हुई महिला भी थीं, जिनके हृदय प्रदेश के दरवाजे की सांकल-कुंडी खटखटाने कम लोग ही पहुंच पाते रहे. मालूम नहीं उन्होंने अपने आत्मीयता के परिसर में दूसरों का दाखिला क्यों प्रतिबंधित कर रखा था?

उन्हें रिकॉर्ड करने के वे दिन सबसे कठिन होते जब भारत क्रिकेट का कोई मैच खेलता था... चार दिन बाद दिक्कत और बढ़ जाती जब भारत मैच हार जाता

जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझे कुछ ऐसे इशारे वहां से जरूर मिले, जिससे यह समझने में मदद मिली कि वे हमारे घर, पड़ोस में मौजूद उस बुजुर्ग महिला की तरह ही हैं, जो अपने नाती-पोतों से अटूट प्रेम करती है. वे फिल्मों के बारे में जवाब देते हुए घर की छोटी-छोटी बातों को तसल्ली से देखती थीं. आज घर में किसका जन्मदिन है, उनके मित्रों में कौन मिलने आया, दूसरे शहर से किस पारिवारिक मित्र ने कोई सौगात या मिठाई भेजी– सभी के ब्यौरे बड़ी आत्मीयता से बताती थीं.

मेरे लिए उन्हें रेकॉर्ड करने के वे दिन सबसे कठिन होते थे, जब भारत क्रिकेट का कोई मैच खेलता था. ''यतींद्र जी, अभी दो दिन रहने दीजिए. मैं क्रिकेट देखूंगी. चार दिन बाद बात करते हैं.'' चार दिन बाद तब दिक्कत बढ़ जाती थी, जब भारत दुर्भाग्य से कोई मैच हार जाता था. मेरे लिए मुसीबत कि अब लता दीदी का मन हफ्तों खिन्न रहने वाला है और बातचीत का सिलसिला कुछ दिन थमा रहेगा. जब कई दिनों के बाद उनका मूड ठीक होता था और बात फिर से शुरू होती, तब भी उनका अवसाद और उनके पसंदीदा खिलाड़ियों का आउट होना उन्हें दुखी किए रहता था.

लता जी की निश्छल हंसी, सबको आदर देने का भाव, संगीत को लेकर उनका जुनून, मित्रों और परिवार के लिए उनकी जिम्मेदारी और दुनिया में बढ़ते जा रहे वैमनस्य को लेकर उनकी चिंताएं मुझे बड़ी मानवीय लगती थीं. उनका यह कहना–''मैं भी इनसान हूं, मेरी भी तकलीफें हैं, मुझे भी पीड़ा होती है''–सुनकर यह भी एहसास जगता था कि भले ही कोई इंसान सफलता के शिखर पर क्यों न हों, उसकी समस्याएं एक आम व्यक्ति की तरह उसे भी प्रभावित करती हैं. मैं खुशकिस्मत था कि लता मंगेशकर जैसी नेकदिल इंसान के जीवन में मेरा प्रवेश संभव था. आज जब वे नहीं हैं, तो उनके किरदार की ढेरों शानदार बातें मन में कौंधती हैं और मन आदर से भर उठता है.

(यतींद्र मिश्र लता मंगेशकर पर चर्चित पुस्तक लताः सुर गाथा के लेखक हैं)

अंतिम सफर पर
मुंबई के शिवाजी पार्क में उनकी शवयात्रा

मंदार देवधर

के शुरू में वे साल में कम से कम चार महीने देश से बाहर रहती थीं. अमेरिका और यूरोप की उनकी अनगिनत ''सप्ताहांत यात्राएं'' इनमें शामिल नहीं हैं. वहां वे खुद को नियंत्रणों से मुक्त खुला छोड़ देती थीं. शिकागो में विवाहित दिल्ली की गृहिणी शांता आनंद ने बताया था, ''मैंने लास वेगास के कैसिनो में उन्हें भारी रकम हारते देखा है; न्यूयॉर्क के बॉम्बे रेस्तरां में मैंने उन्हें खाने का लुत्फ उठाते देखा है; मैंने उन्हें खुशमिजाज रंगों के छापों वाली साड़ी में फिफ्टी सेकंड स्ट्रीट पर ड्राइव करते देखा है. यह सब उनकी आम छवि से इतना अलग है, लेकिन मुझे अच्छा लगता है कि अमेरिका में वे अपनी सारी वर्जनाएं तोड़ देती हैं.''

लता मुश्किल से ही कभी इसके बारे में बात करती थीं क्योंकि यह उनकी मीरा की छवि के अनुरूप नहीं थी. वे हर जगह नाक घुसेड़ने वाले बंबइया फिल्म प्रेस को बालिश्त भर दूर रखती थीं. अपनी निजी छवि को लेकर वे इतनी संवेदनशील और सतर्क थीं कि सांसों पर नियंत्रण के लिए वे रोज जो योगाभ्यास करती थीं, लेकिन उसके भी फोटो नहीं लेने देतीं. अपने योगाभ्यासों की ही बदौलत वे सांस लेने के लिए ठहरे बगैर इतने लंबे समय तक सक्रिय रहीं.

उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया कि वे रोज डेढ़ घंटे अपने घर पर तुलसीदास शर्मा नाम के एक शख्स से शास्त्रीय संगीत के सबक सीखती थीं. उनके एक करीबी के मुताबिक, ''अगर आप कहें कि लता मंगेशकर को किसी से सीखना पड़ता है, तो हो सकता है लोग इसे गलत समझें.''

वे अनिवार्य तौर पर संकोची और एकांतप्रिय थीं—ग्लैमर की मिलनसार दुनिया में निपट अकेली. उनके अकेले टिकाऊ साथी राजस्थान के खूबसूरत राजकुमार और क्रिकेट कमेंटेटर राज सिंह डूंगरपुर थे, जो उनकी तारीखें तय करते, प्रोड्यूसरों के साथ उनके करारों को अंतिम रूप देते और विदेशी दौरों में भी उनके साथ रहते थे. अगर उनके संग-सोहबत की प्रेस में चर्चा होती, तो दोनों नाराज हो जाते. और यह लता मंगेशकर की अभेद्य हैसियत का ही संकेत है कि बंबई के पेशेवर कीचड़ उछालने वालों ने कभी इस रिश्ते का दोहन नहीं किया. यह 'अफवाह' बस फिल्मी कॉकटेल पार्टियों में उनका पीछा करती थी और रात बीतने और आवाजें धुंधली पड़ने के साथ दम तोड़ देती थी.

> अपनी निजी छवि को लेकर लता इतनी संवेदनशील थीं कि सांसों पर नियंत्रण के लिए वे रोज जो योगाभ्यास करती थीं, उसके भी फोटो नहीं लेने देती थीं

अलबत्ता उनकी मीरा की छवि, जो उन्हें इतनी अजीज थी, किसी बात से नहीं टूटी. न ही इस आरोप से कि वे बाजार पर अपना एकाधिकार स्थापित करने की कोशिश करती थीं. उनके लिए अलबत्ता इनकी तब तक वाकई कोई अहमियत नहीं थी जब तक वे भारतीय फिल्म संगीत की ''निर्विवाद और अपरिहार्य'' मलिका बनी हुई थीं. 1970 के दशक में ऐक्शन से भरपूर फिल्मों का दौर नया खतरा लाया. बंबइया फिल्मों में गानों की औसत संख्या 1960 के दशक के दर्जन भर से घटकर अस्सी के दशक में चार पर आ गई थी. सुरीलेपन की जगह इलेक्ट्रॉनिक शोर-शराबे ने ले ली. थाप के आगे गीत हार रहा था.

भारत के एक-महिला केंद्रित संगीत उद्योग के लिए आने वाले वक्त की यह डरावना पदचाप जैसा था. लेकिन फिर नब्बे के दशक और नई सदी में सुरीले गानों का दौर आया. उनके नए गाने भी उतने ही मकबूल हुए. तमाम आलोचनाओं और उत्सुकताओं के बहुत ऊपर सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर की सर्वोच्च सत्ता कायम रहेगी.

—साथ में **मोहम्मद वक़ास**

विधानसभा चुनाव 2022

पंजाब

सरकारों का

चार मजबूत धुरंधरों के बीच जोरदार बहुध्रुवीय चुनावी मुकाबला. कौन जीतेगा यह चुनाव—और पंजाब?

चार दलों की चुनावी जंग

(बाएं से) गढ़शंकर के पास एक रोड शो में आप के भगवंत मान; चमकौर साहिब विधानसभा क्षेत्र में मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी; सिसवां स्थित अपने फार्म हाउस में समर्थकों से मुलाकात करते पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह; शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल समर्थकों के साथ मंडी गोबिंदगढ़ में

मुकाबला

राज चेंगप्पा *और* **अनिलेश एस. महाजन** *पंजाब में*

सभी फोटोः बंदीप सिंह

बिसात पर ऊंचे दांव

साल 2017 में कांग्रेस ने पंजाब जीत लिया था. अब 2022 में क्या होने वाला है?

संत के दिन हैं और पंजाब की उपजाऊ सरजमीं गेहूं के हरे झिलमिलाते खेतों और सरसों के धधकते पीले फूलों के लहलहाते नजारे पेश कर रही है. मगर लोगों के लिए असंतोष की सर्दियां जारी हैं. यह फलता-फूलता सरहदी राज्य हाल के सालों में कर्ज के दलदल में धंसता गया, ज्यादातर नौजवान बेरोजगार और हताश हैं. राजनीति बंट गई है. भारत का अन्न भंडार, पंजाब- भारत का 20 फीसद गेहूं और 12 फीसद चावल उगाता है- कराह रहा है. अगर आधुनिक सघन खेती के बजाए बारी-बारी से गेहूं और चावल की फसलें उगाने के मौजूदा सिलसिले में आमूलचूल बदलाव नहीं होता, तो राज्य में खुशहाली लाने वाली खेती ही मौत का फंदा साबित हो सकती है. भूमिगत जल घटकर अत्यंत निचले स्तर तक चला गया है और उसके साथ फसलों की उत्पादकता और आमदनी का स्तर भी. राज्य अस्तित्व के गंभीर संकट की यंत्रणा झेल रहा है और अपनी जादुई ताकत फिर खोजने के लिए कसमसा रहा है.

पंजाब के 2.1 करोड़ मतदाताओं को 20 फरवरी को बहुत सावधानी से अपना भविष्य चुनना होगा. उनके सामने सवाल यह है—उन्हें इस खतरनाक दलदल से निकालने की अगुआई कौन करे? पहली बार उनके सामने चुनने के लिए तरह-तरह की पार्टियां और प्रतियोगी हैं. बीते दो दशकों में उन्होंने हुकूमत करने के लिए राज्य की 117 सदस्यीय विधानसभा में किसी एक या दूसरी पार्टी को निर्णायक जनादेश दिया है. मगर इस बार राजनैतिक पंडित भी उलझन में हैं. विकास अर्थशास्त्री और राजनैतिक विश्लेषक प्रमोद कुमार कहते हैं, ''ये असल में छोटे-छोटे 117 चुनाव हैं, हर निर्वाचन क्षेत्र अपने आप में एक चुनाव है. किसी दल के पास मुफ्त रेवड़ियां बांटने के अलावा कोई निश्चित कार्यक्रम या अलग विचारधारा दिखाई नहीं देती. वे खुद को अलग कहते हैं पर अलग दिखते नहीं. 50 साल में पहली बार मेरे लिए समझना मुश्किल हो रहा है कि पंजाब किस राह जा रहा है.'' पंजाब में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) तथा उसकी सहयोगी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच दोध्रुवीय मुकाबला हुआ करता था. फिर 2017 में आम आदमी पार्टी मैदान में आई. उस साल तिकोना मुकाबला हुआ, जिसमें पटियाला के नाममात्र के महाराजा कैप्टन अमरिंदर सिंह की अगुआई में कांग्रेस ने 77 सीटों के साथ जोरदार बहुमत हासिल किया. पांच साल बाद कांग्रेस बुरी तरह बंट गई है और अच्छी टक्कर दे पाने की जद्दोजहद कर रही है. कार्यकाल पूरा करने से महज पांच महीने पहले कटु और अप्रिय ढंग से हटाए जाने के बाद अपमानित अमरिंदर ने अपनी पार्टी पंजाब लोक कांग्रेस (पीएलसी) बनाई और चुनाव में उतरने के लिए उसी भाजपा के साथ गठबंधन किया, जिसका वे लंबे वक्त से विरोध करते आए थे. कांग्रेस ने छोटा-मोटा तख्तापलट करते हुए चरणजीत सिंह चन्नी को राज्य का पहला दलित मुख्यमंत्री बना दिया—पंजाब की आबादी में दलितों का अनुपात भारत में सबसे ज्यादा है और विभिन्न धर्मों में बिखरे एक-तिहाई वोट इसी जाति समुदाय के हैं. मगर पार्टी क्रिकेटर से राजनेता बने नवजोत सिंह सिद्धू की खुन्नस और असंतोष से दोचार है जो भाजपा छोड़ कांग्रेस में आए और महज नौ महीने पहले

विधानसभा रिकॉर्ड*

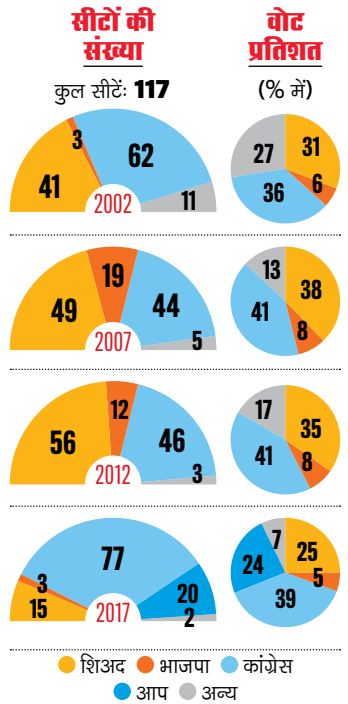

*शिअद और भाजपा गठबंधन के तौर पर लड़े

वोटबैंक

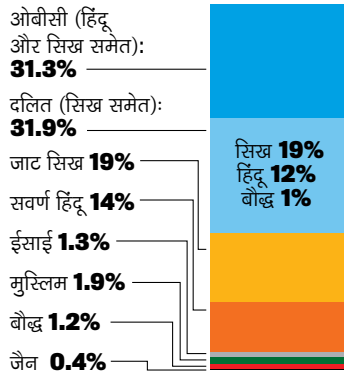

पूर्णांक करने के कारण आंकड़ों का योग हो सकता है 100% न हो

ग्राफिक: तन्मय चक्रवर्ती

समुदायवार वोट

● शिअद+भाजपा ● कांग्रेस ● आप ● अन्य

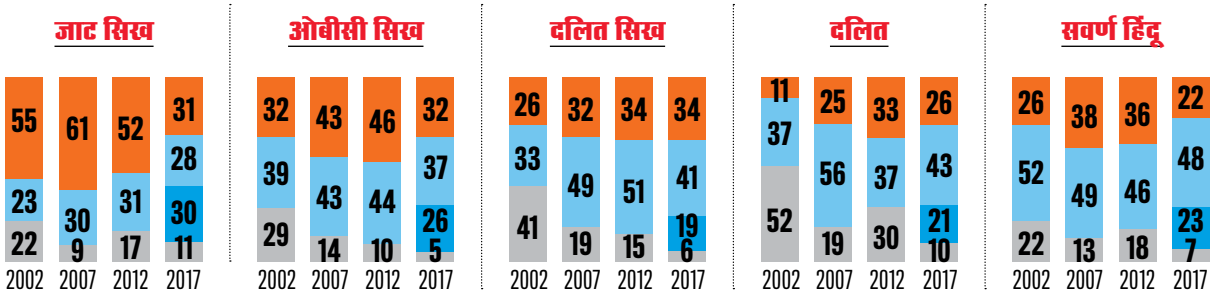

(आंकड़े प्रतिशत में)

जंग के आठ मैदान

अपर माझा
क्षेत्र : पठानकोट, गुरदासपुर, आधा अमृतसर
सीटें: 16
जनसांख्यिकी: आबादी में 56 प्रतिशत हिस्सेदारी हिंदुओं की है
मुद्दे: राष्ट्रीय सुरक्षा, ड्रग्स, पाकिस्तान से तस्करी

लोअर माझा
क्षेत्र : अमृतसर के सीमावर्ती इलाके, तरन तारन
सीटें: 9
जनसांख्यिकी: जाट सिखों और मजहबी सिखों का दबदबा
मुद्दे: पंथिक एजेंडा, बेअदबी की घटनाओं का मुद्दा और इवेंजेलिकल ईसाइयों की ओर से कराया जा रहा धर्मांतरण

दोआबा
क्षेत्र : जालंधर, कपूरथला, होशियारपुर, नवांशहर
सीटें: 20
जनसांख्यिकी: दलितों का दबदबा; डेरा सचखंड बल्लां के पास चाबी
मुद्दे: पंजाब की एनआरआइ बेल्ट; विदेशों में शिक्षा, माइग्रेशन, नौकरियां, धर्मांतरण

कंडी
क्षेत्र : होशियारपुर, नवांशहर और रोपड़ के हिस्से
सीटें: 6
जनसांख्यिकी: ब्राह्मणों, राजपूतों और गुर्जरों का वर्चस्व
मुद्दे: औद्योगीकरण और फसल विविधीकरण

हिंदी पंजाब
क्षेत्र : फजिल्का और फिरोजपुर का कुछ हिस्सा
सीटें: 7
जनसांख्यिकी: खेती में हिंदू, जाट और खत्रियों का दबदबा; क्षेत्र में राय सिख, कंबोज और ओबीसी का वर्चस्व
मुद्दे: राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता, स्वास्थ्य

कोर मालवा
क्षेत्र : बठिंडा, मानसा, मुक्तसर, मोगा
सीटें: 17
जनसांख्यिकी: शहरों में जाट सिख, बनियों का दबदबा और मजहबी सिखों का वर्चस्व; डेरा सच्चा सौदा का भी प्रभाव
मुद्दे: किसान आंदोलन के बाद उपजा आक्रोश, बेअदबी का मसला

फूलकियां रियासत
क्षेत्र : फूलकियां वंश की तत्कालीन रियासतें- पटियाला, नाभा, फरीदकोट, जींद के कुछ हिस्से, मलेरकोटला
सीट: 21
जनसांख्यिकी: शहरों में ब्राह्मणों, बनियों का दबदबा, गांवों में जाट और मजहबी सिखों का वर्चस्व
मुद्दे: किसान आंदोलन के बाद उपजा आक्रोश

पोआध
क्षेत्र : लुधियाना, फतेहगढ़ साहिब, मोहाली के हिस्से, नवांशहर और रोपड़
सीटें: 21
जनसांख्यिकी: ग्रामीण इलाकों में जाट सिख और शहरों में हिंदुओं का वर्चस्व
मुद्दे: औद्योगीकरण, श्रमिकों के मसले, फसल विविधीकरण

महत्वपूर्ण आंकड़े

कुल आबादी
3 करोड़

जीएसडीपी
6.44
लाख करोड़ रु.
वृद्धि दर **6%**
(राष्ट्रीय औसत)

प्रति व्यक्ति आय
1,15,882 रु.
जो कि कम है
₹1,16,067 रु.
प्रति व्यक्ति के राष्ट्रीय औसत से

जीडीपी में योगदान

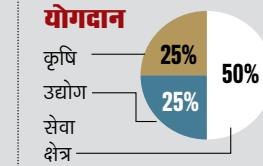

कर्ज
43.7%
जीएसडीपी का

राजकोषीय घाटा
3.9%
जीएसडीपी का

राजस्व
95,263
करोड़ रु. (अनुमानित)

व्यय
1.68
लाख करोड़ रु.

आर्थिक डेटा वित्त वर्ष 2021-22 के *स्रोतः सीएसडीएस, पंजाब सरकार का बजट दस्तावेज, भारतीय रिजर्व बैंक*

उसके अध्यक्ष बने.

मानो यही चक्कर में डालने के लिए काफी न हो, अब रद्द कर दिए गए केंद्रीय कृषि कानूनों की वजह से सुखबीर सिंह बादल की अगुआई वाले अकाली दल ने सितंबर 2020 में भाजपा से अपना पारंपरिक गठबंधन तोड़ दिया. उसकी बदौलत मिलने वाले वोटों के नुक्सान की भरपाई के लिए और चन्नी के दलित समर्थन में सेंध लगाने की गरज से उन्होंने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) से हाथ मिला लिया. उधर बदलाव का वादा करते हुए आप ने दो बार के लोकसभा सांसद भगवंत सिंह मान को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया, जिन्होंने अपनी मशहूर चुस्त और हाजिरजवाब टिप्पणियों से पार्टी के प्रचार अभियान को जगमगा दिया है. चुनावी कुंभ में पंजाब के किसानों का एक नया राजनैतिक संगठन भी आ गया है, जिसकी अगुआई बलबीर सिंह राजेवाल कर रहे हैं, जो मोदी सरकार को कृषि कानून वापस लेने के लिए सफलतापूर्वक मजबूर कर देने वाले किसान आंदोलन की अगली कतार में थे. व्यापक रूप से माना जा रहा है कि 22 किसान यूनियनों का यह संगठन संयुक्त समाज मोर्चा (एसएसएम) आप के वोट काटेगा जबकि प्राथमिक तौर पर इसकी जाट-सिख रंगत के कारण दलित और व्यापारी सवर्ण हिंदू विरोध में लामबंद होने लगे हैं. लगातार बदलते मंजर ने चुनाव को मनोरंजक बना दिया है पर इसके नतीजे राज्य और देश पर दूरगामी असर डालेंगे.

चन्नी: छुपा रुस्तम

राहुल गांधी ने जब 58 वर्षीय चन्नी को बताया कि उनका मुख्यमंत्री के रूप में राजतिलक किया जा रहा है, तो वे खुलकर रो पड़े. उस राज्य में जहां नेतृत्व जाट-सिखों का विशेषाधिकार रहा है, दलित चन्नी की नामजदगी को पहले कांग्रेस के मास्टरस्ट्रोक के रूप में देखा गया—इससे उसे अमरिंदर की अप्रिय ढंग से हुई विदाई से पैदा खटास का नुक्सान कम करने में मदद जो मिली. मामूली साधन-संपन्न तंबू मालिक के बेटे चन्नी 2012 में कांग्रेस में आए—विडंबना यह कि तब अमरिंदर ने कांग्रेस के बागी पर तरजीह देकर उन्हें चुना था. फिर 2017 में जब कांग्रेस सत्ता में आई तो उन्होंने ही उन्हें तकनीकी शिक्षा का कैबिनेट मंत्री भी बनाया. किस्मत इस तरह पलटी कि निजी खुन्नस और गहरे मायनों वाली हाजिरजवाबी के निशान छोड़ गई. अमरिंदर को लगता है कि चन्नी काबिल मंत्री थे पर उनके पास ''मुख्यमंत्री बनने की बैंडविड्थ नहीं है.'' अपने पूर्व बॉस के इस नीचा दिखाने वाले आकलन को चन्नी यह कहकर झटक देते हैं, ''मैं गरीब परिवार से हूं, वे अमीर परिवार से हैं. वे यह सच्चाई कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि गरीब आदमी का बेटा अब मुख्यमंत्री है?'' चन्नी मानते हैं कि भाजपा से हाथ मिलाकर अमरिंदर सत्ता विरोधी भावना का वह बोझ भी ले गए हैं, जो अन्यथा कांग्रेस को अपने कंधों पर ढोना पड़ता.

हालांकि शुरुआत में उन्हें सीधा-सादा कामचलाऊ मुख्यमंत्री माना गया, जिसे मुश्किल चुनाव से पहले अच्छा माहौल बनाने की मंशा का फायदा मिला. मगर नए मुख्यमंत्री अपने विरोधियों के अंदाज से कहीं ज्यादा चालाक साबित हुए. कमान संभालते ही उन्होंने खैरातों का पिटारा खोल दिया. बाकी चीजों के अलावा बिजली की दरें घटाईं और 50 लाख उपभोक्ताओं का बकाया माफ किया. फिर जिसे वे 'स्थापित माफिया' कहते हैं, उसे निशाने पर लेते हुए उन्होंने रेत की दरें करीब दो-तिहाई घटा दीं और सुखबीर बादल के साले बिक्रम सिंह मजीठिया के खिलाफ अवैध नशीले पदार्थों से जुड़े मामले में एफआइआर दर्ज कराई. इससे उनकी हैसियत बढ़ी. उन्होंने कार्यक्रमों में भांगड़ा करके, सड़क यात्राओं के दौरान राहगीरों से मिलकर और गपियाकर तथा जनता के लिए आम तौर पर सुलभ रहकर अपने को पंजाब के लोगों का और भी दुलारा बना लिया. यह अमरिंदर की एकांतप्रियता और कथित गुरूर के एकदम विपरीत था. अमरिंदर को लजीज खान-पान के लिए जाना जाता है, तो चन्नी आम आदमी का खाना, गर्म चाय के साथ पराठा और अचार, खाकर खुश हैं. वे पूरी कड़ाई से काम लेते हैं और उन्होंने सुबह तड़के जागकर देर रात तक

कांग्रेस

मुख्यमंत्री प्रत्याशी
चरणजीत सिंह चन्नी, 58 वर्ष
गठबंधन सहयोगी : कोई नहीं

ताकत

- पार्टी का मजबूत सांगठनिक ढांचा
- चन्नी की वजह से दलितों का समर्थन (जो कुल वोटों के 32 प्रतिशत हैं) मिला, वे पंजाब के पहले दलित मुख्यमंत्री हैं
- आतंकवाद से सख्ती से निपटने की वजह से पंजाबी हिंदुओं में पार्टी के लिए सद्भावना
- मुख्यमंत्री प्रत्याशी के रूप में चन्नी के चयन से इस मसले पर पार्टी के भीतर चल रही कलह खत्म हुई

चुनौतियां

- दलित को सीएम प्रत्याशी बनाने से जाट सिखों के समर्थन से हाथ धोना पड़ सकता है
- अमरिंदर के जाने के बाद पार्टी में खेमेबाजी बढ़ी
- दलबदल के भय से पार्टी कई मौजूदा विधायकों को टिकट देने के लिए मजबूर हुई
- पीसीसी प्रमुख नवजोत सिंह को विघ्नकर्ता के रूप में देखा जा रहा है

नए मुखिया, पुराना काम
चमकौर साहिब में कांग्रेस प्रत्याशी मुख्यमंत्री चरणजीत चन्नी

काम करने की मिसाल कायम की.

फिर पिछले हफ्ते चन्नी ने नेतृत्व की लड़ाई में सिद्धू को पटखनी दे दी, जब उन्हें आने वाले चुनाव के लिए मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया. उससे पहले कांग्रेस रणनीतिक तौर पर तटस्थ बनी रही और कह रही थी कि चुनाव चन्नी (दलित), सिद्धू (जाट सिख) और सुनील जाखड़ (हिंदू) की मजबूत तिकड़ी के सामूहिक नेतृत्व में लड़ा जाएगा. मगर सिद्धू अपने बयानों से चन्नी की अगुआई पर तंज कसते रहे, जिनमें उनका यह बयान भी था, ''ऊपर के लोग कमजोर मुख्यमंत्री चाहते हैं जो उनकी धुन पर...ता ता थैया करे. क्या आप ऐसा मुख्यमंत्री चाहते हैं?'' इसी मौके पर चन्नी ने स्पष्टता की मांग की. आप की तरफ से मान को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने से भी उन्हें मदद मिली. हाल ही में राहुल, सिद्धू और एआइसीसी के महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल के साथ एक ही कार में सफर करते हुए चन्नी ने यह बात छेड़ी. उन्होंने कहा कि दोनों में से एक को साफ तौर पर चुनना अच्छा होगा और वे पार्टी के चुने गए शख्स के लिए रास्ता छोड़ने को तैयार हैं. सिद्धू जाल में फंस गए और उन्होंने भी यही पेशकश कर डाली, इस यकीन के साथ कि दोनों में वे ज्यादा लोकप्रिय हैं. राहुल ने फिर आंतरिक चुनाव करवाया, पर उससे पहले दोनों नेताओं से वादा करवा लिया कि वे फैसला मानेंगे. पता चला कि लड़ाई का यह दौर चन्नी जीत गए और सिद्धू सन्नाटे में आ गए, जो विरले ही होता है. मगर बयानबाजी से वे चन्नी की चमक को नुक्सान पहुंचा चुके हैं.

स्पष्ट जनादेश के साथ चन्नी इसी से उबरने की कोशिश में लगे हैं. चंडीगढ़ से करीब घंटे भर की ड्राइव पर अपने निर्वाचन क्षेत्र चमकौर साहिब की यात्रा के दौरान चन्नी एक गांव में पानी की टंकी और नई बनी सड़क की तरफ इशारा करते हुए कहते हैं कि अपनी सत्ता के 111 दिनों में उन्होंने पूरे राज्य में तेजी से विकास किया है. उन्होंने कहा, ''आप केवल वादे करती है, हमने करके दिखा दिया. अगर लोगों ने मुझे पूरे पांच साल का कार्यकाल दिया तो मैं बहुत कुछ करके दिखा सकता हूं.'' एक गांव में लोग कांग्रेस का हाथ के निशान के झंडे लहराते हुए कहते हैं, ''साड्डा चन्नी, साड्डा सीएम (हमारा चन्नी, हमारा सीएम).'' तो भी कांग्रेस और चन्नी के सामने मुश्किल

हालांकि शुरुआत में उन्हें सीधा-सादा कामचलाऊ सीएम माना गया मगर नए सीएम चन्नी अपने विरोधियों के अंदाज से कहीं ज्यादा चालाक साबित हुए

काम है. सत्ता विरोधी भावना अब भी एक कारक है. चन्नी जिस रामदसिया पंथ से आते हैं, वह कुल 32 फीसद दलित वोटों के महज एक-चौथाई ही है. अन्य दलित बिरादरों का विश्वास हासिल करने के लिए चन्नी को कड़ी मेहनत करनी होगी. दूसरा पहलू यह है कि दलित एकता ताकतवर जाट सिखों को शायद रास न आए, क्योंकि वे अब भी उन्हें मालिक और गुलाम के पुराने रिश्ते के चश्मे से ही देखना चाहते हैं. लिहाजा वे अकाली दल के पीछे एकजुट हो सकते हैं. फिर चन्नी को पूरे मालवा इलाके के मूल बाशिंदे से कहीं ज्यादा दोआबा पट्टी के नेता के तौर पर देखा जाता है जबकि विधानसभा की अधिकतम सीटें (69) मालवा इलाके से आती हैं और ज्यादातर दलित यहीं रहते हैं. कांग्रेस ने चन्नी को मालवा में बरनाला जिले की भदौर सीट से चुनाव लड़ने की इजाजत दी ताकि दलितों के एक और तबके मजहबी सिखों /वाल्मीकियों के वोट बढ़ाए जा सकें, जो अक्सर रविदासिया पंथ के दबदबे का विरोध करता रहा है. एक और नकारात्मक कारक यह है कि आगे और बगावतों से सहमी कांग्रेस ने अपने ज्यादातर मौजूदा विधायकों को टिकट दे दिए, जिनमें काम न करने वाले भी कई हैं और इसकी कीमत उसे चुकानी पड़ सकती है. लेकिन अगर चन्नी कांग्रेस को जीत दिला पाते हैं, तो वे राष्ट्रीय नेता बन जाएंगे और कांशी राम के बाद ऐसा करने वाले पंजाब के दूसरे दलित होंगे.

मानः दूसरों से अलहदा नेता

व्यंगकार के साथ ऐसा होना विडंबना से कम नहीं जो मान के साथ हुआ—वे अपने राजनैतिक विरोधियों के लतीफों का निशाना बन गए हैं. दो प्रतिद्वंद्वियों पर एक ही पत्थर से वार करते हुए अमरिंदर ने मान को दूसरा सिद्धू करार दिया—''सिवाय इसके

कि वे अपनी कुर्सी पर बैठकर नहीं हंसाते बल्कि खड़े-खड़े चुटकुले सुनाते हैं.'' चन्नी कहते हैं कि मान मुख्यमंत्री की कुर्सी के लायक नहीं, क्योंकि सरकार चलाने और मंच संभालने में भारी फर्क है. यह पंजाब की बहुध्रुवीय लड़ाई का ही संकेत है कि वे भी मजाक का सहारा लेते हैं और मान की बखिया उधेड़ते हुए लगे हाथ अपने पूर्व बॉस पर भी तंज कस देते हैं! वे कहते हैं, ''कैप्टन साब 4 बजे दुकान बंद कर देते हैं और घर पर पार्टी शुरू हो जाती है. मान 6 बजे से ऐसा करते हैं—दो ही घंटे का तो फर्क है.'' सुखबीर ज्यादा सीधी चोट करते हैं, ''वे लगातार पीने वाले शख्स हैं और मैं उस दिन का सोच कर ही कांप उठता हूं जब राज्य की बागडोर उनके जैसे लोगों के हाथ में होगी.''

तंज और कटाक्षों के इस जलजले से 48 वर्षीय मान जरा नहीं डगमगाते. तुर्शी-ब-तुर्शी जवाब देते हुए वे कहते हैं, ''मैं व्यंगकार और सामाजिक आलोचक हूं, कॉमेडियन नहीं. लोगों के जनादेश का मजाक तो कैप्टन साब ने बनाया था. साढ़े चार साल उन्होंने महल के दरवाजे लोगों के लिए नहीं खोले.'' सुखबीर की बात को वे यह कहकर झटक देते हैं, ''लोग अब उन पर भरोसा नहीं करते. वे सांसद हैं पर संसद नहीं जाते. सात साल से इसी तरह की बातें कहकर वे मुझे ठिकाने लगाने की कोशिश करते आ रहे हैं.'' जहां तक चन्नी की बात है, वे उनकी बुनियादी ताकत पर चोट करते हुए कहते हैं, ''वे खुद को आम आदमी कहते हैं पर 110 करोड़ रुपए से ज्यादा की संपत्ति घोषित की. वे नकली आम आदमी हैं.'' आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने जब उन्हें मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किया, तो चन्नी की तरह मान भी रो पड़े थे.

यह फैसला उस संवेदनशील मुद्दे पर विपक्ष की आलोचना को भोथरा करने की गरज से लिया गया जिसने पिछली बार भी आप को नुक्सान पहुंचाया था कि अगर आप जीतती है तो केजरीवाल खुद पंजाब का मुख्यमंत्री बनने की राह तैयार कर रहे हैं. मान को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाने से सिख वोटरों को यह भरोसा मिलेगा कि पार्टी पर हिंदुओं का दबदबा नहीं होने जा रहा है. मगर इससे यह छींटाकशी नहीं रुकी कि मान तो केजरीवाल के रबड़ स्टांप भर होंगे और खुद केजरीवाल रिमोट से राज्य को चलाने का मंसूबा बना रहे हैं. शुरुआत में इस चर्चा को तब और विश्वसनीयता मिली जब पार्टी ने अपने चुनाव निशान झाड़ू और केजरीवाल की तस्वीर वाले

आम आदमी पार्टी

मुख्यमंत्री प्रत्याशी
भगवंत मान, 48 वर्ष
गठबंधन सहयोगी : कोई नहीं

ताकत

- पार्टी को शिअद और कांग्रेस के बेहतर विकल्प के तौर पर देखा जा रहा है
- सभी महिलाओं को हर महीने 1,000 रुपए देने सहित इसके चुनावी वादे बड़े आकर्षण का केंद्र हैं
- खासकर मालवा क्षेत्र में भगवंत मान लोकप्रिय हैं
- पार्टी दलितों और हिंदुओं का समर्थन हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है

चुनौतियां

- पार्टी की पूरे पंजाब में मौजूदगी नहीं, खासकर दोआबा और माझा क्षेत्रों में पार्टी कमजोर है
- मान का अस्थिर व्यवहार और उन पर अत्यधिक शराब पीने के आरोपों से उन्हें यश नहीं हासिल हुआ
- पार्टी के पास पूरे प्रदेश में सांगठनिक ढांचे का अभाव
- करीब आधे प्रत्याशी दूसरी पार्टियों से आए दलबदलू

जीत का जज्बा
आप के मुख्यमंत्री प्रत्याशी भगवंत मान बालाचौर के पास रोडशो के दौरान

जाना-पहचाना चेहरा
राजपुरा-पटियाला हाइवे पर शिअद प्रमुख सुखबीर सिंह बादल

झंडे बांटे, जिन पर 'एक मौका केजरीवाल नू (एक मौका केजरीवाल को)' नारा लिखा था. कठपुतली मात्र होने के आरोप का जवाब देते हुए मान कहते हैं, ''कैप्टन मुख्यमंत्री के नाते सोनिया गांधी से मिलने दिल्ली गए और उन्होंने मिलने से इनकार कर दिया. शर्म पंजाब को झेलनी पड़ी. चन्नी को देखिए... उन्हें जब देखो तब दिल्ली बुलाया जाता है. इसके विपरीत मैं बीते चार साल में शायद एक बार दिल्ली गया. खुद केजरीवाल पंजाब आते हैं.''

इसमें कोई शक नहीं कि मुकाबले में उतरी चारों बड़ी पार्टियों में अकेली आप ही है जो बदलाव की नुमांइदगी कर रही है—यह उसके अभियान की बार-बार दोहराई जाने वाली टेक भी है. उसकी तरंगों की कुछ गूंज जमीन पर भी सुनाई दे रही है—आप के सिर पर कोई बोझ नहीं है, अभी तक बेदाग पार्टी है और मौका मिले तो अपनी काबिलियत साबित करके दिखाएगी. यह एहसास सभी उम्र के लोगों में है. मान को मतदाताओं का समर्थन मिल रहा है, यह तब भी जाहिर हुआ जब उन्होंने वाहनों के लंबे काफिले के साथ रैली निकाली, जो आनंदपुर साहिब से शुरू हुई और दोआबा इलाके के बड़े शहरों और कस्बों से गुजरते हुए आगे बढ़ी. हर कस्बे और शहर में उत्साही कार्यकर्ता काफिले में शामिल होते गए और ऐसा उन्होंने पंजाब के परिचित अंदाज में किया—ट्रैक्टरों पर सवार, जिन पर डिस्को लाइटें चमक रही थीं और स्पीकरों पर भगत सिंह से जुड़े देशभक्ति के गाने जोर-शोर से बज रहे थे. आप के झंडे लहराती कारों और दोपहिया वाहनों की कतारें काफिले में जुड़ती गईं. एक एसयूवी के ऊपर खड़े मान हाथ लहरा रहे थे और अपनी तरफ उछाली गई फूलमालाएं स्वीकार कर रहे थे. भगत सिंह को जोड़कर अच्छा पुट दिया गया, क्योंकि मान अक्सर कहते रहे हैं कि वे इस स्वतंत्रता सेनानी से प्रेरित हैं और 2014 में लोकसभा में शपथ लेने से पहले उन्होंने उनकी तस्वीर के आगे खड़े होकर सौगंध ली थी. उनके सम्मान में अब वे प्रतीकस्वरूप बसंती रंग का साफा बांधते हैं. वसंत, सरसों के खेत... सारे रूपक उनके मुआफिक बैठते दिखाई दे रहे हैं.

तिस पर भी मान को जीतने के लिए जोशीले प्रतीकवाद से कहीं ज्यादा की जरूरत होगी. उन्हें अपने विजन को उन खैरातों से कहीं ज्यादा अर्थपूर्ण बनाना होगा जिनका वादा आप कर रही है. आप 2017 में चुनाव जीतती दिखाई दे रही थी, पर फिर झूठी तारीफों के झांसे में आ गई. अंतत: उसे अच्छे-खासे 24 फीसद वोट मिले, पर सीटें महज 20 हाथ आईं. इस बार पार्टी दोहरी सावधानी बरत रही है. दिल्ली से आए कर्ताधर्ताओं का मान की गतिविधियों और इंटरव्यू पर पूरा नियंत्रण

शिरामणि अकाली दल

मुख्यमंत्री प्रत्याशी
सुखबीर सिंह बादल, 59 वर्ष
गठबंधन सहयोगी
बहुजन समाज पार्टी

ताकत

- मजबूत सांगठनिक ढांचा
- चुनाव प्रचार की शुरुआत काफी पहले की
- जाट सिखों का समर्थन मिलने का भरोसा
- बादल को एक विजन के साथ पंजाब का विकास करने वाले के रूप में देखा जाता है

चुनौतियां

- पार्टी अब भी बेअदबी जैसे भावुक मुद्दे और नशे के मसलों पर घिरी हुई है
- एक ही कुनबे—बादल परिवार—का पार्टी में दबदबा
- भाजपा से अलग होने के बाद हिंदू मतदाताओं की कुछ जातियों का समर्थन इसके साथ नहीं रहा
- बसपा से गठबंधन का कोई खास असर अभी दिखाई नहीं दे रहा है

अमरिंदर अपने साथ सत्ता विरोधी रुझानों का लबादा भी लाए हैं पर साथ ही वे कांग्रेस वोटों के विभाजन में भाजपा की मदद कर सकते हैं

है ताकि वैसी गड़बड़ी न हो जैसी 2017 में केजरीवाल कर बैठे थे, जब उन्हें खालिस्तानी कड़ियों से जुड़े लोगों को रिझाते देखा गया था. हिंदू मतदाताओं ने तब कांग्रेस के इर्द-गिर्द एकजुट होकर जीत उसकी झोली में डाल दी थी. मान बेरोजगारी पर जोर दे रहे हैं, पर रोजगार पैदा करने का असल एजेंडा साफ दिखाई नहीं देता. कुमार कहते हैं, ''नीली पगड़ी को आप की सफेद टोपी से बदलने भर से बदलाव नहीं आ सकता. यह पार्टी अब दूसरी पार्टियों की खुरचनों से भरी पड़ी है—बदला क्या है?'' यही वह प्रश्न है जिसका उत्तर मान और उनके साथियों को मतदान की तारीख 20 फरवरी से पहले देना होगा.

सुखबीरःसीएम यानी सीईओ

सुखबीर बादल आत्मविश्वास की मूरत हैं. कभी पंजाब की इस्पात नगरी रहे मंडी गोबिंदगढ़ की तरफ जाने वाले चार लेन के चकाचक स्टेट हाइवे पर तेज दौड़ती अपनी क्रीम रंग की टोयोटा लैंड क्रूजर की अगली सीट पर बैठे 59 वर्षीय सुखबीर गर्दन पीछे घुमाकर कहते हैं, ''जरा सड़कों की क्वालिटी देखिए—उन 10 साल में यह हमने किया जब हम सत्ता में थे. पंजाब को मेरे जैसे मजबूत, निर्णायक और जोशीले मुख्यमंत्री की जरूरत है—कॉमेडियनों की नहीं.'' अपने विशाल कारोबारी हितों को लेकर, जिनमें होटल, ट्रांसपोर्ट गाड़ियां और टीवी चैनल शामिल हैं, सुखबीर क्षमायाचना की मुद्रा में नहीं हैं और कहते हैं कि वे सीधे इन्हें नहीं चलाते, वे तो केवल प्रोमोटर हैं. वे कहते हैं, ''जो शख्स कामयाब कारोबार चलाता है, वह कामयाबी से राज्य भी चला सकता है. सीएम को राज्य का सीईओ होना चाहिए—उसके पास विजन होना चाहिए और उसे पता होना चाहिए कि लोगों से उस पर अमल कैसे करवाए.''

युवा बादल अपने बॉस खुद हैं और पहली बार विधानसभा चुनाव में शिअद पर उनका पूरा नियंत्रण है. वे पांच बार मुख्यमंत्री रह चुके और 94 बरस की उम्र में अब भी चुनाव लड़ रहे पिता प्रकाश सिंह बादल की छाया से उबर आए हैं. सुखबीर कहते हैं कि उनके पिता ने उन्हें जटिल समस्याओं को धैर्य से सुलझाना सिखाया, ''यह ऐसा अनुभव है जो आपको कहीं और नहीं मिल सकता.'' वंशवादी एकाधिकार में धंसती अकाली विरासत को लेकर की जा रही आलोचना को वे झटक देते हैं—उनकी पत्नी हरसिमरत कौर केंद्रीय मंत्री थीं, साले बिक्रम सिंह मजीठिया पार्टी के ताकतवर विधायक हैं. वे कहते हैं कि उन्होंने पार्टी का भरोसा जीतने और अपनी संगठन क्षमता साबित करने के लिए कड़ी मेहनत की. शिअद दशकों बाद ऐसा चुनाव लड़ रहा है जब सहयोगी दल के रूप में भाजपा साथ नहीं है—कृषि कानूनों से जुड़े होने की तोहमत से होने वाला नुक्सान कम से कम करने की गरज से पार्टी केंद्रीय मंत्रिमंडल से निकल आई थी. अमरिंदर मानते हैं कि केवल विरोध करके अकाली दल दोषमुक्त नहीं हो सकता और किसान अब भी उससे नाराज हैं. वे यह भी कहते हैं कि पवित्र सिख ग्रंथों के साथ बेअदबी और पंजाब के ड्रग माफिया सरीखे मुद्दे, जो 2017 में कांग्रेस के हाथों शिअद की हार के लिए कुछ हद तक जिम्मेदार थे, इस चुनाव में भी प्रासंगिक हैं.

जवाब में सुखबीर यह तथ्य सामने रखते हैं कि साढ़े चार साल सत्ता में रहने के बावजूद अमरिंदर कथित बेअदबी के पीछे कोई साजिश या मजीठिया के ड्रग तस्करी में शामिल होने के आरोप साबित करने में नाकाम रहे. वे भाजपा के साथ अमरिंदर की पीएलसी के गठबंधन के प्रति तिरस्कार जाहिर करते हुए कहते हैं, ''जीरो प्लस जीरो बराबर जीरो.'' भाजपा से शिअद के नाता तोड़ने का उन्हें कोई मलाल नहीं है. वे कहते हैं, ''2017 में हम 94 सीटों पर लड़े और भाजपा केवल 23 पर. हमारी 94 सीटों में करीब 60 पर उन्होंने हमें जीरो वोट का योगदान दिया.'' शिअद ने इस बार भाजपा के बजाए बसपा से हाथ मिलाया है—''मैंने मायावती को एक फोन किया और वे तैयार हो गईं''—और मानता है कि इसकी बदौलत उसे कुछ इलाकों में कम से कम 5,000 वोट और 'दोआबा में प्रति निर्वाचन क्षेत्र करीब 30,000 वोट' मिलेंगे. पंजाब में दलित सिखों में भी बसपा का काडर है, जिनमें से कई पंथिक झुकाव वाले हैं. अकालियों के साथ जाने को वे सिख एकजुटता के रूप में देखते हैं, जो उनके लिए हिंदुत्व-उन्मुख भाजपा के साथ सत्ता साझा करने के बजाए बेहतर विकल्प है. सुखबीर बीते छह महीनों में अकाली दल से छिटके ज्यादातर छोटे-छोटे धड़ों को भी वापस पार्टी के पाले में लाने में कामयाब रहे, जिनमें रणजीत सिंह ब्रह्मपुरा, रत्तन सिंह अजनाला

पंजाब लोक कांग्रेस

ताकत

- दल का भाजपा से गठबंधन जो कि इसे हिंदू मतदाताओं का समर्थन दिलाने में मददगार होगा
- उदार सिखों के बीच अमरिंदर सिंह काफी सम्मानित नेता हैं
- भाजपा से गठबंधन के चलते ये 'डबल इंजन सरकार' का कार्ड खेल सकते हैं
- भाजपा के विवादित कृषि कानून वापस लेने का भी फायदा पार्टी को संभव

व्यापक अनुभव
पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह चंडीगढ़ के पास सिसवां में अपने फार्महाउस पर

मुख्यमंत्री प्रत्याशी
अमरिंदर सिंह, 79 वर्ष
गठबंधन सहयोगी
भाजपा, शिअद (संयुक्त)

चुनौतियां

- भाजपा के कृषि सुधारों के प्रयासों के खिलाफ लोगों में बचा-खुचा गुस्सा
- अमरिंदर सिंह के खिलाफ सत्ता विरोधी रुझान का लबादा
- गठबंधन सहयोगी भाजपा की पहुंच का दायरा पूरे पंजाब में न होना
- टिकट वितरण और प्रचार अभियान शुरू करने में विलंब

और उजागर सिंह वडाली की अगुआई वाले धड़े भी हैं. वे प्रेम सिंह चंदूमाजरा, तोता सिंह और सिकंदर सिंह मलूका सरीखे पंथिक नेताओं को भी, उनके बेटों को या तो टिकट देकर या पार्टी संगठन में पद देकर, अपने साथ ले आए. इन कदमों से अपने पारंपरिक पंथिक वोटों पर शिअद की पकड़ मजबूत हुई है.

सुखबीर मानते हैं कि शिअद जीत सकता है, क्योंकि 'किसी भी दूसरी पार्टी के मुकाबले हमारा संगठन सबसे अच्छा है' और शिअद 'अकेली सच्ची पंजाबी पार्टी है.' केजरीवाल पर वे कहते हैं कि दिल्ली के मुख्यमंत्री फ्रेंचाइजी मॉडल थोपने की कोशिश कर रहे हैं, जो पंजाब के मुनासिब नहीं है. वे हितों के संभावित टकराव पर भी जोर देते हैं—केजरीवाल सतलज-यमुना लिंक नहर का पानी दिल्ली ले जाना चाहते हैं जिससे पंजाब का नुक्सान होगा. वे विकास को अगली पायदान पर ले जाने और कारोबार करना आसान बनाने का वादा करते हैं. शहरी सीटों पर उसके सामने आप और किसान यूनियनों के अलावा एक नया चैलेंजर है—भाजपा और उसके सहयोगी दल. उसे बेअसर करने के लिए सुखबीर हिंदुओं को रिझा रहे हैं—उन्होंने 35 हिंदू उम्मीदवारों को टिकट दिए. सुखबीर के फायदे की एक बात यह है कि उन्होंने टिकट बंटवारे के बाद प्रचार दूसरी पार्टियों के मुकाबले काफी पहले शुरू किया. अच्छे सीईओ की तरह बताया जाता है कि सुखबीर हर नतीजे के अनुरूप तैयारी कर रहे हैं और त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति में चुनाव बाद के सहयोगियों पर नजर रखना भी शामिल है.

अमरिंदर: आखिरी दांव

सियासत भी अजीब शै है. 1984 के बाद 14 साल तक अकाली सियासत से चक्कर लगाकर आए अमरिंदर कोई एकव्रत राजनैतिक नहीं रहे हैं, पर वे भी पिछले सितंबर में अपनी जिंदगी में आए मोड़ से हैरत में होंगे. पहले तो उन्हें मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा और फिर कांग्रेस पार्टी छोड़नी पड़ी. उनकी विदाई कड़वाहट भरी थी: चोटिल कैप्टन ने गांधी परिवार पर उन्हें धोखा देने और उन्हें फर्नीचर की तरह इस्तेमाल करने का आरोप लगाया था. महीनों बाद, चंडीगढ़ के बाहरी हिस्से में उनकी भव्य हवेली में, फव्वारों से आहिस्ते से उछलती बूंदों, एक स्विमिंग पूल और बाल्कनी में सूर्यास्त के साथ चुस्कियां लेने के लिए मेज पर पड़े अतीत के समय के चीते के मॉडल की मौजूदगी से एक शाही समां बंधता है, अमरिंदर कहते हैं, ''अब मुझे धोखे का एहसास नहीं होता, लेकिन वे लोग मुझे ठीक से समझ नहीं पाए, यह खलता है. उन्हें यह समझ नहीं आया कि देश को देने के लिए मेरे पास अब भी बहुत कुछ है और अगर मैं ऐसा कर सकता हूं तो मैं पीछे क्यों हटूं.'' आहत होने के इस भाव ने ही उन्हें 79 साल की उम्र में अपनी पार्टी पंजाब लोक कांग्रेस बनाने की ओर अग्रसर कर भाजपा से गठजोड़ करने को प्रेरित किया.

तो वे सीधे भाजपा में क्यों शामिल नहीं हुए? अमरिंदर जवाब देते हैं, ''मुझे लगा कि धर्मनिरपेक्षता मेरे परिवार की पृष्ठभूमि रही है और मैंने अमित शाह जी को कहा कि मैं आपके संघर्ष में साथ आना चाहता हूं लेकिन आपकी पार्टी में शामिल नहीं होऊंगा. उन्होंने यह बात मान ली और अगले दिन मुझे कॉल करके प्रधानमंत्री से बात करने को कहा. '' जल्दी ही अमरिंदर को पता चल गया कि नरेंद्र मोदी कितनी सुबह से काम करना शुरू कर देते हैं, जब सुबह के 6.30 बजे शाह के एक कॉल से उनकी नींद खुली जिन्होंने उनको बताया कि प्रधानमंत्री लाइन पर हैं और उनसे बात करना चाहते हैं. प्रधानमंत्री ने इस घटनाक्रम पर प्रसन्नता जाहिर की और इससे पीएलसी और भाजपा के बीच गठजोड़ की शुरुआत हुई. भाजपा ने उन्हें 37 सीटों का प्रस्ताव दिया और अमरिंदर मान गए क्योंकि, बकौल अमरिंदर, ''यह उम्मीदवारों की उपलब्धता पर आधारित था. हो सकता है मैं 10 और सीटें मांग लेता, लेकिन हम हैसियत से अधिक की मांग नहीं रखना चाहते थे.''

भाजपा ने जल्दी ही यह समझ लिया कि पीएलसी के लिए कामकाज कितना मुश्किल होने वाला है. भाजपा के एक पदाधिकारी ने टिप्पणी की, ''उनके लिए संगठन के लगभग सारे काम हमें ही करने थे और उनके उम्मीदवारों के लिए पैसे भी जुटाने पड़े. यह काम दो पार्टियां चलाने जैसा था.'' असल में अमरिंदर के पांच उम्मीदवारों ने लड़ने के लिए भाजपा का चुनाव चिन्ह चुना. इसके साथ, पार्टी 73 सीटों पर चुनाव लड़ रही है—पंजाब में यह उनकी सबसे अधिक सीट संख्या पर

लड़ा जाने वाला चुनाव है. पार्टी ने सुखदेव सिंह ढींढसा के शिअद (संयुक्त) के साथ भी गठजोड़ किया है और उन्हें 16 सीटें दी हैं. भाजपा की रणनीति है कि अमरिंदर और ढींढसा को पाले में लाने से उनके पास दो रसूखवाले जट सिख हैं जो उन्हें उस समुदाय में पहुंच बनाने में मददगार होंगे जबकि पार्टी खुद पंजाब में हिंदू वोटों को एकजुट करेगी, जो कि 38 फीसद हैं.

हिंदू पारंपरिक रूप से कांग्रेस को वोट देते रहे हैं क्योंकि उन्हें आतंकवाद के खिलाफ उसके कड़े रवैए की याद है. भाजपा समझ चुकी है कि अमरिंदर के साथ सत्ताविरोधी रुझान का बोझ भी आया है, लेकिन वे कांग्रेस में विभाजन कराने में भी मददगार हो सकते हैं. यह रणनीति कारगर होती दिखती है क्योंकि कांग्रेस अगले किसी विभाजन के डर से अपने अधिकतर विधायकों को टिकट दे रही है, भले ही उनका प्रदर्शन कैसा भी रहा हो. अमरिंदर ने भाजपा को सिख संस्थाओं तक पहुंच बनाने में भी मदद की है, जहां उदार सिख उपदेशक हैं और उनके साथ रिश्ता सहज बनाया है. मिसाल के तौर पर, दमदमी टकसाल के चीफ हरनाम सिंह धुम्मा ने सार्वजनिक बयान जारी करके 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह के दो साहिबजादों जोरावर सिंह और फतेह सिंह की शहादत की यादगारी में 'वीर बाल दिवस' घोषित करने के लिए प्रधानमंत्री की तारीफ की है. माना जाता है कि अमरिंदर इसके काफी निकट हैं. उधर, डेरा सच्चा सौदा के मुखिया राम रहीम सिंह फरलो पर रिहा हैं और भाजपा के नेता अमरिंदर सिंह के नेटवर्क के जरिए उनसे राजनैतिक समर्थन की कोशिश में लगे हैं—उनके पास गैर-अभिजात्य वर्ग का बड़ा समर्थक वर्ग मौजूद है. भाजपा के नेता और अमरिंदर का मानना है कि इस चुनाव में कमोबेश त्रिशंकु विधानसभा के नतीजे आएंगे. ऐसे में उनके पास दो विकल्प हैं: एक बार फिर से शिअद के साथ गठजोड़ बनाकर सरकार गठित करना या अगर कोई अनुकूल संख्या का परिणाम नहीं आता तो राष्ट्रपति शासन लगा देना.

उत्तर भारत में सर्दियों में खिचड़ी लोकप्रिय व्यंजन है. लेकिन, 2022 के वसंत में भी कई लोगों की प्लेट में खिचड़ी ही आने वाली है—पंजाब में चुनावी फिजा में मौजूदा स्थिति को देखकर यही लग रहा है. लेकिन जायकेदार विडंबना यह है कि हर दल को अपने पक्ष में मौका आता लग रहा है. आप, जिसका समर्थन सड़कों पर स्पष्ट दिखता है, उम्मीद लगाए बैठी है कि इस बार उनका दांव चल जाएगा. चन्नी की अगुआई में कांग्रेस भी सोच रही है कि सूबे के वोटर पहले दलित मुख्यमंत्री को दूसरा मौका देंगे. सुखबीर को लग रहा है कि पिता की सरकार में बरसों तक नायब रहने के बाद इस बार वे मुख्यमंत्री पद के हकदार हैं. अगर वे संख्या के मामले में थोड़ा पिछड़ जाते हैं तो वे भाजपा के साथ पींगे बढ़ा सकते हैं. और हो सकता है कि कांग्रेस से हाथ मिला लें. कुछ भी हो सकता है. जिस तरह महाराष्ट्र विकास अघाड़ी ने कदम बढ़ाए हैं, वैसा सियासत में हर समय संभव है. क्या सरदारों में असरदार होने की कहानी में मोड़ आएंगे? इस पटकथा में क्लाइमेक्स तो 10 मार्च को ही दिखेगा. ■

चरणजीत सिंह चन्नी

अमरिंदर सिंह

बातचीत

चुनाव और चार नजरिये

भगवंत मान

सुखबीर सिंह बादल

पंजाब के इस चुनाव में व्यस्त चार बड़े नेताओं ने प्रचार अभियान के दौरान ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर **राज चेंगप्पा** और सीनियर एडिटर **अनिलेश एस. महाजन** के साथ अलग-अलग एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में कुछ प्रमुख सवालों के जवाब दिए. अंश:

प्र. इस चुनाव के मुख्य मुद्दे क्या हैं?

चरणजीत चन्नी: मैं गरीब परिवार का हूं. मैं जानता हूं कि गरीब के लिए दाल-रोटी जुटाना कितना मुश्किल होता है. अगर सरकार आटा-दाल देती रहे तो वे गरीब बने रहेंगे. उन्हें अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की जरूरत है. यह मैं सुनिश्चित करूंगा. दो किस्म के समाज बन रहे हैं. एक वे जो सरकारी स्कूलों में जाते हैं और पंजाबी माध्यम में पढ़ते हैं. दूसरे वे जिन्हें निजी स्कूल सुलभ हैं और अंग्रेजी माध्यम में पढ़ते हैं. मेरा ध्यान अच्छी शिक्षा देने पर है. इसी तरह स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की जरूरत है. हमें कृषि आधारित उद्योगों की भी जरूरत है. गरीबी को जड़ से खत्म करने के लिए आपको युवाओं पर ध्यान देना होगा और उन्हें अच्छी शिक्षा देनी होगी. साथ ही, ऐसा ईकोसिस्टम बनाना होगा जिससे युवा स्टार्ट-अप लॉन्च कर पाएं. अगर वे ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, कुटीर उद्योग लगाना चाहें...तो सरकार को इसे आसान बनाना चाहिए.

भगवंत मान: बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है. यह हमारे राज्य की कई समस्याओं की जड़ है. यहां तक कि वे बेरोजगार भी जिनके पास एमएससी, एमबीबीएस या इंजीनियरिंग की डिग्रियां हैं, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया जाने की खातिर आइईएलटीएस (अंग्रेजी भाषा का टेस्ट) के लिए कतार में खड़े हो जाते हैं. यह प्रतिभा पलायन है. विदेश जाने वाले हर छात्र के साथ 25 लाख रुपए का पलायन होता है. कुछ साल बीतते-बीतते उनका परिवार भी चला जाता है. जो लोग आइईएलटीएस पास नहीं कर पाते या नहीं जा पाते, वे बुरी संगत या अवसाद में पड़ जाते हैं. कई को नशे की लत लग जाती है. हम चाहते हैं कि हमारे छात्रों को यहीं रोजगार मिले. मैंने कभी नहीं सुना कि कोई रोजगारशुदा नशा करता हो. लोगों को उनकी शैक्षणिक डिग्री और कौशल के मुताबिक नौकरी देना मुख्य मुद्दा है.

सुखबीर बादल: हमें पंजाब को अगले पड़ाव पर ले जाना होगा. लोग विकास और खुशहाली की उम्मीद लगाए हैं. इसे हासिल करने के लिए पंजाब को मजबूत, निर्णायक और जोशीले नेतृत्व की जरूरत है. हमें कॉमेडियन नहीं बल्कि ऐसे लोग चाहिए जिनके पास राज्य के निर्माण का एक विजन हो.

अमरिंदर सिंह: लोगों का ध्यान अपने पेट और नौकरियों पर है. सभी

पैसा चाहते हैं और किसान तो निश्चित रूप से ज्यादा चाहते हैं, उद्योगपति ज्यादा चाहते हैं. औद्योगिक और कृषि विकास दोनों ही जरूरी है और इसके लिए हमें नए विचार लेकर आना होगा. हमें नौकरियों के लिए प्रतिबद्धताएं जाहिर करनी होंगी—यह हमारा बड़ा मुद्दा होने जा रहा है.

प्र. लोग आपको वोट क्यों दें?

चन्नी: मैं लोगों को मेरी सरकार की तरफ से बिजली, पानी, पेट्रोल व डीजल और रेत की कीमतें कम करने के बारे में, साथ ही नए कारोबार शुरू करने में मदद के लिए लॉन्च की गई योजनाओं और महिलाओं तथा विद्यार्थियों को दी गई बसों में मुफ्त यात्रा (की सुविधा) के बारे में बता रहा हूं. 111 दिनों में इतना सारा काम करके मैं लोकप्रिय हो गया हूं. अगर मुझे काम करने के लिए पांच साल का कार्यकाल मिले तो कल्पना कीजिए मैं कितना कुछ कर सकता हूं. सत्ता विरोधी भावना अगर है, तो वह कैप्टन अमरिंदर सिंह के खिलाफ है, कांग्रेस के खिलाफ नहीं है. हम खुशकिस्मत हैं कि वे खुद ही कांग्रेस छोड़कर चले गए. कांग्रेस की परेशानी उन्हीं की वजह से थी. उन्हें अपने पाले में स्वीकार करके वह भावना भारतीय जनता पार्टी ने विरासत में ले ली है.

मान: मैं लोगों के बीच से हूं. मैं महल से नहीं हूं. लोगों के लिए मैं उनके बेटे या भतीजे की तरह हूं—उनका अपना. बादलों के महल में बड़ी-बड़ी दीवारें हैं; वहां एक पंछी तक बैठकर चहचहा नहीं सकता. मेरे विरोधी मुझे महज कॉमेडियन कहते हैं. वे गलत

"बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है और यह प्रतिभा पलायन की वजह है. हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी पंजाब में ही रोजगार पाएं"
भगवंत मान

हैं—मैं व्यंगकार हूं, सामाजिक आलोचक. मैं कैंसर से होने वाली मौतों, किसानों की मौतों या भ्रष्टाचार के बारे में बोलता हूं तो क्या ये सब मजाक है? इन राजनैतिक पार्टियों ने हमारे देश का मखौल उड़ाया है. हम पंजाब के लोगों को ईमानदार, पारदर्शी और नेकनीयत सरकार देंगे.

बादल: जब हम सत्ता में थे तो हमने विकास किया और इसी वजह से पंजाब का हर जिला अच्छी सड़कों से जुड़ा है. राज्य में सभी नए पावर प्लांट अकाली हुकूमत में बने. पंजाब को निर्णायक नेता चाहिए. मुख्यमंत्री राज्य के सीईओ की तरह होता है. तेज विकास के लिए लोग मुझ पर भरोसा कर सकते हैं. हमारी पार्टी अकेली पंजाबी पार्टी है—बाकी राष्ट्रीय पार्टियां हैं और पंजाब को उस तरह नहीं समझतीं जैसे हम समझते हैं. मसलन, अरविंद केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट को लिखा कि पंजाब के ताप बिजलीघर बंद कर दिए जाएं क्योंकि ये प्रदूषण पैदा करते हैं. राष्ट्रीय पार्टी का राज्य के साथ हमेशा हितों का टकराव होगा.

अमरिंदर: मेरे पास अनुभव है, जो मैं दे रहा हूं. मैं इस खेल में 50 साल से हूं और जानता हूं कि मेरे राज्य को क्या चाहिए. मैं हरेक को मुफ्त रेवड़ियां नहीं बांटूंगा जैसा चन्नी और दूसरे कर रहे हैं. यह बिल्कुल बकवास है क्योंकि इन खैरातों के लिए पैसा कहां से लाएंगे? मेरी सरकार ने जब कुछ दिया तो उसका एक उद्देश्य था, जैसे मुफ्त स्वास्थ्य बीमा. मैं औद्योगिक और कृषि विकास दोनों सुनिश्चित करूंगा.

प्र. राज्य के कृषि संकट का क्या समाधान आपके पास है?

चन्नी: हमें जैविक खेती की तरफ जाने की और पेस्टीसाइड तथा यूरिया से निजात पाने की जरूरत है. ये खामोश हत्यारे हैं. हमें जैविक फसलों के लिए अलग एमएसपी तय करने की जरूरत है. फिर सभी किसान जैविक खेती अपना लेंगे और हमारे देश की सेहत सुधरेगी. हमें धान से हटकर दूसरी फसलों की तरफ जाना होगा, क्योंकि पंजाब में भूमिगत जल चिंताजनक हद तक कम हो रहा है. हम पूरा पानी उलीचकर भावी पीढ़ियों के लिए बंजर जमीन छोड़ देंगे, तो वे जिंदा कैसे रहेंगे? स्थिति में सुधार के लिए हमें दलहन, मक्का वगैरह सरीखी फसलें उगाने की जरूरत है. इसके लिए सरकार को ज्यादा एमएसपी सुनिश्चित करने की जरूरत है.

मान: गुरु नानक साहब ने कहा था उत्तम खेती, मध्यम व्यापार, नीच नौकरी. उन्होंने खेती को सबसे अव्वल रखा था पर अब उलटा हो रहा है. खेती मुफीद नहीं रही. केंद्रीय कृषि कानून रद्द हो गए. यह लड़ाई हमने जीत ली. मगर किसान इन कानूनों के आने से पहले भी आत्महत्या करते रहे हैं. पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) योजना के केंद्र में होना चाहिए. हम इसे मजबूत करेंगे. हमारा इरादा हरेक गांव में जरूरी जानकारियां देने के लिए दो ग्रेजुएट भर्ती करके किसानों के बीच ज्यादा जागरूकता पैदा करने का है. इससे कम से कम 40,000 नौकरियां पैदा होंगी. दूसरी समस्या धान है. एक किलो धान उगाने के लिए 3,800 लीटर पानी की जरूरत पड़ती है. इसने पंजाब में पानी का संकट पैदा कर दिया है. हम मक्का, बाजरा, मोटा अनाज और दूसरी फसलें उगा सकते हैं. हमारी जमीन उपजाऊ है, पर हमारे यहां न तो मार्केटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर है और न ही निश्चित एमएसपी पर खरीद.

"सस्ती बिजली, पानी और ईंधन; कारोबार शुरू करने के लिए सहायता... 111 दिनों में बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की हैं"
चरणजीत चन्नी

हम सहकारी संस्थाएं बनाएंगे और उत्पादन लागत कम करेंगे.

बादल: किसानों को गारंटीशुदा बाजार और दाम मिलना चाहिए. जब तक केंद्र, फर्ज कीजिए, मक्का की खरीद पर एमएसपी की गारंटी नहीं देता, किसान दूसरी फसलें नहीं अपनाएंगे. उन्हें बड़े पैमाने पर एथेनॉल की इजाजत देनी चाहिए. इन कार्यक्रमों और योजनाओं में मददगार होने के लिए राज्यों के पास पर्याप्त वित्तीय शक्ति होनी चाहिए.

अमरिंदर: कृषि में पंजाब का मुख्य आधार धान है, जिसकी भारत को ज्यादा जरूरत नहीं रही, क्योंकि हमारे गोदाम भरे पड़े हैं. भारत हर साल 1.5 लाख करोड़ रुपए के दलहन आयात कर रहा है. इसमें से मुझे 25,000 करोड़ रुपए दे दो और मैं किसानों को धान छोड़कर दलहन अपनाने के लिए राजी कर लूंगा. हम धान को रास्ते से हटाएंगे और पानी भी बचाएंगे.

प्र. औद्योगिक विकास के लिए क्या करने की जरूरत है?

चन्नी: कृषि पैदावार पंजाब में चरम पर है. हम जो कर सकते थे, कर चुके हैं. अब हमें गियर बदलकर कृषि उद्योगों की तरफ जाने और औद्योगिकीकरण पर ध्यान देने की जरूरत है. हमें कुटीर से लेकर बड़े उद्योगों तक में नई जान फूंकने की जरूरत है. हमें केंद्र की सहायता चाहिए. हमारा राज्य सरहदी है. हमें प्रोत्साहन लाभों की जरूरत है और केंद्र को इस पर गौर करना चाहिए.

मान: व्यापारी राजनेताओं के लिए धन से भरे बोरे लेकर

"अकालियों ने पंजाब को अच्छी सड़कें, नए पावर प्लांट दिए. हमारी पार्टी अकेली पंजाबी पार्टी है जो मैदान में है"
सुखबीर बादल

घूम रहे हैं. वे सम्मान की वजह से ऐसा नहीं कर रहे हैं. व्यापारी विभिन्न दलों के राजनेताओं को खुश करने के लिए ऐसा कर रहे हैं और यह पक्का करने के लिए कि सत्ता में आने पर वे उनके पीछे न आएं. सरकारें लोगों को तंग करने के लिए नहीं बनाई जातीं. मगर इन दिनों व्यापारी अपनी कामयाबी को लेकर सशंकित हैं. मंडी गोबिंदगढ़ स्टील का केंद्र हुआ करता था. अब नहीं रहा. हम इसे बदलेंगे. हम राजस्थान, मध्य प्रदेश और दूसरे राज्यों से उद्योगों को रिझाकर लाएंगे.

बादल: हम प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर ध्यान देंगे. आइटी ऐसा ही क्षेत्र है, क्योंकि दक्षिण भारत में इसकी संभावनाएं खत्म हैं. आइटी फर्म उत्तर में आती हैं, तो हम उन्हें बेहतरीन जगहें, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, अच्छे होटल दे सकते हैं. पर्यटन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने की जरूरत है. हम खाद्य प्रसंस्करण विकसित करने के लिए दो या तीन बड़ी परियोजनाएं शुरू करेंगे. सत्ता में आने के एक साल के भीतर मैं कारोबार करने में आसानी की दिशा में कागजहीन सरकार सुनिश्चित करूंगा. आप प्रक्रिया को कागजहीन बना देते हैं, तो 99 फीसद भ्रष्टाचार और अड़चनें खत्म हो जाएंगी. औद्योगिक नीतियां अफसरशाहों को नहीं, उद्योगपतियों को बनानी चाहिए, क्योंकि इससे उन्हें जवाबदेह बनाया जा सकेगा.

अमरिंदर: मुख्य बात यह है कि हमें पैसा चाहिए और ऐसी नीतियां जो उद्योगों को पंजाब आने के लिए प्रोत्साहित करें.

प्र. अपने विरोधियों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

चन्नी: सुखबीर बादल घमंडी हैं और बाहुबल पर भरोसा करते हैं. उनके परिवार के सभी सदस्य राजनीति में हैं. वे अच्छे कारोबारी हैं. भगवंत मान चुनौती ही नहीं हैं. वे महज रबड़ स्टांप हैं. आप के पोस्टर तक

"मेरे पास अनुभव है, जो मैं दे रहा हूं. मैं इस खेल में 50 साल से हूं और जानता हूं कि मेरे राज्य को क्या चाहिए"
अमरिंदर सिंह

लोगों से केजरीवाल को मौका देने के लिए कह रहे हैं. कैप्टन साहिब को अपना चेहरा चुनकर भाजपा ने अपनी प्रतिष्ठा धूमिल कर ली है. उन्हें इस चुनाव में एक भी सीट नहीं मिलेगी.

मान: पंजाब में माफिया बादलों ने पैदा किया. अमरिंदर सिंह इसे एक कदम आगे ले गए. साफ है कि वे आपसी साठगांठ से काम करते हैं. कैप्टन साहिब ने जनादेश का मजाक बना दिया. चरणजीत चन्नी दावा करते हैं कि वे आम आदमी हैं, पर 110 करोड़ रुपए की संपत्ति घोषित की है. वे नकली आम आदमी हैं.

बादल: चरणजीत चन्नी तो कुछ हैं ही नहीं. वे न तो करिश्माई हैं और न उनकी पूरे राज्य में अपील है. सबसे ज्यादा भ्रष्ट वही हैं. चन्नी जिन दो सीटों से लड़ रहे हैं, दोनों हार सकते हैं. भाजपा के साथ कैप्टन साहिब का गठबंधन जीरो प्लस जीरो बराबर जीरो है. भगवंत मान के बारे में मैं उस दिन का सोचकर कांप जाता हूं जब उस जैसे लोग राज्य की अगुआई करने के लिए चुने जाएंगे. वह नशेड़ी के अलावा कुछ नहीं है.

अमरिंदर: इसमें कोई शक नहीं कि लोग बदलाव की जरूरत महसूस कर रहे हैं, पर बदलाव लाने के लिए आपको काबिल शख्स चाहिए. भगवंत मान राज्य को चलाने के काबिल नहीं हैं. बस बैठकर लतीफे सुनाने के अलावा उन्होंने कुछ नहीं किया. सुखबीर बादल के बारे में लोग बेअदबी का मुद्दा और नशे की समस्या भूले नहीं हैं. चरणजीत चन्नी की काबिलियत सीमित है. उसके पास मुख्यमंत्री होने लायक बैंडविड्थ नहीं है.■

यादव बेल्ट पर कौन करेगा राज?

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के सामने 'यादव-बेल्ट' में सपा का पुराना गौरव वापस लाने की चुनौती है, तो भाजपा के सामने है 2017 के विधानसभा चुनाव का प्रदर्शन दोहराने का कठिन लक्ष्य

आशीष मिश्र

मनीष अग्निहोत्री

इटावा जिले से मैनपुरी को जाने वाले हाइवे पर 25 किलोमीटर की दूरी पर समाजवादी पार्टी (सपा) के संस्थापक मुलायम सिंह यादव का पैतृक गांव सैफई पड़ता है. हाइवे पर पांच किलोमीटर आगे चलने पर सैफई की सीमा से सटे जैन इंटर कॉलेज, करहल से मैनपुरी जिले की करहल विधानसभा सीट की सीमा शुरू होती है. वर्ष 1955 में मुलायम ने जैन इंटर कॉलेज में कक्षा 9 में प्रवेश लिया था. बाद में 1963 में इसी कॉलेज में उन्होंने सहायक अध्यापक के रूप में नौकरी शुरू की थी. 1974 में मुलायम राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रवक्ता बने. उनकी सियासी यात्रा का गवाह रहे इस कॉलेज में जश्न का माहौल है. मुलायम के बेटे और सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव करहल विधानसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. 31 जनवरी को नामांकन के लिए जाने से पहले पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव इस कॉलेज पहुंचे और यहां के शिक्षकों का आशीर्वाद लिया. 2022 के विधानसभा चुनाव के बाद यूपी में सपा सरकार बनने पर इस कॉलेज को विश्वविद्यालय बनाने का वादा करके अखिलेश करहल से सपा उम्मीदवार के रूप में नामांकन करने मैनपुरी चले गए.

अखिलेश, मुलायम के संसदीय क्षेत्र मैनपुरी में शामिल करहल सीट से पहली बार चुनाव लड़ रहे हैं. आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से सटी करहल सीट सपा का गढ़ रही है. 1992 में सपा के गठन के बाद से हुए छह विधानसभा चुनावों में पांच बार सपा ने करहल सीट जीती है. केवल 2002 में भाजपा ने इस पर जीत हासिल की थी. 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की लहर के दौरान भी करहल सीट पर सपा ने कब्जा जमाया था. वैसे, सियासी रूप से यादव बेल्ट के रूप में पहचाने जाने मैनपुरी-इटावा के आसपास के जिलों में 2017 में सपा ने अपने गठन के बाद से अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन किया था (देखें ग्राफिक्स). वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में यादव बेल्ट के जिलों की कुल 28 सीटों में से 26 जीतने वाली सपा 2017 के विधानसभा चुनाव में महज छह सीट पर सिमट गई थी. अखिलेश एक रणनीति के तहत करहल सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. इटावा में के.के. पीजी कॉलेज में अर्थशास्त्र विभाग की प्रमुख पद्मा त्रिपाठी बताती हैं, ''मुलायम सिंह यादव का पैतृक गांव सैफई मैनपुरी, फिरोजाबाद, औरैया समेत कई जिलों की राजनीति का केंद्रबिंदु है. ये वे जिले हैं जहां की हर विधानसभा सीट पर यादव जाति का बाहुल्य है. इसके अलावा 2017 के विधानसभा चुनाव में मुलायम सिंह यादव परिवार के अंदरूनी विवाद का असर इन जिलों के चुनाव नतीजों पर साफ दिखा था. सैफई से सटी करहल सीट से चुनाव लड़कर अखिलेश सपा समर्थक वोटबैंक को सकारात्मक संदेश देना चाहते हैं. इसका असर प्रदेश में पश्चिम से लेकर पूरब तक उन 100 विधानसभा सीटों पर भी पड़ेगा जहां यादव जाति का प्रभाव है.''

मुलायम परिवार में एकता कायम करने के लिए अखिलेश ने अपने चाचा शिवपाल सिंह यादव का भी साथ लिया है. अखिलेश के चुनाव प्रचार में व्यस्त होने के कारण मुलायम परिवार के सदस्यों ने करहल सीट पर उनके प्रचार की कमान संभाल ली है. मुलायम के चचेरे भाई और राज्यसभा सदस्य रामगोपाल यादव, बदायूं से पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव, मैनपुरी से पूर्व सांसद तेज प्रताप सिंह और यूपी विधान परिषद के सदस्य अरविंद यादव अलग-अलग टीम बनाकर करहल सीट से अखिलेश की जीत के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं. अरविंद बताते हैं, ''अखिलेश जी ने करहल से चुनाव लड़कर सपा संगठन में उत्साह भरा है. इससे आगरा, अलीगढ़, मेरठ से लेकर आजमगढ़ और मिर्जापुर मंडल तक सपा के जनाधार में बढ़ोतरी होगी.''

भाजपा की जातीय गोलबंदी

अखिलेश के सामने यादव-बेल्ट में सपा का पुराना गौरव वापस लाने की चुनौती है तो भाजपा के सामने 2017 विधानसभा चुनाव का प्रदर्शन दोहराने का कठिन लक्ष्य है. सपा के सबसे मजबूत गढ़ करहल में सेंध लगाने के लिए भाजपा के पास कोई उम्मीदवार नहीं था. काफी मंथन के बाद भाजपा ने केंद्र की

दारोमदार
एक सभा के दौरान लोगों को संबोधित करते अखिलेश यादव

मोदी सरकार में कानून और न्याय विभाग के राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल को करहल सीट से उम्मीवार बनाकर जातिगत समीकरणों को साधने की कोशिश की है. पद्मा त्रिपाठी बताती हैं, ''करहल विधानसभा सीट पर सर्वाधिक यादव मतदाता हैं इसीलिए सपा हमेशा यहां पर यादव जाति के नेता को उम्मीदवार बनाती रही है. करहल में करीब 35 हजार शाक्य, 30 हजार बघेल और 30 हजार ठाकुर मतदाता हैं. शाक्य और ठाकुर मतदाताओं को भाजपा का कोर वोटबैंक माना जाता है. बघेल को चुनाव लड़ाने के पीछे भाजपा की रणनीति गैर-यादव ओबीसी मतों के ध्रुवीकरण की है.'' बघेल कभी मुलायम सिंह के करीबी हुआ करते थे. 1989 में जब मुलायम पहली बार मुख्यमंत्री बने उस वक्त बघेल यूपी पुलिस में सब-इंस्पेक्टर थे. वे 1998, 1999 और वर्ष 2004 में सपा उम्मीदवार के रूप में जलेसर से सांसद चुने गए. मुलायम से अनबन होने के कारण वे 2008 में सपा से निष्कासित कर दिया गयाा. बघेल ने 2009 में फिरोजाबाद लोकसभा सीट पर सपा उम्मीदवार अखिलेश के सामने बसपा उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था. 2009 में फिरोजाबाद लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में बघेल ने अखिलेश की पत्नी और सपा उम्मीदवार डिंपल यादव को चुनौती थी. 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने फिरोजाबाद लोकसभा सीट पर सपा उम्मीदवार और राम गोपाल के बेटे अक्षय यादव के खिलाफ चुनाव लड़ा था. पर मुलायम परिवार के सदस्यों के सामने बघेल को हमेशा चुनावी हार का सामना करना पड़ा है. करहल में लगातार प्रचार में व्यस्त बघेल वह क्रम तोड़ना चाहते हैं. वे कहते हैं, ''गैर-यादव ओबीसी जातियों के साथ सवर्ण जातियां भाजपा के साथ हैं, इससे भाजपा की चुनौती काफी मजबूत है.''

यादव बेल्ट की अन्य विधानसभा सीटों पर भी भाजपा ने कभी मुलायम के करीबी रहे गैर-यादव नेताओं को मैदान में उतारा है. फिरोजाबाद जिले की शिकोहाबाद विधानसभा सीट पर ओम प्रकाश निषाद और मैनपुरी की किश्नी सुरक्षित सीट पर दलित नेता आशू दिवाकर को भाजपा ने उम्मीदवार बनाया है. सपा नेता और ब्लॉक प्रमुख, सैफई संतोष शाक्य बताते हैं, ''मैनपुरी-फिरोजाबाद जिले समेत आसपास की कई विधानसभा सीटों पर भाजपा के पास उम्मीवार ही नहीं थे, इसीलिए इन्होंने दूसरी पार्टियों के नेताओं को उम्मीदवार बनाया है. यह संकेत है कि 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन खराब रहने वाला है.''

शाक्य वोटों की जंग

मैनपुरी, इटावा समेत सपा के गढ़ वाले इलाकों में शाक्य मतों के लिए रोचक जंग लड़ी जा रही है. इटावा निवासी और अखिल भारतीय शाक्य महासभा के अध्यक्ष आलोक सिंह शाक्य बताते हैं, ''यूपी में शाक्य, मौर्य,

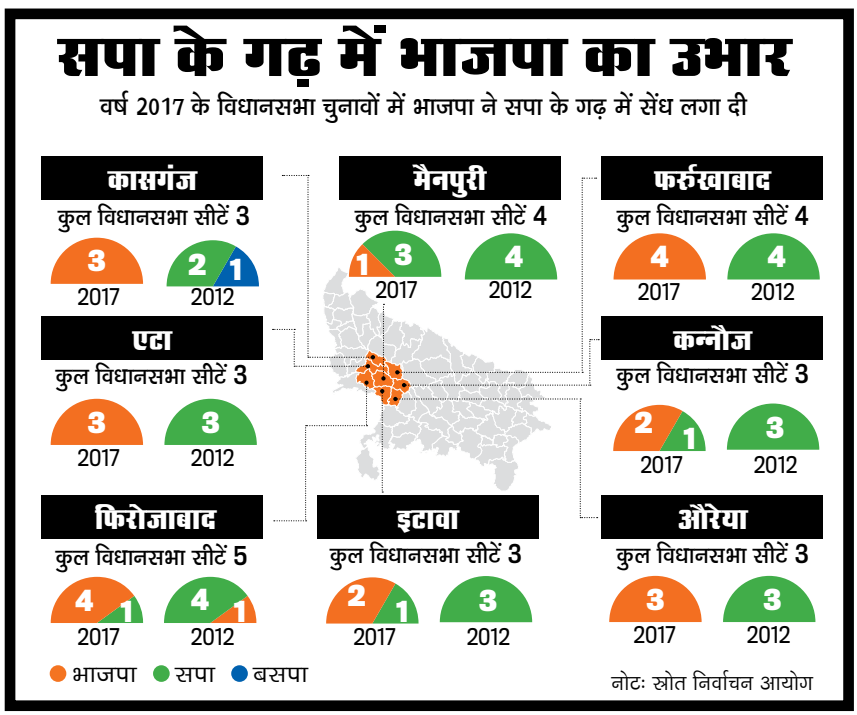

ग्राफिकः असित रॉय

क्यों अहम है 'यादव बेल्ट'

- उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद, एटा, कासगंज, मैनपुरी, इटावा, औरेया, कन्नौज और फर्रुखाबाद जिलों को 'यादव बेल्ट' के रूप में जाना जाता है. यहां पर सपा के संस्थापक मुलायम सिंह यादव के परिवार का काफी प्रभाव है
- यादव बेल्ट के रूप में पहचान रखने वाले जिलों में कुल 28 विधानसभा सीटें आती हैं. सियासी पार्टियों के अनुमान के मुताबिक, इन सभी विधानसभा सीटों में यादव मतदाताओं की संख्या 20 % से अधिक है
- इन 28 विधानसभा सीटों में से 22 ऐसी हैं जहां मुस्लिम आबादी की संख्या 20% या इससे अधिक हैं. 20 विधानसभा सीटों पर प्रत्येक में यादव और मुस्लिम मतदाताओं की कुल आबादी 40 % से अधिक है
- सपा के गढ़ वाले जिलों में यादव के बाद पिछड़ी जाति शाक्य का प्रभाव है. 28 विधानसभा सीटों में शाक्य जाति के मतदाताओं की संख्या 12 % से 15 % है. वहीं 10 विधानसभा सीटों पर लोध पिछड़ी जाति के मतदाता 8 % से 10 % के बीच हैं
- यादव बेल्ट के जिलों में कुल छह आरक्षित विधानसभा सीटें हैं. वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में सपा ने सभी छह आरक्षित सीटें जीती थीं. वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में सपा ने 2 और भाजपा ने 4 आरक्षित सीटें जीती थीं.
- वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में यादव बेल्ट के जिलों में सपा के कुल 10 यादव जाति के उम्मीदवार चुनाव जीते थे. शाक्य जाति का केवल एक उम्मीदवार चुनाव जीतकर विधायक बना था. 2017 के चुनाव में यादव जाति के केवल चार सपा उम्मीदवार चुनाव जीते
- 2017 के विधानसभा चुनाव में सपा के गढ़ में 22 सीटें जीतने वाली भाजपा के शाक्य जाति के 3, लोध जाति के 3, ब्राह्मण जाति के 3 और 4 ठाकुर जाति के उम्मीदवार चुनाव जीतकर विधायक बने थे
- वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने करहल और जसवंत नगर विधानसभा सीट पर अपना उम्मीदवार नहीं खड़ा किया है. बसपा ने इन दोनों विधानसभा सीटों पर दलित उम्मीदवार उतारे हैं

कुशवाहा और सैनी, कृषि पर निर्भर एक जैसी सामाजिक संरचना वाली पिछड़ी जातियां हैं. पूर्वांचल में मौर्य जाति प्रभावी है तो कानपुर और आगरा के बीच शाक्य पिछड़ी जाति की बहुलता है. यादव बेल्ट के रूप में प्रचलित इन आठ जिलों की 28 विधानसभा सीटों में प्रत्येक पर 12 से 15 फीसद शाक्य मतदाता हैं. पार्टियां यादव जाति के बढ़ते सियासी प्रभाव के विरोध में शाक्य मतदाताओं को लामबंद करती रही हैं.'' सपा के आधार वोटबैंक यादव जाति के विरोध में शाक्य मतों को पाने का पहला प्रयास बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने किया. 2004 के लोकसभा चुनाव में मैनपुरी सीट से सपा प्रत्याशी मुलायम सिंह के सामने बसपा ने अशोक शाक्य को उम्मीदवार बनाया था. अशोक भले ही तीन लाख मतों से चुनाव हार थे पर इन्हें बड़ी संख्या में शाक्य मतदाताओं का समर्थन मिला था. इसके बाद मैनपुरी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने वाले मुलायम के सामने बसपा ने 2009 के लोकसभा चुनाव में अशोक और 2014 के लोकसभा चुनाव में संघमित्रा मौर्य को उम्मीदवार बनाया. 2014 के लोकसभा चुनाव में यूपी की 80 में से 71 लोकसभा सीटें जीतने वाली भाजपा ने मैनपुरी में बसपा के समर्थक शाक्य मतों में सेंध लगानी शुरू कर दी थी. 2014 में मैनपुरी लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा ने प्रेम सिंह शाक्य को उम्मीदवार बनाया था. आलोक शाक्य बताते हैं, ''प्रेम सिंह शाक्य करीब तीन लाख मतों से चुनाव हार गए, पर भाजपा यादव मतदाताओं के विरोध में शाक्य मतों को बसपा से खींचने में कामयाब हो गई थी.''

वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने करहल समेत कुल चार विधानसभा सीटों पर शाक्य जाति के उम्मीदवार उतारे थे. इनमें करहल में भाजपा हार गई थी और अमृतपुर, बिधुना और पटियाली सीटों पर शाक्य जाति के उम्मीदवारों को जीत मिली थी. शाक्य मतों पर पकड़ बनाए रखने के लिए भाजपा ने नवंबर, 2020 में औरैया जिले में पार्टी की पूर्व जिला अध्यक्ष गीता शाक्य को राज्यसभा भेजा था. 2021 में भाजपा ने गीता को प्रदेश महिला मोर्चा की अध्यक्ष बनाया. औरेया के एक निजी कॉलेज में प्राचार्य अमतेश शाक्य बताते हैं, ''2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष केशव प्रसाद मौर्य को मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर पेश किया था. इसके कारण शाक्य जातियों ने भाजपा को एकतरफा समर्थन दिया था. चुनाव के बाद जिस तरह केशव मौर्य योगी सरकार में हाशिए पर रहे, उससे शाक्य मतदाताओं में भाजपा के प्रति नाराजगी है.'' भाजपा छोड़कर सपा में आए स्वामी प्रसाद मौर्य मैनपुरी, औरैया में सभा करके भाजपा पर मौर्य, शाक्य और कुशवाहा जातियों की उपेक्षा का आरोप लगा रहे हैं. वहीं, भाजपा ने उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य को शाक्य मतदाताओं को मनाने का जिम्मा सौंपा है. भाजपा ने इटावा लोकसभा सीट से दो बार सांसद रहे कद्दावर नेता रघुराज शाक्य को शामिल कर लिया है.

मुलायम परिवार में सेंध

भाजपा ने 2022 के चुनावों में मुलायम परिवार के अंदरूनी विवाद का लाभ लेने की कोशिश की है. करहल से सटी फिरोजाबाद जिले की सिरसागंज विधानसभा सीट से हरिओम यादव लगातार दो बार विधायक बने हैं. सपा के संस्थापक सदस्यों में से एक हरिओम के मुलायम से बेहद नजदीकी रिश्ते हैं. मुलायम के बड़े भाई रतन सिंह यादव के बड़े बेटे रणवीर सिंह यादव की शादी हरिओम के भाई राम प्रकाश की बेटी मृदुला यादव से हुई थी. पिछले वर्ष मई में फिरोजाबाद जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव में हरिओम ने भाजपा नेता ठाकुर जयवीर सिंह की पुत्रवधू हर्षिमता सिंह का समर्थन किया था. फलस्वरूप भाजपा समर्थित हर्षिमता जिला पंचायत अध्यक्ष चुनी गईं. इसके बाद से हरिओम और मुलायम परिवार के बीच दूरी बढ़ती गई. 13 जनवरी को हरिओम भाजपा में शामिल हो गए. भाजपा ने उन्हें को सिरसागंज सीट से उम्मीदवार बनाया है. वे कहते हैं, ''सपा के राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव नहीं चाहते थे कि मैं उम्मीदवार बनूं. उन्होंने सपा के राष्ट्रीय महासचिव अखिलेश यादव के सामने मुझे सपा का टिकट मिलने पर आत्महत्या करने की धमकी दी थी. मैं नहीं चाहता था कि मेरी वजह से कोई आत्महत्या करे, इसलिए मैंने भाजपा ज्वाइन कर ली.''

मनीष अग्निहोत्री

चुनौती
भाजपा ने अखिलेश के सामने एस.पी. सिंह बघेल को मैदान में उतारा है

रामगोपाल इन आरोपों को बकवास बताते हैं, ''हरिओम यादव लगातार सपा विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहे, इसीलिए इन्हें पार्टी से बाहर निकाला गया.'' 2021 के अप्रैल में पंचायत चुनाव में संध्या यादव के भी बागी तेवर दिखे. संध्या मुलायम के छोटे भाई अभयराम यादव की बेटी और धर्मेंद्र यादव की बहन हैं. संध्या ने भाजपा उम्मीदवार के तौर पर मैनपुरी में जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ा था, पर वे सपा उम्मीदवार से हार गई थीं. परिवार के सदस्यों में एकता कायम करने के लिए अखिलेश ने अपने चाचा और प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) के संस्थापक शिवपाल सिंह यादव को साथ लिया है. शिवपाल सपा उम्मीदवार के रूप में इटावा की जसवंत नगर सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. शिवपाल कहते हैं, ''परिवार को तोड़ने की भाजपा की कोशिशों का जवाब जनता विधानसभा चुनाव में देगी. सपा को जीत दिलाने के लिए पूरा मुलायम परिवार एक है.''

विकास पर सवाल

मैनपुरी के भोगांव विधानसभा क्षेत्र में ट्रामा सेंटर का निर्माण बड़ा चुनावी मुद्दा बन गया है. पिछली सपा सरकार ने मैनपुरी के बेवर इलाके में जीटी रोड के किनारे अत्याधुनिक ट्रामा सेंटर बनाने की घोषणा की थी. तीन करोड़ रुपए में बनने वाले ट्रामा सेंटर के भवन का निर्माणकार्य 14 अगस्त, 2016 को शुरू हुआ. एक वर्ष के भीतर भवन बनकर तैयार होना था. दो महीने बाद जमीन के विवाद के कारण ट्रामा सेंटर का निर्माण कार्य रोक दिया गया. पांच साल से अधिक समय बीतने के बाद मैनपुरी के लोगों के लिए ट्रामा सेंटर एक स्वप्न ही बना हुआ है.

इसी तरह सैफई को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने के लिए शुरू किया गया अरबन डेवलेपमेंट प्रोजेक्ट अधूरा पड़ा है. पूर्ववर्ती अखिलेश यादव सरकार ने अप्रैल, 2016 में 300 करोड़ रुपए की लागत वाले इस प्रोजेक्ट की शुरुआत की थी. इसके तहत सैफई में सीवेज और ड्रेनेज की व्यवस्था, बिजली के तारों को अंडरग्राउंड करना, सड़कों को चौड़ा करना, साइकिल ट्रैक का निर्माण जैसे कार्य किए जाने थे. पर भाजपा सरकार बनने के बाद से प्रोजक्ट अधूरा पड़ा है. प्रोजेक्ट के निर्माण से जुड़ी एजेंसी राजकीय निर्माण निगम के एक अधिकारी नाम न छापने की शर्त पर बताते हैं, ''सीवेज और ड्रेनेज के लिए 40 करोड़ रुपए, भूमिगत तार बिछाने के लिए 19 करोड़ रुपए बजट की मांग सरकार से की गई है. जब तक पहले चरण के सारे भूमिगत कार्य नहीं हो जाते हैं तब तक इस प्रोजेक्ट के दूसरे चरण का निर्माण कार्य नहीं शुरू किया जा सकता.''

बदायूं के पूर्व सांसद और अखिलेश यादव के चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव बताते हैं, ''योगी सरकार ने पिछले पांच साल में इटावा, मैनपुरी समेत आसपास के जिलों में विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में भेदभाव किया है. सपा सरकार की योजनाओं के लिए बजट रोककर भाजपा सरकार ने जनता के साथ अन्याय किया है. चुनाव में यह एक बड़ा मुद्दा है.'' ■

ट्वीट

"सुनो केजरीवाल, जब पूरी मानवता कोरोना की पीड़ा से कराह रही थी, उस समय आपने यूपी के कामगारों को दिल्ली छोड़ने पर विवश किया... आपको मानवताद्रोही कहें या..."

योगी आदित्यनाथ

प्रवासी मजदूरों पर पीएम के बयान को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की ओर से 'सरासर झूठ' करार देने पर योगी की प्रतिक्रिया

"सुनो योगी, आप तो रहने ही दो. जिस तरह यूपी के लोगों की लाशें नदी में बह रही थीं और आप करोड़ों रुपए खर्च करके 'टाइम' मैगजीन में अपनी झूठी वाहवाही के विज्ञापन दे रहे थे. आप जैसा निर्दयी और क्रूर शासक मैंने नहीं देखा"

अरविंद केजरीवाल

योगी आदित्यनाथ के आरोप पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का जवाब

यहां सबकी नजर
खटीमा, उत्तराखंड

खटीमा का खेल

पड़ोसी देश नेपाल के साथ भारत की सीमा से थोड़ी दूरी पर, खटीमा में देखने-बताने लायक कोई उल्लेखनीय चीज नहीं है, सिवाय इसके कि यह छोटा-मोटा व्यापारिक केंद्र है. लेकिन, तराई के इस छोटे से शहर में इस विधानसभा चुनाव में गहमागहमी है, क्योंकि उत्तराखंड के युवा मुख्यमंत्री, 46 वर्षीय पुष्कर सिंह धामी इस चुनाव क्षेत्र से तीसरी जीत की तैयारी कर रहे हैं.

धामी के खिलाफ खम ठोकने वाले लोगों में जाने-पहचाने और पुराने प्रतिद्वंद्वी ही हैं: कांग्रेस के भुवन चंद्र कापड़ी—जिन्हें धामी ने 2017 के चुनाव में 2,709 वोटों के थोड़े ही अंतर से हराया था—और इसके साथ बहुजन समाज पार्टी के रमेश राणा हैं. कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद के आकांक्षी हरीश सिंह रावत भी आसपास ही हैं और वे पड़ोस के लालकुआं सीट से चुनाव मैदान में हैं.

खटीमा, नैनीताल-उधम सिंह नगर लोकसभा सीट का हिस्सा है और यह 70 सदस्यीय विधानसभा में 29 सदस्य भेजने वाले कुमाऊं डिविजन के पहाड़ की तलहटी में स्थित है. यहां 14 फरवरी को चुनाव होने हैं और धामी भाजपा के नारे—अबकी बार, 60 पार—पर भरोसा कर रहे हैं. इससे उन्हें अपने अभियान और आत्मविश्वास दोनों को शक्ति मिल रही है.

ऐसा नहीं कि धामी को आत्मविश्वास बढ़ाने वाला बूस्टर डोज चाहिए. आखिर, उनकी पार्टी ने इस कुमाऊंनी युवा में तब भरोसा दिखाया जब उन्हें दो मुख्यमंत्री फटाफट बदलने पड़े थे. लेकिन नौकरियों, स्वास्थ्य के खराब बुनियादी ढांचे और अव्यवस्थित होते शिक्षा क्षेत्र को लेकर बढ़ती शिकायतें खटीमा में खेल खराब कर सकती हैं. किसानों का रोष भी यहां असर दिखला सकता है खासकर जट सिखों के बीच, जिनकी उधम सिंह नगर में अच्छी-खासी संख्या है और खटीमा उसका हिस्सा है. पारंपरिक तौर पर, यह समुदाय भाजपा को वोट देता आया है लेकिन हाल की घटनाओं को देखते हुए ऐसा लग रहा है कि इस बार निष्ठाएं बदल सकती हैं.

खटीमा के जट सिखों के मोटे तौर पर 10,000 वोट हैं और मुस्लिम वोटों की संख्या भी करीब 20,000 है—इन संख्याओं से धामी की टीम थोड़ी असहज है. दूसरी ओर, निवर्तमान मुख्यमंत्री होने और सिर पर आलाकमान का हाथ होना धामी के लिए राहत की बात है. वहीं, आम आदमी पार्टी ने यहां से जट सिख, सविंदरजीत कालेर को खड़ा किया है और ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन ने आसिफ मियां को उम्मीदवार बनाया है, ऐसे में टीम धामी को यकीन है कि अंकगणित उनके पक्ष में है.

युवा जोश
उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

उत्तराखंड

दूसरी जगह भी फंस गए रावत

उत्तराखंड में भी कांग्रेस 'ओल्ड गार्ड' बनाम 'न्यू गार्ड' की लड़ाई की तरफ बढ़ती दिख रही है. हरीश रावत आलाकमान के भरोसे बैठे हैं. इसकी एक वजह यह भी है कि टिकट वितरण में उनकी नहीं, बल्कि नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह की चली.

देहरादून में तो यह भी चर्चा है कि रावत की चुनौती खत्म करने के लिए उन्हें 2017 जैसी स्थिति में डाल दिया गया है. पिछले चुनाव में रावत हरिद्वार ग्रामीण और किच्छा दोनों सीट से हार गए थे. इस बार वे पक्की जीत के वास्ते रामनगर सीट के लिए कांग्रेस आलाकमान के सामने अड़ गए थे. मगर पार्टी के विरोधी खेमे ने उस सीट पर कभी उनके सिपहसालार रहे रणजीत रावत को आगे कर दिया. फिर रावत को समझाया गया कि वे लालकुआं से चुनाव लड़ लें. लेकिन यहां भी पहले कांग्रेस का टिकट पा चुकी प्रीतम खेमे की संध्या डालाकोटी ने पर्चा वापस नहीं लिया और वे निर्दलीय मैदान में हैं. रावत उन्हें मनाने के लिए तीन दिन तक लालकुआं में डेरा डाले रहे और अब कह रहे हैं कि संध्या उनकी बेटी जैसी हैं, पता होता कि बेटी पर्चा वापस करने को राजी नहीं तो यहां कभी लड़ने नहीं आता.

पंजाब

ज्यादा वजन नहीं

प्रदेश कांग्रेस (पीसीसी) अध्यक्षों का वक्त अच्छा नहीं है, चाहे मौजूदा हों या पूर्व. नवजोत सिंह सिद्धू उलझ गए हैं तो उनके पूर्ववर्ती सुनील जाखड़ ने चुनावी राजनीति से रिटायरमेंट की घोषणा कर दी. दोनों के सबसे बड़े साझा दुश्मन कांग्रेस का सीएम चेहरा ही हैं. सिद्धू सीएम बनने की इच्छा को लेकर मुखर थे, पर जाखड़ की महत्वाकांक्षा तब जाहिर हुई जब उनका वीडियो वायरल हुआ—जिसमें उनका दावा था कि अमरिंदर के स्थानापन्न के तौर पर वह विधायकों की पहली पसंद थे और चरणजीत चन्नी आखिरी. वहीं, पार्टी की एक परिवार, एक टिकट नीति ने बाजवा बंधुओं—प्रताप, जो 2016 तक पीसीसी अध्यक्ष थे, और उनके सहोदर फतेहजंग—को नाराज कर दिया. फतेहजंग भाजपा में चले गए. नाराज पूर्व पीसीसी अध्यक्षों में एच.एस. हंसपाल भी हैं जो अपने पोते सुंदर सिंह को टिकट नहीं मिलने पर आप में चले गए. अन्य पूर्व पीसीसी प्रमुखों में मोहिंदर केपी व शमशेर ढुलो टिकट से वंचित रह गए.

दोनों इलस्ट्रेशनः सिद्धांत जुमडे

उत्तर प्रदेश

दुश्मन का दुश्मन दोस्त

उत्तर प्रदेश में भाजपा अपने गठबंधन से बाहर के भी एक पार्टी के विधायकों को लेकर आश्वस्त दिख रही है. ये हैं रघुराज प्रताप सिंह की पार्टी जनसत्ता दल के विधायक. राजा भैया के नाम से मशहूर रघुराज 1993 से कुंडा से विधायक हैं और बगल की बाबागंज सुरक्षित सीट पर भी उनका ही उम्मीदवार कई चुनाव से जीत रहा है. बसपा से पुराने बैर और अब अखिलेश यादव से अदावत के बाद उनके सियासी विकल्प नहीं बचे. कहा जा रहा है कि राजा भैया ने भाजपा से गठजोड़ की भी कोशिश की, पर एक खेमे ने दलितों में सही संदेश नहीं जाने का हवाला देकर उनकी एंट्री पर रोक लगवा दिया.

पर राजा भैया ने योगी का समर्थन वाला संदेश देकर भविष्य के संकेत दे दिए. प्रतापगढ़ में सपा के खिलाफ वर्चस्व की जंग में उन्हें भाजपा के साथ की जरूरत भी तो है.

उत्तर प्रदेश

दुआ, सलाम या चुनावी दांव?

फरवरी की 3 तारीख को पश्चिमी यूपी के बुलंदशहर में गंगा-जमुनी तहजीब का नजारा दिखा, जब प्रियंका गांधी का कारवां और अखिलेश यादव तथा जयंत चौधरी का रथ अपने चुनाव अभियान के दौरान पास से गुजरा. इन सियासी विरोधियों—कांग्रेस

एएनआइ

राह चलते
बुलंदशहर में चुनाव प्रचार के दौरान प्रियंका गांधी का अभिवादन करते अखिलेश यादव और जयंत चौधरी

की यूपी प्रभारी महासचिव प्रियंका, और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश तथा राष्ट्रीय लोकदल के जयंत—के बीच मुस्कुराहटों का आदान-प्रदान हुआ और इन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया. यह सौहार्द सोशल मीडिया पर भी फैला जब अखिलेश ने एक तस्वीर ट्विटर पर साझा की और लिखा, 'एक दुआ सलाम, तहजीब के नाम.' प्रियंका ने इसके जवाब में फोटो पोस्ट किया और चुटीला कैप्शन लिखा 'हमारी भी आपको राम राम' और इसमें अखिलेश और जयंत दोनों को टैग किया.

सियासी रणनीतिकारों का मानना है कि यह महज राह चलते मिल जाने का मामला नहीं है. दोनों ही पक्ष एक-दूसरे के कारवां के बारे में जानते थे. वे रुके क्योंकि रुकना चाहते थे. यह विपक्षी एकता का प्रदर्शन था और यह कांग्रेस के उस कदम में भी दिखता है कि पार्टी ने अखिलेश और शिवपाल यादव के खिलाफ कोई उम्मीदवार नहीं खड़ा किया है. क्या यह चुनाव-बाद साझेदारी की तैयारी है?

उत्तर प्रदेश

परदे के पीछे आलोक

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव आलोक रंजन पिछले तीन महीनों से समाज के अलग-अलग तबकों से बातचीत करके अपने 'मिशन' को पूरा करने में जुटे थे. 8 फरवरी को आलोक का 'मिशन' समाजवादी पार्टी के ''वचन पत्र'' के रूप में सामने आया. लखनऊ में सपा मुख्यालय में दोपहर साढ़े तीन बजे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ आलोक रंजन ने 88 पेज का ''वचन पत्र'' जारी किया. आलोक रंजन पिछली सपा सरकार के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के करीबी अधिकारियों में शुमार थे. 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने मुलायम सिंह यादव के करीबी नौकरशाह जावेद उस्मानी से मुख्य सचिव की कुर्सी छीनकर आलोक रंजन को सौंप दी थी. अब एक बार फिर अखिलेश यादव ने आलोक रंजन पर भरोसा जताया है.

उत्तराखंड

हाथी, चुनाव चिह्न समझा है क्या !

उत्तराखंड के चुनावी रण में राजनैतिक दलों के प्रत्याशियों को जंगली जानवरों की शांति में खलल डालने की कीमत भी चुकानी पड़ रही है. कहीं पहाड़ों में प्रत्याशी शाम ढलने के बाद प्रचार इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि गुलदार और तेंदुओं के हमले का खतरा रहता है. कहीं हाथी राह रोक रहे हैं. कालाढूंगी के बसपा प्रत्याशी सुंदरलाल आर्य अपने समर्थकों के साथ शनिवार, 5 फरवरी को कोटाबाग प्रचार के लिए जा रहे थे कि सड़क पर खड़े हाथियों ने उन्हें समर्थकों के साथ दौड़ा दिया. राहत वाली बात यह रही कि कोई अनहोनी घटना होते-होते बच गई. हाथियों ने बसपा प्रत्याशी और उनके समर्थकों को काफी देर तक परेशान रखा. बाद में हाथियों ने यू-टर्न लेकर जंगल का रुख किया तभी इन सबकी जान में जान आई.

गोवा

ईश्वर का डर या कानून का?

कभी सामूहिक दल-बदल का शिकार हुई गोवा कांग्रेस फिर शर्मिंदगी झेल रही है. कभी इसने अपने उम्मीदवारों को देवताओं के सामने पार्टी के प्रति निष्ठा की शपथ दिलाई थी. उनमें ईश्वर के डर को लेकर अनिश्चय में पड़ी पार्टी ने अब उम्मीदवारों को हलफनामा दाखिल करके घोषित करने को कहा है कि वे पार्टी के साथ बने रहेंगे चाहे भाजपा आए या कोई और. आम आदमी पार्टी ने भी यही रास्ता अपनाया है. त्रिशंकु

उत्तराखंड

हार का सबक

उत्तराखंड राज्य की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले पृथक राज्य आंदोलन के अगुवा रहे काशी सिंह ऐरी ने इस साल राज्य के पांचवें विधानसभा चुनाव में हथियार डाल दिए हैं. उनके मुताबिक, उन्होंने चुनावी मैदान से हटने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि उनके पास न धनबल है न बाहुबल. उत्तराखंड क्रांति दल के अध्यक्ष काशी सिंह ऐरी पहली बार 1985 में डीडीहाट सीट से चुनाव जीतकर यूपी विधानसभा पहुंचे थे. इसके बाद अविभाजित यूपी में वे 1989 और 1993 में भी विधायक रहे. 1996 के चुनाव में वे बिशन सिंह चुफाल से हार गए. उत्तराखंड राज्य बनने के बाद हुए 2002 के विधानसभा चुनाव में वे कनालीछीना से विधायक चुनकर उत्तराखंड के सदन में पहुंचे थे. इसके बाद राज्य में हुए सीमांकन से उनकी सीट में हुए परिवर्तन के बाद वे लगातार अलग-अलग क्षेत्रों से चुनाव लड़े, लेकिन उन्हें हर बार हार का सामना करना पड़ा. इस बार तो उन्होंने चुनाव ही न लड़ने की ठान ली. वे एकमात्र ऐसे विधायक रहे हैं जो विधायक रहने के दौरान भी रोडवेज की बसों में सफर करते दिख जाते थे.

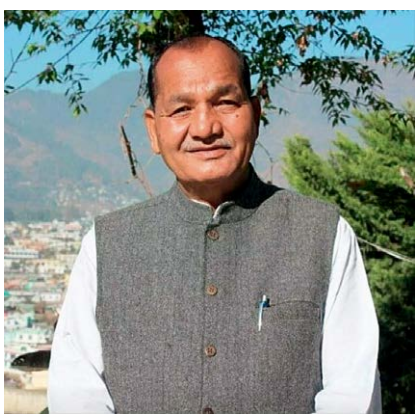

अमित साह

विधानसभा की स्थिति हुई तो वे नहीं चाहते कि भाजपा उनके विधायकों को खरीद ले. वैसे, गोवा फॉरवर्ड पार्टी (जीईपी) के मुखिया विजय सरदेसाई का पूरा भरोसा ईश्वर में है. वे अपने उम्मीदवारों को मापुसा के बोडगेश्वर भगवान के पास ले जाकर शपथ दिलाते हैं कि वे कभी भी भाजपा में शामिल नहीं होंगे. माना जाता है कि बोडगेश्वर शपथ तोड़ने वालों को माफ नहीं करते.

संचार देखकर

उत्तर प्रदेश

हाथ का सियासी साथ!

एएनआइ

एक समाचार चैनल के पॉलिटिकल बहस के दौरान कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी अपना सेशन करके बाहर निकले और अगले सेशन के गेस्ट अखिलेश यादव से उनकी मुलाकात हो गई. फिर मिलने की बात तय हुई. और बात क्या हुई, इसका लोगों ने अंदाजा लगा लिया, जब सपा ने ऐलान किया कि वह प्रमोद तिवारी की बेटी और कांग्रेस विधायक दल की नेता **आराधना मिश्रा** के खिलाफ प्रतापगढ़ जिले की रामपुर खास सीट से उम्मीदवार नहीं उतारेगी. अभी तक इस तरह का सियासी शिष्टाचार कभी-कभार केवल गांधी परिवार के प्रति ही दिखाया जाता था.

उत्तर प्रदेश

अखिलेश यादव के नाम से गफलत

समाजवादी पाटी ने विधानसभा चुनाव के लिए 7 फरवरी को 24 उम्मीदवारों की सूची जारी की. इसमें एक नाम अखिलेश यादव का था, जिन्हें आजमगढ़ की मुबारकपुर विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया गया था. सूची के जारी होते ही सियासी सरगर्मी बढ़ गई. लोगों को लगा कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव मैनपुरी की करहल सीट के अलावा आजमगढ़ की मुबारकपुर सीट से भी चुनाव लड़ेंगे. सपा समर्थकों ने सोशल मीडिया पर अखिलेश यादव को बधाई देने का सिलसिला शुरू कर दिया तो विपक्षी नेता भी सवाल खड़ा करने से नहीं चूके कि आखिर क्यों सपा

अध्यक्ष मुबारकपुर से चुनाव लड़ रहे हैं. कई घंटों की सरगर्मी के बाद सपा समर्थकों को पता चला कि मुबारकपुर से सपा प्रत्याशी अखिलेश यादव पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं बल्कि आजमगढ़ के पूर्व जिला अध्यक्ष अखिलेश यादव हैं. वे 2012 और 2017 के विधानसभा चुनाव में मुबारकपुर से सपा उम्मीदवार थे, पर दोनों बार हार गए थे.

–सौरभ द्विवेदी, आशीष मिश्र, अनिलेश एस. महाजन, प्रशांत श्रीवास्तव और अखिलेश पांडे

खतरे में बिहार की सांस्कृतिक धरोहर

पटना संग्रहालय के महापंडित राहुल सांकृत्यायन कक्ष के क्षतिग्रस्त होने से हजारों दुर्लभ व अनमोल तिब्बती पांडुलिपियों की सुरक्षा पर उठे सवाल. अन्य संग्रहालय और पुरातत्व साइट्स झेल रहीं बदहाली

पुष्यमित्र

सभी फोटोः रंजन राही

❶ आलमारियों में कैद धरोहर
पटना संग्रहालय के राहुल कक्ष की छत का टूटा पलस्तर, नीचे अलमारियों में राहुल जी की तिब्बत से लाई गई पांडुलिपियां बरसों से संरक्षित हैं

❷ वीरान और उपेक्षित गांधी शिविर
पटना के एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट परिसर में गांधी शिविर की इमारत बदहाल है. महात्मा यहां 1947 में 67 दिनों के लिए ठहरे थे.

❸ ऐतिहासिक इमारत
जादूघर के नाम से मशहूर पटना संग्रहालय की 92 साल पुरानी भव्य इमारत

"ति

ब्बत में 16 मई (1933) को एक अनमोल चीज हाथ लगी. यह ताड़पत्र की एक पुस्तक थी. पास के एक लामा ने यह पुस्तक इस संदेश के साथ मेरे पास भेजी थी कि इस पुस्तक में क्या है बस इतना बता दें. फिर ये पुस्तक अपने पास रख लें क्योंकि हम तो (यह भाषा) पढ़ना जानते नहीं. मैंने कुटिल अक्षरों (देवनागरी से ठीक पहले 7वीं से 10वीं के बीच पूरे भारत में यही लिपि प्रचलित थी) को देखते ही समझ लिया कि ये 10वीं-11वीं सदी से इधर की पुस्तक नहीं हो सकती. नाम व्रजडाकतंत्र देखने से ख्याल आया कि ये तो कांग्यूर में अनुवादित है. और अनुवाद भी 11वीं सदी के मध्य में वैशाली के कायस्थ पंडित गंगाधर ने उस शलु मठ के एक बौद्ध भिक्षु की मदद से किया था जहां के लामा ने ये पुस्तक अब मेरे पास भेजी है...हमने याक के चमड़े के बड़े-बड़े थैलों में इन किताबों/चित्रपटों को रखकर उन्हें अच्छी तरह बांधा और गदहों पर लाद कर फ-रो-जोड् के लिए रवाना कर दिया.''

यायावर और दार्शनिक महापंडित राहुल सांकृत्यायन के (*तिब्बत में सवा साल* में) लिखे ये शब्द बताते हैं कि तिब्बत से ये दुर्लभ पांडुलिपियां जुटाने में उन्हें कितनी मशक्कतों का सामना करना पड़ा था. सांकृत्यायन ने 1929 से 1938 तक चार बार तिब्बत की यात्रा की. इन यात्राओं के दौरान वे तिब्बती लिपि में लिखीं हजारों पांडुलिपियां और ताड़पत्र ग्रंथ अपने साथ 22 गदहे-खच्चरों पर लादकर पटना लाए. महापंडित राहुल तिब्बत यात्रा के दौरान वहां मौजूद संस्कृत ग्रंथों के 'फिल्म निगेटिव', 'ग्लास निगेटिव' के साथ ही बौद्ध मठों में ताड़पत्र पर लिखीं पांडुलिपियों की तस्वीर भी खींचकर लाए थे. ये उन पुस्तकों की तिब्बती पांडुलिपियां हैं, जो तिब्बती भिक्षु और धर्म का प्रचार करने भारतीय विद्वान नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय से अनुवाद करके तिब्बत ले गए थे. इन पांडुलिपियों को 'जादूघर' के नाम से पुकारे जाने वाले पटना संग्रहालय के एक कोने में बने 'राहुल कक्ष' में संरक्षित कर रखा गया है. और करीब नौ दशक से ये पांडुलिपियां पटना संग्रहालय की अनमोल धरोहर हैं.

लेकिन अब यह धरोहर खतरे में है. इस साल जनवरी के आखिरी दिन इस कमरे की छत का पलस्तर टूटकर गिरने लगा. उसके कुछ हिस्से उस आलमारी पर भी गिरे जिसमें ये पांडुलिपियां संरक्षित हैं. मगर इस घटना के 12 दिन बाद जब इस संवाददाता ने यह सवाल बिहार सरकार के संग्रहालयों के निदेशक दीपक आनंद से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हें इस घटना की सूचना तक नहीं है. जाहिर है, उस रोज तक उस भवन की मरम्मत भी शुरू नहीं हो पाई थी. छत का उखड़ा हुआ पलस्तर वैसा का वैसा ही नजर आ रहा था.

यह बात सच है कि छत का पलस्तर गिरने से इन पांडुलिपियों को खास नुक्सान नहीं हुआ. मगर सबसे दुखद बात यह है कि भारत आने के 84 साल बाद भी ये पांडुलिपियां संरक्षित होकर एक कमरे में बंद पड़ी हैं. इनका अनुवाद और प्रकाशन नहीं हो पाया है. इन 10 हजार पांडुलिपियों

में से अब तक बमुश्किल 20–25 ग्रंथों का ही प्रकाशन हुआ है और अधिकतम 50 ग्रंथों का अनुवाद हो पाया है. इतिहास और धरोहरों से संबंधित शोध के लिए मशहूर संस्थान केपी जायसवाल इंस्टीट्यूट के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा कहते हैं–एक तरह से 10 हजार दुर्लभ ग्रंथ उस छोटे से कमरे में कैद हैं. इनके ज्ञान की रोशनी बाहर नहीं आ पाई है. और किसी को इसकी फिक्र नहीं है.

यह पूरी घटना इस बात को उजागर करने के लिए काफी है कि इस अत्यंत दुर्लभ ज्ञान धरोहर को संभालने और इस ज्ञान को फिर से दुनिया तक पहुंचाने में बिहार या केंद्र सरकार की कितनी दिलचस्पी है. यह मामला सिर्फ इन दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण का ही नहीं है. इस भवन से कुछ ही दूरी पर अनुग्रह नारायण सिन्हा इंस्टीट्यूट परिसर में गांधी शिविर नामक वह ऐतिहासिक भवन है, जहां आजादी के ठीक पहले महात्मा गांधी कुल 67 दिन ठहरे, वहां का हाल तो इससे भी बुरा है. उस भवन के दीवारों पर काई लग गई है, दरवाजा टूटा हुआ है. उस भवन की जिम्मेदारी लेने के लिए कोई तैयार नहीं है. न एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट और न ही बिहार का कला संस्कृति विभाग.

सभी 26 संग्रहालय खस्ताहाल

बिहार की ऐतिहासिक विरासतों की संपन्नता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि राज्य में केंद्र सरकार और आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा संरक्षित नालंदा, राजगीर, बोधगया, विक्रमशिला आदि साइटों के अलावा 54 ऐसी साइट्स हैं, जिनका संरक्षण राज्य सरकार करती

क्या है इन तिब्बती ग्रंथों में

राहुल तो फक्कड़ थे. तिब्बत से दुर्लभ ग्रंथ लाने के लिए प्रसिद्ध इतिहासकार काशी प्रसाद जायसवाल ने उन्हें आर्थिक मदद दी थी. जायसवाल बिहार रिसर्च सोसाइटी के प्रभारी थे. राहुल ने इन दुर्लभ ग्रंथों को उन्हीं के पास रख छोड़ा था. राहुल तिब्बत से किन खोए हुए अनमोल ग्रंथों को भारत लाए, इसे पहली बार जायसवाल ने ही दुनिया को बताया. *मॉर्डन रिव्यू* (1937) में छपे एक लेख में जायसवाल ने बताया कि राहुल पहली बार तिब्बत गए तो और वहां से तिब्बती पुस्तकें, पेंटिंग व अन्य साहित्य सामग्री 22 खच्चरों पर लाद कर पटना लाए. उन्होंने 16,000 दुर्लभ श्लोकों की तस्वीरें उतारीं. इतना काफी नहीं था तो उन्होंने 40,000 श्लोकों की नकल उतार ली क्योंकि वे किताबें वे भारत नहीं ला सकते थे. उन्हें तिब्बत में ईसा पूर्व शताब्दी का संस्कृत में लिखा 'विनय पाठ' मिला. इसके लेखक मातृचेता थे जो कनिष्क के समकालीन थे. इन्हें भ्रमवश अश्वघोष के नाम से भी जाना जाता था. प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि मातृचेता के पदों का पाठ नालंदा विश्वविद्यालय में प्रति दिन किया जाता था. राहुल को तिब्बत में नागार्जुन की *विग्रह व्यावर्तिनी* के 450 श्लोक मिले. आसंग और वसुबंधु चौथी सदी के बौद्ध विद्वान थे. इनके प्रामाणिक ग्रंथों के श्लोक मिले जो भारत में नहीं थे. राहुल 5वीं सदी के भाव्य, छठी सदी के बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्ति, 10वीं सदी के ज्ञानश्री, जीतारि की दुर्लभ रचनाएं भारत लाए थे. राहुल तिब्बत से ''बड़ा रहस्य'' और ''तर्क रहस्य'' नाम की 10वीं सदी की रचनाएं भी लाए जिनके लेखक अज्ञात हैं.

राहुल द्वारा लाई गई पांडुलिपियों को हम चार हिस्सों में बांटते हैं. पटना संग्रहालय स्थित राहुल कक्ष के प्रभारी शोध सहायक शिवकुमार मिश्र कहते हैं पहला कांग्यूर ग्रंथ है, जो बुद्ध के मूल वचनों की पुस्तक है. दूसरा तांग्यूर है, जिसमें इन वचनों पर उस वक्त के भारतीय विद्वानों की टिप्पणियां और भाष्य हैं. इनकी संख्या 3,500 है. तीसरे नीमा ग्रंथ हैं, जो बुद्ध के उपदेशों पर तिब्बती विद्वानों की टिप्पणियां हैं. इनकी संख्या 2,466 है. शेष मिश्रित ग्रंथ हैं, जिनमें बौद्ध भिक्षुओं के यात्रा वृत्तांत और उनकी जीवनियां इत्यादि हैं. बताते हैं कि इस पंचवर्षीय योजना में 5,000 हजार ग्रंथों के अनुवाद का लक्ष्य रखा गया था. मगर आधी अवधि बीत जाने पर भी बमुश्किल 40-50 ग्रंथों का ही अनुवाद हुआ है. एक महान खोजकर्ता के परिश्रम का यह सिला! आखिर क्यों?

तिब्बत से आई प्राचीनतम पांडुलिपि
स्वर्ण अक्षरों से लिखी पांडुलिपि, नौ दशक के बाद भी बौद्ध पांडुलिपियों का अनुवाद तक नहीं हुआ

वैष्णव संन्यासी से बौद्ध बने थे राहुल

हिन्दी को खड़ी बोली का नाम देने वाले बहुभाषाविद् और खोजी दार्शनिक राहुल सांकृत्यायन आजमगढ़ जिले के कनैला गांव में ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे. उनका मूल नाम केदारनाथ पांडेय था. 16 साल की उम्र में संस्कृत पढ़ने बनारस आए और 20 साल की उम्र में वैष्णव धर्म अपनाकर संन्यासी हो गए. छपरा के एक संपन्न मठ की महंती ठुकराकर संस्कृत शिक्षक बने और फिर श्रीलंका चले गए. तिब्बत की पहली यात्रा (1929) से लौट कर उन्होंने घोषणा की कि ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं है. फिर श्रीलंका में 'त्रिपिटक' का अध्ययन करके उन्होंने 1930 में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया. देशभक्ति और दर्शन उनके खून में था. बौद्ध धर्म के प्रकांड विद्वान होने के नाते उन्हें 'त्रिपिटकचार्य' की उपाधि मिली, जबकि बनारस ने उन्हें 'महापंडित' की पदवी से नवाजा. अपने जीवन में अंतिम वर्षों में वे मसूरी में रहने लगे. फिर वे दार्जिलिंग में जाकर बस गए जहां 1963 में उनका देहांत हुआ.

है. राज्य सरकार अलग-अलग जिलों में 26 संग्रहालयों का प्रबंधन करती है, इसके अलावा छह अन्य संग्रहालयों को ग्रांट देती है. यहां बुद्धकालीन मूर्तियों की भरमार है जो हाल तक मनरेगा के तहत होने वाली खुदाई में बाहर आती रही हैं. मगर इन विरासतों की देखरेख की व्यवस्था इतनी लचर है कि सोचकर हैरत होती है.

राज्य सरकार के इन 26 संग्रहालयों के प्रबंधन का जिम्मा सिर्फ चार संग्रहालयाध्यक्षों के पास है. इनमें से एक-एक संग्रहालयाध्यक्ष के पास पांच से आठ संग्रहालयों तक का जिम्मा है. इन सभी संग्रहालयों में एक भी पूर्णकालिक दीर्घा सहायक या तकनीकी सहायक तक नहीं है. इनके सभी पद खाली हैं, कहीं-कहीं संविदा कर्मियों को रखकर काम चलाया जा रहा है. दूर-दराज के ज्यादातर संग्रहालयों का चार्ज चतुर्थ श्रेणी के कर्मियों के जिम्मे है. वही इन्हें खोलते और बंद करते हैं. हालांकि विभाग इस बात को स्वीकार नहीं करता मगर इनमें से कई संग्रहालय समय-समय पर कर्मियों के अभाव में बंद रह जाते हैं.

ऐसा ही एक संग्रहालय है सहरसा जिले का कारू खिरहर म्यूजियम. वर्ष 2004 में इस संग्रहालय का उद्घाटन हुआ था. अगले साल ही वहां से कुछ बेशकीमती मूर्तियां चोरी हो गईं. उसके बाद इस संग्रहालय पर ताला लग गया. संग्रहालय अगले दस साल तक बंद रहा. फिर वहां 2015 में एक कर्मचारी की पोस्टिंग हुई और उसका ताला खुलने लगा. मगर 2019 में उस कर्मी के रिटायर होने पर फिर से इस संग्रहालय पर ताला लटक गया. 2020 में जब उसी जिले के नेता आलोक रंजन कला एवं संस्कृति मंत्री बने तो 2021 में फिर से संग्रहालय को खोला गया है. इसी तरह सूरज नारायण सिंह और ब्रज बिहारी प्रसाद स्मृति संग्रहालय पर हमेशा ताला लगे रहने की खबरें आती हैं.

लगभग यही हाल राज्य के आर्कियोलॉजिकल साइट्स का है. पूर्वी चंपारण के लौरिया स्थित अशोक स्तंभ के चारों तरफ हर साल बाढ़ का पानी जमा हो जाता है. वैशाली जो बौद्ध और जैनकालीन विरासतों के लिए मशहूर है, वहां के पुरावशेषों का भी यही हाल है. वहां से खुदाई में मिले बुद्ध के अस्थि अवशेष सुरक्षा के लिहाज से 1972 से राजधानी के पटना संग्रहालय में रखे हुए हैं. 2010 में पटना हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया था कि एक साल के अंदर वैशाली में एक संग्रहालय और बुद्धिस्ट सेंटर की स्थापना की जाए और बुद्ध की अस्थियां वहीं रखी जाएं. मगर 12 साल बीतने जा रहे हैं, अभी तक वैशाली में संग्रहालय और बुद्धिस्ट सेंटर का निर्माण पूरा नहीं हो पाया है.

पिछले दिनों इस संवेदनहीनता की तब अति हो गई जब एक फ्लाइओवर के निर्माण के लिए बिहार सरकार दुर्लभ पांडुलिपियों के लिए विख्यात ऐतिहासिक खुदाबख्श लाइब्रेरी के कर्जन रीडिंग रूम को तोड़ने के लिए तैयार हो गई. मगर बाद में जब इसका राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विरोध हुआ तो सरकार ने उस फैसले से अपने कदम वापस खींचे. इतिहास की प्रोफेसर रह चुकीं और हिंदी-मैथिली की लेखिका उषाकिरण खान कहती हैं, ''काश हम इन विरासतों को सहेज पाते तो इस गरीब राज्य बिहार को पर्यटन से ही काफी धन हासिल हो जाता.'' मगर लगता है, सरकार ने इस दिशा में अभी गंभीरता से सोचना शुरू नहीं किया है. ■

बातचीत: दीपक आनंद, *बिहार के संग्रहालय निदेशक*

'संग्रहालय के खाली पद जल्द भरे जाएंगे, भर्ती प्रक्रिया जारी है'

● राहुल सांकृत्यायन द्वारा लाई गई पांडुलिपियों को जिस भवन में रखा गया है, वह क्षतिग्रस्त हो गया है?

मुझे इसकी जानकारी नहीं है. (फिर फोन से पता करके बताते हैं) दरअसल वहां आसपास में कुछ निर्माण और मरम्मत का काम हो रहा है, इसलिए यह क्षति हुई है. मंगलवार को इसकी मरम्मत हो जाएगी.

● क्या यह सच है कि बिहार सरकार के सभी 26 संग्रहालयों का जिम्मा सिर्फ चार संग्रहालयाध्यक्षों के पास है?

जी, यह सच है कि हमारे पास मैनपावर की काफी कमी है. हमने इसे पूरा करने के लिए बिहार लोकसेवा आयोग से 12 संग्रहालयाध्यक्षों, एक निदेशक संग्रहालय और एक निदेशक पुरातत्व का पद भरने का अधियाचन भेजा है. यह प्रक्रियाधीन है.

● यहां कर्मचारियों की संख्या भी बेहद कम है?

यह सच है. हालांकि हमने दीर्घा सहायक और तकनीकी सहायक के 50 फीसदी पद नियोजित कर्मियों के जरिये भर रखे हैं. बड़ी संख्या में शिक्षा विभाग से भी कर्मियों का समायोजन किया है.

● ऐसी सूचना भी है कि राज्य के संग्रहालयों में रखी गयीं सामग्रियों के चार्ज को लेकर भी भ्रम की स्थिति है?

हां, ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि रिटायर होने वाले अधिकारी चार्ज देकर नहीं जाते. इस व्यवस्था को हम दुरुस्त कर रहे हैं.

बड़ी कामयाबी
पुष्पा: द राइज-पार्ट 1 में तेलुगु फिल्म स्टार अल्लू अर्जुन

दक्षिण की धुन पर थिरकता उत्तर भारत

दक्षिणी भाषाओं की फिल्मों के हिंदी रीमेक बनाने के चलन ने बीते कुछ वर्षों में पकड़ा जोर, तभी दक्षिण की बहुआयामी फिल्में हिंदी की इकहरी फिल्मों के छक्के छुड़ा रही हैं

सुहानी सिंह

तेलुगु फिल्म *पुष्पा: द राइज—पार्ट 1* के हिंदी संस्करण को सैटेलाइट तथा डिजिटल माध्यमों और सिनेमाघरों में दिखाने के अधिकार मिलते ही निर्देशक और गोल्डमाइंस टेलीफिल्म्स के चेयरमैन मनीष शाह जानते थे कि उनके हाथ तुरुप का पत्ता लग गया है. वे कहते हैं कि *पुष्पा* की कामयाबी के बीज सात साल पहले बोए गए थे. मुंबई में रहने वाले ये प्रोड्यूसर स्टार गोल्ड और सोनी मैक्स सरीखे चैनलों पर तमिल और तेलुगु फिल्मों के हिंदी में डब संस्करणों को कामयाब होते देख चुके थे. उन्होंने डिजिटल पर अल्लू अर्जुन की बढ़ती लोकप्रियता भी देखी थी. यह गोल्डमाइंस फिल्म्स के यूट्यूब चैनल पर भी जाहिर था, जहां इस तेलुगु सितारे की फिल्मों ने सब मिलाकर 1.2 अरब व्यू जुटाए. *पुष्पा* के हिंदी में डब संस्करण—जो 100 करोड़ रुपए के क्लब में शामिल हो चुका है—के सिनेमाघरों में कामयाब होने का रास्ता काफी पहले तैयार हो गया था.

बीते 14 साल से दक्षिण की फिल्मों के सैटेलाइट प्रदर्शन के अधिकार हासिल करते आ रहे शाह के अनुसार, देश भर में *पुष्पा* की कामयाबी की एक वजह दर्शकों का मनोरंजन करने में हिंदी सिनेमा की नाकामी भी है. वे कहते हैं, ''विशाल दर्शक वर्ग के लिए हिंदी में हम ऐक्शन फिल्में बना ही नहीं रहे.'' उनका कहना है कि एक रोहित शेट्टी की फिल्म काफी नहीं है और सलमान खान की फिल्मों से 'कंटेट' नदारद है. वे कहते हैं, ''ऐक्शन का मतलब 10 लोगों को पीटता हीरो भर नहीं है. उसे मनोरंजक होना चाहिए, अच्छे डायलॉग और गाने होने चाहिए.'' उनके मुताबिक तमिल और तेलुगु के फिल्मकार ''ज्यादा ऐक्शन और भव्यता'' पेश करते हैं, जबकि हिंदी फिल्मकार महानगर से बाहर रहने वाले दर्शकों को दूर कर रहे हैं. तंज कसते हुए वे कहते हैं, ''हिंदी के फिल्म डायरेक्टर अंधेरी और बांद्रा (मुंबई के उपनगर) के बीच रहते हैं और उनके लिए दुनिया इन्हीं इलाकों के इर्दगिर्द घूमती है. वे इंग्लिश फिल्में और नेटफ्लिक्स देखते बड़े हुए और उन्हें लगता है, फिल्म बनाना यही है. पर ऐसा है नहीं.''

प्रमुख बाजार मुंबई के सिनेमाघर 2021 में छह माह बंद रहे. ऐसे में मुंबई के फिल्म निर्माताओं ने अपनी फिल्मों का प्रदर्शन रोक लिया या ओटीटी का रुख किया. बॉक्स ऑफिस पर हिंदी फिल्मों की कमाई 2021 में महज 500 करोड़ रुपए का आंकड़ा छू पाई. ऐसा तब हुआ जब 2019 में घरेलू बॉक्स ऑफिस पर उद्योग की 11,500 करोड़ रुपए की कमाई 2020 में घटकर 2,500 करोड़ रुपए पर आ गई, जो ईवाइ ऐंड फिक्की मीडिया ऐंड एंटरटेनमेंट की मार्च 2021में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक, 78 फीसद की गिरावट थी. उधर, 2021 में तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में सिनेमाघर कम दिन बंद रहे और फिल्में नियमित आती रहीं. इसका खालिस नतीजा यह था कि तेलुगु और तमिल फिल्मों ने सालाना क्रमश: करीब 1,300 करोड़ रुपए और 700 करोड़ रुपए बटोरे.

हिंदी फिल्मों के लिए नए साल की राह आसान नहीं दिख रही है. एस.एस. राजमौलि की बेहतरीन फिल्म *आरआरआर,* कन्नड़ फिल्म *केसीएफ* का दूसरा भाग और प्रभास की *राधे श्याम* उन कुछ फिल्मों में हैं जो देश भर में पहुंचने की होड़ में हैं. खुद शाह एक और तेलुगु फिल्म, महेश बाबू की *सरकारू वारी पाटा* रिलीज करने की उम्मीद लगाए हैं.

बीते दो साल में ओटीटी की लोकप्रियता बढ़ने के साथ दक्षिण के सिनेमा ने बढ़-चढ़कर अपना दम दिखाया है. अमेजन प्राइम और नेटफ्लिक्स दोनों ने तमिल, तेलुगु और मलयालम फिल्में सबटाइटल के साथ या कुछ मामलों में हिंदी में डब किए संस्करण लगातार दिखाए.

विक्रम वेधा

इस हिट और प्रशंसित तमिल फिल्म के रीमेक में सैफ अली खान और ह्रितिक रोशन दूसरी बार जोड़ी बनाकर आ रहे हैं. मूल फिल्म में उनकी जगह आर. माधवन और विजय सेतुपति हैं

सेल्फी

पृथ्वीराज की एक और फिल्म का हिंदी संस्करण तैयार हो रहा है. कॉमेडी-ड्रामा *ड्राइविंग लाइसेंस* के रीमेक में अक्षय कुमार और इमरान हाशमी अभिनय कर रहे हैं

रीमेक एक्सप्रेस

मुंबई के फिल्मकार 1970 के दशक से ही प्रेरणा के लिए दक्षिण का रुख करते रहे हैं. जितेंद्र, मिथुन चक्रवर्ती, अनिल कपूर, गोविंदा, सलमान खान, अजय देवगन और अक्षय कुमार सरीखे अदाकारों की कामयाबी में दक्षिण का योगदान रहा. यह रुझान अलबत्ता बीते कुछ वर्षों में तेजी से परवान चढ़ा है. तेलुगु फिल्म *अर्जुन रेड्डी* के रीमेक *कबीर सिंह* के साथ शाहिद कपूर की किस्मत चमकी. उनकी अगली फिल्म *जर्सी* भी तेलुगु फिल्म की रीमेक है.

अगले कुछ वर्षों में बॉलीवुड करीब 24 तमिल, तेलुगु और मलयालम फिल्मों के रीमेक बनते देख रहा है. इनमें से कुछ में अक्षय कुमार (*ड्राइविंग लाइसेंस,* मलयालम) और सलमान खान (*मास्टर,* तमिल) सरीखे अदाकार हैं. सिनेमा मालिक और प्रदर्शक अक्षय राठी कहते हैं कि इन्हें फिर से बनाने की अच्छी वजह भी है, क्योंकि वे ''कॉमेडी, ऐक्शन, ड्रामा और फैमिली इमोशन का थोड़ा तड़का लगाकर बेधड़क और बेलौस ढंग से दिल बहलाते हैं. हिंदी में हम अक्सर इकहरी किस्म की फिल्में बनाने लगे हैं...(और) जज्बात तथा किस्सागोई का तरीका शहराती और बहुत विशिष्ट हो गया है.''

इस बार हिंदी फिल्म उद्योग भी फॉर्मूला फिल्मों से आगे जाने की ठोस कोशिश कर रहा है. अप्लॉज एंटरटेनमेंट समीक्षकों की सराही गई तमिल फिल्म *अरुवि* का रीमैक बना रहा है, तो आनंद एल. राय ने *गुड लक जेरी* बनाई है, जो नयनतारा के अभिनय से सजी *कोलामावु कोकिला* जाह्नवी कपूर की मुख्य भूमिका के साथ पंजाब की पृष्ठभूमि में पेश करती है. एबंडंटिया एंटरटेनमेंट के संस्थापक और सीईओ विक्रम मल्होत्रा ने केवल अमेजन प्राइम पर 2020 में सबसे ज्यादा देखी गई फिल्म *सोरारइ पोटरु* (तमिल) के अधिकार खरीदे बल्कि दो खासी सराही गई मलयालम फिल्मों—*अंगमाली डायरीज* और *#होम*—के भी. मल्होत्रा कहते हैं, ''अच्छी फिल्मों के रूपांतरण किए ही जाएंगे क्योंकि वे अपनी जज्बाती और सांदर्भिक प्रासंगिकता गंवाए बगैर हर जगह के दर्शक से जुड़ पाती हैं.'' उन्हें लगता है कि दक्षिण के रचनाकार जोखिम और तकलीफ उठाने और ''अपने गहरे विश्वासों के दम पर दांव लगाने को ज्यादा तैयार'' हैं. वे कहते हैं कि खासकर मलयाली सिनेमा की ''जोखिम उठाने की क्षमता कहीं ज्यादा है और इसलिए नई अवधारणाएं और उथलपुथल मचाने वाली कहानियां गढ़ने की क्षमता भी ज्यादा है.'' मल्होत्रा ''रीमेक'' के बजाए ''रूपांतरण'' शब्द को तरजीह देते हैं. वे कहते हैं, ''यह मेरे लिए फिल्म दोबारा बनाने का कम और उसकी आत्मा को लेकर पुनर्कल्पना करने का मामला ज्यादा है.'' डायरेक्टर जगन शक्ति (*मिशन मंगल* से मशहूर), जो हिट मलयाली ड्रामा फिल्म *अय्यप्पनम कोशियम* के हिंदी रीमेक का निर्देशन करेंगे, उनकी बात से इत्तेफाक रखते हैं. वे कहते हैं, ''वह जिस परिवेश में रची-बसी है, उसका रूपांतरण जरूरी है. मेरे लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि मूल फिल्म को बदलें और तानें लेकिन पटकथा की आत्मा से छेड़छाड़ न करें.'' बेंगलुरू के रहने वाले शक्ति मानते हैं कि तमिल, तेलुगु और मलयालम में बात कर पाने की वजह से वे मूल फिल्म से ''उलझने और (उसे) समझने'' की बेहतर स्थिति में हैं.

''हिंदी फिल्म डायरेक्टरों की दुनिया अंधेरी और बांद्रा के इर्दगिर्द घूमती है. वे इंग्लिश फिल्में और नेटफ्लिक्स देखते हैं और उन्हें लगता है कि फिल्म बनाना यही है. ऐसा है नहीं''

मनीष शाह

डायरेक्टर और चेयरमैन, गोल्डमाइंस टेलीफिल्म्स

मूल फिल्म का निर्देशक अगर अपनी फिल्म को नई भाषा में फिर से बनाने के लिए तैयार हो तो यह और भी अच्छा है. *विक्रम वेधा* और *हिट: द फर्स्ट केस* के मामले में टी-सीरीज के प्रोड्यूसर भूषण कुमार को यह मुनासिब लगा कि पुष्कर-गायत्री और शैलेश कोलानु की जोड़ी हिंदी संस्करण का निर्देशन करे क्योंकि ''वे किरदार, कहानी और चित्रण से बखूबी वाकिफ हैं.'' भूषण कुमार हिंदी रीमेक के लिए भी *अर्जुन रेड्डी* के लेखक-निर्देशक संदीप रेड्डी वंगा को लाए थे. उनके तईं

सूरारय पोट्टरु

सूरिया ने एयर डेक्कन के संस्थापक कैप्टन गोरुर रामास्वामी आयंगर गोपीनाथ का शानदार किरदार निभाया है. इस तमिल ड्रामा की निर्देशक सुधा कोंगरा प्रसाद ही हिंदी रीमेक को निर्देशित करेंगी

हिंदी संस्करण

मिली

मलयालम फिल्म हेलन के हिंदी रीमेक में पिता-पुत्री बोनी कपूर और जाह्नवी कपूर पहली बार एक साथ नजर आएंगे. यह सर्वाइवल थ्रिलर है

शहजादा

कार्तिक आर्यन के सामने बड़ी चुनौती है क्योंकि उन्हें अल्लू अर्जुन अभिनीत *अला वैकुंठपुररामुलू* के रीमेक में अभिनय करना है. पहले लॉकडाउन के दौरान यह ऑनलाइन सबसे ज्यादा देखी जाने वाली फिल्म बन गई

अंगमाली डायरीज

एबंडंटिया एंटरटेनमेंट ने लीजो जोज पेलिस्सरी की फड़कदार फिल्म का अधिकार हासिल कर लिया है. यह फिल्म केरल के अंगमाली इलाके में मनमौजी युवाओं, जायकेदार भोजन और अपराध के बारे में है

अय्यप्पनम कोशियम

रंजिश वाले इस ड्रामे में बीजू मेनन और पृथ्वीराज ने शानदार भूमिका निभाई है. अर्जुन कपूर और जॉन अब्राहम के सामने उसी तरह का जोरदार अभिनय करने की जबरदस्त चुनौती है

हिट: द फर्स्ट केस

एक अन्य तमिल फिल्म जिसका हिंदी संस्करण तैयार हो रहा है. इस ऐक्शन थ्रिलर में राजकुमार राव और साान्या मल्होत्रा काम कर रहे हैं

''हिंदी संस्करण बनाने के लिए दक्षिण भारतीय मूल फिल्म का जबरदस्त हिट होना या उसमें किसी बड़े हीरो का होना जरूरी नहीं.'' कहानी ज्यादा अहम है.

उत्तर में हलचल

उत्तर के सिनेमाघरों के बाजार में दूसरे और तीसरे पायदान के केंद्रों के एकल सिनेमाघरों में *पुष्पा* की कामयाबी बताती है कि दक्षिण की फिल्में हिंदी फिल्मों का सिनेमाघरों का हिस्से धीरे-धीरे कुतर रही हैं. राठी कहते हैं, ''दक्षिण भारतीय अभिनेताओं की लोकप्रियता और स्टारडम अब क्षेत्रीय परिघटना नहीं रही. अल्लू अर्जुन की फिल्में जितनी लोकप्रिय हैं, उतनी ही महेश बाबू, राम चरण और जूनियर एनटीआर की फिल्में भी. तय है कि दूसरे भी उन्हें आज नहीं तो कल सिनेमाघरों में रिलीज करेंगे.'' या वे उनके साथ उसी तरह काम करना चुन सकते हैं जैसे भूषण कुमार दो फिल्में *राधे श्याम* और *आदिपुरुष* प्रभास के साथ प्रोड्यूस कर रहे हैं. दक्षिण के सितारे खुद भी हिंदी संस्करण डब करने को उत्सुक हैं. राम चरण और जूनियर एनटीआर ने *आरआरआर* के लिए ऐसा किया, तो प्रभास और यश ने क्रमशः *राधे श्याम* और *केजीएफ 2* के लिए किया है.

दक्षिण सिनेमा की बढ़ती हनक ने मुंबई में कइयों को हड़का दिया है. मनीश शाह ने हाल में जब अल्लू अर्जुन की 2020 की हिट फिल्म *अला वैकुण्ठपुररामुलू* का हिंदी में डब संस्करण सिनेमाघरों में रिलीज करने का ऐलान किया, तो हिंदी संस्करण बनाने वाले दहशत में आ गए. *शहजादा* नाम से बनाए जा रहे इसके रीमेक में कार्तिक आर्यन और कृति सैनन हैं और इसके इसी साल रिलीज होने की उम्मीद है. शाह को अपनी योजना अंततः खत्म कर देनी पड़ी क्योंकि बताया जाता है कि *शहजादा* के प्रोड्यूसरों ने उन्हें ऐसा करने के लिए भारी रकम अदा की. शाह अब इसे अपने चैनल धिनचक टीवी पर 13 फरवरी को रिलीज करेंगे. कार्तिक को ''असुरक्षित'' बताते हुए शाह कहते हैं, ''अभिनेता में सफलता हासिल करने का आत्मविश्वास होना चाहिए. यदि वे पिक्चर अच्छी बनाते तो उससे कलेक्शन प्रभावित नहीं होता.'' इस बीच शाह अपनी नई कामयाबी का मजा ले रहे हैं. उन्हें अभी *पुष्पा—चैप्टर 2* के अधिकार नहीं मिले हैं. वे कहते हैं, ''*पुष्पा 2* के लिए जब वे मेरे पास आएंगे, मुझे ऐसी कीमत पर बात खत्म होने की उम्मीद है जो सभी के लिए कारगर हो. मैं यहां पैसा गंवाने के लिए नहीं हूं.'' ■

बिजनेस के गुर सिखाता ऑटो चालक

मिलिए उस शख्स से जिसे अपने काम में इतना मजा आता है कि बड़े-बड़े कारोबारी भी उस पर ध्यान दे रहे हैं

टी.वी.एस. सोमू

चेन्नै के ऑटो ड्राइवर 38 वर्षीय अन्नादुरै ने सार्वजनिक परिवहन को एक नए स्तर पर ले जाकर हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरीं. बड़े कॉर्पोरेट घरानों ने अपने कर्मचारियों से कारोबार प्रबंधन के बारे में बात करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया. कई शीर्ष पदाधिकारियों ने उनकी तारीफ की. आनंद महिंद्रा ने ट्वीट किया, ''अगर एमबीए के विद्यार्थी (अन्नादुरै के साथ) एक दिन बिता लें, तो वह ग्राहक अनुभव प्रबंधन का एक संक्षिप्त कोर्स हो जाएगा. यह शख्स महज एक ऑटो ड्राइवर नहीं है...बल्कि प्रबंधन का प्रोफेसर है.'' हाल ही में तमिलनाडु के डीजीपी (पुलिस महानिदेशक) डॉ. सी. सिलेंद्र बाबू ने अन्नादुरै को बुलाया था और उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया.

चेन्नै के इंजामबक्कम के रहने वाले अन्नादुरै ने अपने ग्राहकों के लिए यात्रा को खासतौर पर सुखद बनाने का फैसला लिया था. उनके ऑटो में यात्रियों के लिए कई सारे समाचार पत्र, साप्ताहिक पत्रिकाएं उपलब्ध रहती हैं. उनके ऑटो में एक छोटा सा स्मार्ट टीवी, मुफ्त वाइफाइ और एक फ्रिज भी है जिसमें ठंडा पानी तथा जूस उपलब्ध रहता है. यात्रियों के नाश्ते के लिए फलों, चॉकलेट और चिप्स से भरा एक जार भी रहता है. अन्नादुरै ने अपने ऑटो को डिजिटल टूल्स से भी लैस कर रखा है ताकि यात्रियों को उनकी यात्रा के आगे के ट्रैफिक के बारे में भी अंदाजा लग सके.

खुशी का मंत्र

''मैं इस करियर से दिल से प्यार करता हूं. मैंने सोचा कि यात्रियों के लिए कुछ सुविधाएं देना बढ़िया रहेगा''

-अन्नादुरै

इससे बढ़िया और क्या होगा कि वे ये सारी सेवाएं मुफ्त में प्रदान करते हैं. अन्नादुरै कहते हैं, ''मैं यात्रियों के लिए उनकी यात्रा सुखद और उपयोगी बनाना चाहता हूं.'' वे विकलांगों के लिए अतिरिक्त पहल भी करते हैं—मसलन, उन्होंने उन लोगों के लिए सांकेतिक भाषा उपकरण लगा रखा है जो सुन नहीं सकते.

वे अपने ऑटो में पांच-छह छाते भी रखते हैं ताकि अचानक बारिश होने पर वे उन्हें यात्रियों को दे सकें. उनके यात्री उस छाते को अपनी अगली यात्रा पर वापस कर सकते हैं. उनका कहना है कि उन्हें इसकी कोई फिक्र नहीं है कि यात्री छाता उन्हें वापस नहीं करके उन्हें कहीं धोखा न दें. उन्होंने यात्रियों की राय के लिए एक प्रणाली भी स्थापित कर रखी है और वे सर्वश्रेष्ठ सलाह देने वालों को इनाम भी देते हैं. अन्नादुरै उत्साहपूर्वक बताते हैं, ''मैं अपनी सेवाओं के बारे में ग्राहकों की राय को

समझने के लिए पांच सवाल के साथ एक कागज, एक पेन और एक पैड रखता हूं. आपको बस बॉक्स पर टिक करना है और अपना ईमेल एड्रेस लिखना है. मैं सर्वश्रेष्ठ सलाह को चुनता हूं और अपनी आमदनी से 1,000 रुपए का इनाम उसे लिखने वाले को देता हूं.''

तो यह अलहदा और शानदार शख्स कौन हैं? अन्नादुरै बताते हैं, ''तंजावूर जिले में पेरावुरानी के पास रेट्टावयल गांव उनका गृहनगर है.'' अपने पारिवारिक इतिहास को उन्होंने सरलता से बताया, ''मेरे पिता गणेशन भोजन पकाने में उस्ताद हैं. मेरी मां अमसावल्ली गृहिणी हैं. मेरा परिवार चेन्नै में 38 साल पहले आ गया था—तब मेरे पिता ने ऑटो चलाना शुरू किया. मैंने बारहवीं तक पढ़ाई की है. मेरे माता-पिता ने मेरी पढ़ाई में काफी सहयोग दिया, लेकिन मैं कुछ और ही बनना चाहता था. मुझे अपने पिता का ऑटो चलाते हुए 12 साल हो चुके हैं. कुछ अलहदा करने का विचार उनके मन में कब आया? अन्नादुरै मुस्कुराते हुए बताते हैं, ''इस पेशे से मुझे वाकई प्यार है. मैंने सोचा कि अपने ऑटो में यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए कुछ सुविधाएं प्रदान करना अच्छा होगा. मैं उनकी यात्रा को सुखद बनाना चाहता हूं.'' तकनीक-पसंद होने की वजह से अन्नादुरै ने कैशलेस लेन-देन लोकप्रिय होने से पहले ही क्रेडिट और डेबिट कार्ड के जरिए भुगतान स्वीकार करना शुरू कर दिया था.

उनके काम करने के अभिनव तौर-तरीके ने उन्हें शीर्ष पर पहुंचा दिया. उन्होंने गूगल और माइक्रोसॉफ्ट सरीखे दिग्गजों की ओर से आयोजित सम्मेलनों में भाषण दिया है. उन्हें 2020 में दिल्ली में एक बैठक में भी आमंत्रित किया गया था जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कई केंद्रीय मंत्रियों ने हिस्सा लिया था. सवारियों की उम्मीदों की समझ के जरिए उन्होंने अपने कामकाज का अलहदा तरीका विकसित किया है. वे बताते हैं, ''(अपनी यात्रा के दौरान) वे बस सुरक्षा का एहसास और सम्मान चाहते हैं. हम कैसा दिख रहे हैं, यह भी मायने रखता है. मैं रोज अपनी दाढ़ी बनाता हूं और साफ-सुथरा रहता हूं. अपने यात्रियों को सेवा देने के दौरान मैं हमेशा यूनिफॉर्म पहनता हूं.''

ग्राहक-केंद्रित पहलों के अलावा, अन्नादुरै परोपकारी सेवाएं भी प्रदान करते हैं. मिसाल के तौर पर वे शिक्षकों, डॉक्टरों, सफाईकर्मियों और नर्सों को मुफ्त की यात्रा कराते हैं. बाल दिवस पर वे बच्चों और महिला दिवस पर महिलाओं से पैसे नहीं लेते. वे अपनी गाड़ी में उपलब्ध सुविधाओं के लिए कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लेते हैं और केवल सरकार की ओर से निर्धारित शुल्क ही लेते. वे कहते हैं, ''हर किसी को पैसे की दिक्कत होती है, लेकिन दूसरों की जेब से पैसे लेने के बारे में सोचना क्या गलत बात नहीं है? मैं पैसे पर ध्यान नहीं देता. अगर हम ईमानदारी के साथ अपने काम के प्रति सच्चे हैं तो ग्राहक हमारे पास वापस आएंगे.''

खुशी की खोज: *इंडिया टुडे और आरपीजी ग्रुप का यह संयुक्त उद्यम खुशियां फैलाने की शानदार पहल है*

खुशी देते रंग

सही रंग आपके मूड को बढ़िया बना सकते हैं और आपके घर में सकारात्मकता तथा शांति ला सकते हैं

रिद्धि काले

पैस्टेल से मिलेनियल पिंक और फ्यूशिया से टील तक, आप जो रंग चुनते हैं वह न केवल आपके घर के लुक को निर्धारित करता है बल्कि आपके मिजाज पर भी काफी प्रभाव डालता है. जानिये विशेषज्ञों का क्या कहना है.

लाल देखकर?

एक लग्जरी और लाइफस्टाइल ब्रान्ड सरिता हांडा की मैनेजिंग डायरेक्टर सुपर्णा हांडा कहती हैं, ''लाल अक्सर साहस और ताकत के एहसास से जुड़ा होता है. माना जाता है कि यह रंग अच्छी किस्मत और रहने वाली जगह में गर्मजोशी लाता है. यह जुनून और संवेदनशीलता को संतुलित रखता है.'' अपनी जगह पर चमक और रंग का तड़का लगाने के लिए कुशन या चादर पर इस रंग को आजमाएं.

एक से बेहतर, दो रंग

ऑरेंज ट्री में लाइटिंग डिजाइन की प्रमुख निकिता बंसल कहती हैं, ''निराशा और हताशा के भरे इस माहौल में, हर कोई सकारात्मकता चाहता है. ऐसे में, रंग एक अहम भूमिका निभाता है—आपके घर में सकारात्मकता लाने के लिए यह सबसे आसान तरीकों में से एक है.'' वह बताती है कि सफेद और नीले रंग का संयोजन बेहतर साबित हो सकता है, ''सफेद सभी रंगों का संश्लेषण है. यह तटस्थता, शुद्धता और स्वच्छता का प्रतीक है. नीला भी शांति और धीरज का प्रतीक है. यह तनाव और चिंता को कम करता है.'' परिवेश को रोशन करने के लिए, जहां रोशनी और छाया अतिरिक्त नाटकीयता लाते हैं, यह संयोजन बहुत बेहतर साबित होता है.

अपनाएं पीला रंग

रंगों का चयन करते हुए यह विचार करें कि आप कैसी जीवंतता चाहते हैं. फर्निशिंग स्टूडियो बिआन्ड ड्रीम्स की सह-संस्थापक और क्रिएटिव डायरेक्टर अवनी जुनेजा कहती हैं, ''पीला रंग धूप की तरह है. यह खुशी, आशावाद और ऊर्जा से जुड़ा हुआ है. चाहे सोना हो, सरसो हो, नींबू या कनेरी पीला, यह रंग साफतौर पर जीवंत है.'' विनोदप्रिय और चंचल शेड्स बच्चों के बेडरूम और नर्सरीज के लिए शानदार विकल्प हैं; गहरे रंग रसोई को जीवंत बना देते हैं. जुनेजा बताती हैं, ''अंधेरे कमरे में पीले रंग का प्रकाश जीवन को थोड़ा चमकीला और खुशमिजाज बना देता है. खूबसूरत बनावट के लिए स्टेटमेंट फर्नीचर और सामान को आजमाएं.''

दीवारों को चमकाएं

वॉलपेपर्स में विशेषज्ञता रखने वाली कंपनी यूडीसी होम्स की सह-संस्थापक नेहा जैन कहती हैं, ''जीवंत रंग और फूलों की आकृतियां रहने वाली जगह में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करती हैं. सबसे स्फूर्तिदायक रंग नीला और हरा हैं. वॉलपेपर डिजाइन पर उनका प्रभाव शानदार होता है.'' हरा ताजगी, समृद्धि और प्रकृति का प्रतीक है. वे बताती हैं, ''हरे रंग के विभिन्न शेड्स में वॉलपेपर डिजाइन पर प्रकृति से प्रेरित थीम को शामिल करने से मन को शांति मिलती है. दूसरी ओर, नीला विवेक और शांति का प्रतीक है, और इसे दीवारों पर इस्तेमाल करने पर यह रंग बहुत शानदार सामंजस्य पैदा करता है.''

सवाल + जवाब

बचपन में बड़ा ड्रीम

हाल में ओडिशा ओपन जीतकर बैडमिंटन में सबसे कम उम्र (14 वर्ष) में सुपर 100 टूर्नामेंट विजेता भारतीय बनी **उन्नति हुड्डा** अपने संघर्ष और सपनों के बारे में

● ओड़िशा ओपन जीतने के बाद किसने सबसे पहले बधाई दी?
पापा ने. वे उस वक्त कोर्ट में मेरे साथ ही थे. बाद में बॉक्सर अमित पंघाल ने भी ट्वीट करके बधाई दी.

● अभी महज 14 की आपकी उम्र है, कभी ध्यान नहीं भटकता कि कोर्ट पर पसीना बहाने की बजाए थोड़ी देर कार्टून या ओटीटी पर कोई सीरीज ही देख लूं?
बिल्कुल नहीं, क्योंकि जब सोच ही लिया है कि प्लेयर बनना है तो फिर उस ऊंचाई पर पहुंचने के लिए कुछ त्याग तो करने ही पड़ते हैं ना!

● बैडमिंटन के साथ पढ़ाई कैसे मैनेज कर रही हैं?
पढ़ाई को बराबर की अहमियत देते हुए मैं उसे भी अच्छी तरह से मैनेज करने की पूरी कोशिश करती हूं. पढ़ाई भी मेरे लिए उतनी ही जरूरी है. इस काम में मेरा स्कूल भी मुझे पूरा सपोर्ट करता है और पेपर के समय मेरे लिए एक्स्ट्रा क्लास लगवाई जाती है.

● बैडमिंटन में उन्नति का सबसे बड़ा ड्रीम आखिर क्या है?
सबसे पहले शॉर्ट टर्म गोल तो रैंकिंग में ऊपर चढ़कर टॉप 100 में आने का है. वह कर पाई तो फिर मैं बड़े टूर्नामेंट्स में हिस्सा लेने में कामयाब हो सकूंगी. और हर प्लेयर की तरह ओलंपिक में भारत के लिए गोल्ड मेडल जीत कर लाने का सपना तो है ही. ओलंपिक की तैयारी आपको बिल्कुल शुरू से ही करनी होती है क्योंकि उस लेवल पर पहुंचना बहुत मुश्किल है. बड़ी मेहनत लगती है. वह एक दिन में नहीं होगा.

● खिलाड़ियों के लिए मल्टी स्पोर्ट कितना जरूरी है?
बहुत ही जरूरी है. बैडमिंटन में जाने के बाद मैंने स्विमिंग शुरू की. गर्मियों में मैं स्विमिंग करती हूं, बैडमिंटन में आने के बाद मैंने कई और स्पोर्ट्स में भी ध्यान लगाया है.

● अच्छा ये बताइए, पापा ने जब पढ़ाई से ज्यादा खेल पर ध्यान लगाने को कहा था तो आपका पहला रिएक्शन क्या था?
देखिए, मैंने सात साल की उम्र में खेलना शुरू कर दिया था. पहले पापा के साथ पार्क में खेला करती थी. फिर एकेडमी में जाने की इच्छा हुई तो छोटूराम स्टेडियम (रोहतक) में एडमिशन लिया. पापा भी स्पोर्ट्स में करियर बनाना चाहते थे. पर उन्हें एकेडमिक फील्ड में जाना पड़ा. बाद में मेरा करियर बनाने के लिए उन्होंने प्रोफेसर की अपनी नौकरी छोड़ दी.

—गरिमा भारद्वाज

आज तक

देश का नं. 1 हिंदी न्यूज़ ऐप

जुड़े रहिए हर खबर से,
कहीं भी, कभी भी

अभी डाउनलोड करें

aajtak.in/app

उपलब्ध है

IndiaContent

SEARCH FOR EDITORIAL IMAGES ENDS HERE